विषय-सूची।

विषय-सूची ।

अनुकम्पा—

भूमिका

प्रायः देखा जाता है कि पुस्तक के प्रारम्भ में भूमिका दी जाती है। यह एक प्रकार प्रथा ही हो गयी है। प्रचलित प्रथा को मानते हुए हम भी इस पुस्तक की भूमिका लिखने को उद्यत हुए हैं।

भूमिका शब्द का एक अर्थ है छोटी भूमि—जैसे बड़े क्षेत्र में बीज वपन के पहले थोड़े से जगह में बीजो को अङ्कुरित कराके पीछे उन अङ्कुरित बीजो को समुचे क्षेत्र में बोया जाता है। वैसे ही पुस्तक की भूमिका पुस्तक के विषय को तैयार कर उसे मूल पुस्तक मे विस्तारित भाव से व्याख्या करती है। यह तो केवल ग्रन्थकार का निजकृत भूमिका के लिये ही प्रयोज्य है।

भूमिका का दूसरा अर्थ सोपान, (पगोथिया) जिसके सहारे नीची भूमि से ऊची भूमि में सहज से चढ़ा सके। पुस्तक की "भूमिका" इस अर्थ से, पुस्तक का गहन विषय को सरल भाव से समझा कर पाठकों को सहज में उसमें प्रविष्ट कराती है। इसलिये भूमिका में (१) ग्रन्थकार परिचय (२) ग्रन्थ परिचय (३) ग्रन्थ प्रतिपाद्य विषय परिचय (४) ग्रन्थ प्रतिपाद्य विषय से कौन सा फल प्राप्ति होता है। इसका परिचय होना आवश्यक है।

प्रस्तूयमान पुस्तक मे कुछ संग्रह मात्र है। जो सब ढाल दोहाओ का संग्रह है वह मारवाड़ी भाषा में पूज्यपाद श्रीमद् भीखनजी स्वामी का रचित है। श्रीमद् गणिराज भीखनजी स्वामी का परिचय यों तो जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी मात्र के लिये अनावश्यक है। पर जैनेतर पाठकों के लिये उनका संक्षिप्त परिचय देना यहां अप्रासंगिक न होगा।

जहां केवल मात्र १३ साधु मात्र नवीन मार्ग के प्रचार में निकले थे वहां आज प्राय १२५ साधु व २७५ साध्वियें श्रीमान् कालूरामजी महाराज के आज्ञा को पालते हुए शुद्ध धर्म का प्रचार कर रहे हैं।

(२) ग्रन्थ परिचय।

श्रीमद् भीखनजी स्वामी के रचित "अनुकम्पा" के विषय पर तेरह ढाल, साधु के आचार की छः ढाल जिन आज्ञा का चौढालिया, अठारह पाप की ढाल, आदि ढालें सग्रहित है। जिन जिन मुख्य विषयों पर जैन सम्प्रदाय के विभिन्न शाखाओ मे मतभेद है अथवा आचार भेद है उसपर सरल भाषा में न्याय व सूत्रादि की साख सहित प्रकाश डालने का प्रयास स्वामीजी ने इन ढालों में किया है। एक २ विषय पर जितनी शास्त्रों की साख व युक्तियां दी जा सके सब समावेश कर दी है। पद्य में होने से कंठस्थ कर इन ढालो को श्रावक लोग पठन पाठन के काम में लाते हैं। स्वामीजी की वर्णन शैली ओजस्विनी भाषा मे है और यह कहना अत्युक्ति न होगा कि साधारण से साधारण मारवाड़ी भाषी गृहस्थ इन्हें पढ़ कर इनको न्याय से स्वामीजी के मत का पक्षपाती हो जाता है।

(३) व (४) ग्रन्थ प्रतिपाद्य विषय व ग्रन्थ पठन का फल ऊपर मे कहा जा चुका है कि ग्रन्थ का प्रतिपाद्य विषय सत्य शास्त्रोक्त जैन धर्म के रहस्य का परिचय कराना है। कुछ जैन मत के अन्य सम्प्रदाय वाले सावद्य अनुष्ठानो को निरवद्य बताते हैं, सांसारिक दया—जो स्नेह, राग, ममत्व मात्र है उसे पारलौकिक साधन बताते हैं। उनका यह कथन जैन शास्त्रों के आधार पर नही, जैन शास्त्रो का कथन क्या है— न्याय व तर्क के सहारे, सच्चा रास्ता कौन सा है, वह दिखाना स्वामीजी के ग्रन्थों का मुख्य उद्देश्य है। ग्रन्थ पठन से भ्रान्त मानव सच्चे मार्ग का आदर करेंगे यही फल है। सांसारिक मार्ग व मुक्ति मार्ग मे कितना पार्थक्य है यह सब बात इस ग्रन्थ के पठन से मालूम होगा। साधुओ

॥ वन्दे जिनवरम् ॥

॥ अनुकम्पा ॥

॥ दोहा ॥

अनुकम्पा ने आदरी, कीज्यो घणा जतन ।
जिनवरना धर्म मांहिलो, समकित पाय रतन ॥ १ ॥
गाय भैंस आक थोरनो, ये चारूं ही दूध ।
ज्यूं अनुकम्पा जाणज्यो, मन में आणी शुद्ध ॥ २ ॥
आक दूध पीधां थकां, जुदा हुवे जीव काय ।
ज्यूं सावद्य अनुकम्पा कियां, पाप कर्म बंधाय ॥ ३ ॥
भोले ही मत भूलज्यो, अनुकम्पा रे नाम ।
कीज्यो अन्तर पारिखा, ज्यूं सीझै आतम काम ॥ ४ ॥
अनुकम्पा ने आगन्या, तीर्थङ्कर नी होय ।
सावद्य निरवद्य ओलखे, ते तो विरला जोय ॥ ५ ॥

॥ ढाल पहली ॥

धिक् धिक् छे नागश्री ब्राह्मणीने (एदेशी)

मेघ कुमर हाथीरा भवमें, श्रीजिन भाषी दया दिल आणी । ऊंचो पग राख्यो सुसलो न मार्यो, आकरणो श्रीवीर बखाणी ॥ आ अनुकम्पा जिन आज्ञा

आ अनुकम्पा सावद्य जाणो ॥ ८ ॥ गोशालो असंयती कुपात्र, तिणने साभ्भ शरीरनो दीधो। धर्म जाणता तो जगत दुखी थो, वले वीर ओ काम करे नहीं कीधो ॥ आ अनुकम्पा सावद्य जाणो ॥ ९ ॥ तेजु लेश्या मेलो गोशाले बाल्या. दोय साध भस्म करी काया। लब्ध धारी साधु हुंता घणाई. मोटा पुरुष त्यांने क्यों न बचाया ॥ आ अनुकम्पा सावद्य जाणो ॥ १० ॥ जिन ऋषि-ए अनुकम्पा कीधी, रेणादेवी स्हामो तिण जोयो। सेलख यक्ष हेठो उतारयो, देवी आय तिण खड्ग में पोयो ॥ आ अनुकम्पा सावद्य जाणो ॥ ११ ॥ भगता हिरण गवेषीरी सुलसां, अनुकम्पा आणी बिलखी जाणी। छः बेटा देवकीरा जाया, सुलसां रे घर मेल्या आणी ॥ आ अनुकम्पा सावद्य जाणो ॥ १२ ॥ यक्ष रे पाड़े हरकेशी आया, अशनादिक त्यांने नहीं दीधा। यक्ष देवता अनुकम्पा कीधी, रुधिर वमन्ता ब्राह्मण कीधा ॥ आ अनुकम्पा सावद्य जाणो ॥ १३ ॥ मेघ कुमर गर्भ मांहो हूंता, सुखरे तांई किया अनेक उपायो। धारणी राणी अनुकम्पा आणी, मन गमता अशनादिक खायो ॥ आ अनुकम्पा सावद्य जाणो ॥ १४ ॥ कृष्णजी नेम वन्दन ने जाता, एक पुरुष ने दुखियो जाणी। साभ्भ दियो अनुकम्पा कीधी, एक ईंट उठाय

रे बारहवें उद्देशे, साधुने चौमासी प्रायश्चित आवै ॥ आ अनुकंपा सावद्य जाणो ॥ २२ ॥ रासड़ी आदिक जीव सूत सूं बंध्या छै, ते तो भूख तृषादिक अत्यन्त दुःख पावे । अनुकंपा आणी ने त्यांने छुड़ावे, तिण ने चौमासी प्रायश्चित आवे ॥ आ अनुकंपा सावद्य जाणो ॥ २३ ॥ व्याधि अनेक कोढादिक सुणने, तिण ऊपर वैद चलाई ने आवै । अनुकम्पा आणी साजो कीधो, गोली चूर्ण दे रोग गमावे ॥ आ अनुकम्पा सावद्य जाणो ॥ २४ ॥ लब्धधारी रा खेलादिक थी, सोलह ही रोग शरीर सूं जावै । वले साध जाणै ओ रोग सूं मरसी, अनुकंपा आणी नहीं रोग गंवाव ॥ आ अनुकंपा सावद्य जाणो ॥ २५ ॥ जो अनुकंपा साधु करै तो, उपदेश दे वैराग्य चढावे । चोखे चित्त पेलो हाथ जोड़े तो, चारूं ही आहार रा त्याग करावे ॥ आ अनुकंपा जिन आज्ञा मे ॥ २६ ॥ गृहस्थ भूलो ऊजड़ बन में, अटवी ने वले उजड़ जावे । अनुकंपा आणी साधु मार्ग बतावे, तो चार महीनां रो चारित्र जावे ॥ आ अनु-कंपा सावद्य जाणो ॥ २७ ॥ अटवी में अत्यन्त दुखिया देखी, चारूं ही शरणा साधु धरावै । मार्ग पूछे तो मौन जु साधै, बोलै तो भिन्न भिन्न धर्म सुणावे ॥ आ अनुकंपा जिन आज्ञा मे ॥ २८ ॥

वालो ॥ ४ ॥ गृहस्थरै लागी लायो घर बारै, निकलियो न जायो। बलता जीव बिलबिल बोले, साधु जाय किंवाड़ न खोले ॥ ५ ॥ द्रव्ये भावे लाय लागी, जिणमें कोईक हुवे वैरागी। उणरी अनुकम्पा आवे, उपदेश देई समभावे ॥ ६ ॥ जन्म मरण री लाय थी काढे, उणरो काम सिराड़ै चाढे। पकड़ावे ज्ञानादिक डोरी, तिणथी कर्म आठूं दे तोरी ॥ ७ ॥ अनुकम्पा कियां दण्ड आवे, परमार्थ विरला पावे। निशीथ रो बारमो उद्देशो, जिन भाख्यो दया रो रेसो ॥ ८ ॥ कोई साध कहै सूत्र मे चाल्यो, ओ तो अर्थ अणहुन्तो घाल्यो। भोलां ने कुगुरां बहकाया, कूड़ा कूड़ा अर्थ लगाया ॥ ९ ॥ सिंह बाघादिक बनचारी, हिंसक जीव देखे आचारी। उणने मार कह्यां हिंसा लागे, पहिलो होज महाव्रत भागे ॥१०॥ मत मार कहै उणरो रागी, तीजे करण हिंसा लागी। सूयगडांग छै तिणरो साखी, श्रीवीर गया छै भाखी ॥ ११ ॥ गृहस्थ रो शरीर ममता में, साधु बैठा समता मे। रह्या धर्म शुक्ल ध्यान ध्याई, मुवा गया फिकर नही काई ॥ १२ ॥ इह लोगा ने परलोगा: जीवणो मरणो काम भोगा। ए तो पांचूं ही छै अतिचारो, वंछ्यां नही धर्म लिगारो ॥ १३ ॥ आपणो वंछे तो हो पापो, पर नो कुण घाले सन्तापो। मरणो-

दया अनुकम्पा आदरी, तिण आतम आणी ठाय।
मरता देखो जगत ने, सोच फिकर नहिं काय॥ ३ ॥
कष्ट सह्या घर में थका, पाल्या व्रत रसाल।
मोह अनुकंपा श्रावकां, त्यां पण दीधी टाल ॥ ४ ॥
काचा था ते चल गया, हो गया चकना चूर।
सेंठा रह्या चलिया नहीं, त्यांने वीर वखाण्या शूर ॥५॥

॥ ढाल तीसरी ॥

जीव मारे ते धर्म आछो नही (एदेशी)

चम्पा नगरी ना वाणिया, जहाज भरी समुद्र में जाय रे। हिवै तिण अवसर एक देवता, त्यांने उपसर्ग दीधो आय रे॥ जीव मोह अनुकम्पा न आणिये ॥१ ॥ मिनका स्याल कांधे बैसाणिया, गले पहरी छै रुण्ड-मालरे। लोही राधसूं लीप्यो शरीरने, हाथे खड्ग दीसै विकराल रे ॥ जीव० ॥ २ ॥ लोक धड़ धड़ लाग्या धूजवा, उर देव रह्या मन ध्याय रे। अरणक श्रावक डिगियो नहीं, तिण काउसग दीधो ठायरे ॥ जीव० ॥३॥ तिण सागारी अनसन कियो, धर्म ध्यान रह्यो चित ध्यायरे। सगलांने जाण्या डूबता, मोह करुणा न आणी काय रे ॥ जीव० ॥ ४ ॥ अरणक श्रावकने डिगायवा, देव बद बद बोलै वायरे। जो तूं अरणक धर्म न छोड़सी,

मल पल सफलो जात रे। ए तो मिथिला नगरी दाझ तां, म्हारो बले नहीं तिल मात रे॥ जीव०॥ १४॥ म्हारे हर्ष नहीं मिथिला रह्यां, बलियां नहिं शोग लिगार रे। मैं तो सावद्य जाणी त्यागी तिका, रही बली न चावे अणगार रे ॥ जीव०॥ १५॥ नमिराय ऋषि आणी नहीं, मोह अनुकम्पारी बात रे। समभाव राखी मुगते गया, करो आठ कर्मा री घात रे॥ जीव० ॥ १६॥ ए तो केशव केरो बन्धवो, ए तो नामे गज-सुकुमाल रे। तिण दीक्षा लेई काउसग कियो, सोमल आयो तिण काल रे॥ जीव०॥ १७॥ माथे माल बाधी माटी तणी, मांहि घाल्या लाल अंगार रे। कष्ट सह्यो वेदना अति घणी, नेम करुणा न आणी लिगार रे॥ जीव०॥ १८॥ श्रीनेम जिनेश्वर जाणता, होसी गज सुकुमालरी घात रे। पहिलां अनुकम्पा आणी नहीं, और साधु न मेल्या साथ रे॥ जीव०॥ १९॥ श्रीवीर जिनेन्द्र चौबीसवां, जिण कल्पी मोटा अणगार रे। ज्यांने देव मनुष्य तिर्यञ्चना, उपसर्ग उपना अपार रे॥ जीव० ॥ २० सङ्गम देवता भगवान् ने, दुःख दीधा अनेक प्रकार रे। अनार्य लोकां श्रीवीर रे, श्वानादिक दीधा लार रे॥ जीव०॥ २१॥ चौसठ इन्द्र महोत्सव आविया, दीक्षा रे दिन्न भेला होय रे। पिण कष्ट पड्यो

धर्म रे ॥ जीव० ॥ ३० ॥ मति मारणरो कह्यो नहीं, ते तो सावद्य जाणी वाय रे। करुणा न आणी मरता देखने, संठो रह्यो धर्म ध्यान मांय रे ॥ जीव ॥ ३१ ॥ देव कहै तूं धर्म न छोड़सी थांरे देव गुरु सम छै माय रे। तिण ने मारूं विध आगली, थारे मुंहडा आगै ल्याय रे ॥ जीव० ॥ ३२ ॥ जब तूं आर्त्त ध्यान ध्याय ने पड़सी माठी गति में जाय रे। इम सुणने चुलणी पिया चल यगो, मानें राखणरो करै उपाय रे ॥ जीव० ॥३३॥ ओ तो पुरुष अनार्य्य कहै जिसो, भाल राखूं ज्यूं न करै घात रे। ओतो भद्रा बचावण उठियो, डूणरे थाम्भो आयो हाथ रे ॥ जीव० ॥ ३४ ॥ अनुकम्पा आणी जननी तणी, तो भाग्या व्रत ने नेमरे। देखो मोह अनुकम्पा एहवी, तिण में धर्म कहीजै केम रे ॥ जीव० ॥ ३५ ॥ चुलणी पिया ने सूरा देवना, चूल शतक ने शकडाल रे। यां च्यारांरा मारा डीकरा, देव तलिया तेल उकाल रे ॥ जीव० ॥ ३६ ॥ जब बेटा ने मरता देखने, न आणी मोह अनुकम्पा एम रे। उठ्यो मात लियादिक राखवा, तो भाग्या व्रत ने नेम रे ॥ जीव० ॥ ३७ ॥ मात लियादिक ने राखतां भागा व्रतने बंधिया कर्म रे। तो साध जाय बिच में पड्यां, त्यांने किण विध होसी धर्म रे ॥ जीव० ॥ ३८ ॥

॥ दोहा ॥

दुखिया देखी तावड़े, जो नही मेलै छांय।
साध श्रावक न गिणे तेहने, ए अन्यतीर्थी नी वाय ॥१॥
मार्‍यां मरायां भलो जाणियां, तीनूं ही करणा पाप।
देखण वाला ने कहै, खोटो कुगुरु सन्ताप ॥२॥
कर्मा करने जीवड़ा, उपजे ने मर जाय।
असंयम जीतव तेहनो, साधु न करै उपाय ॥३॥
देख मांहो मांही विणशतां, अलगा करदे जाय।
एम कहै तिण ऊपरै, साधु बतावे न्याय ॥४॥

॥ ढाल चौथी ॥

श्रीजिन धर्म जिन आज्ञा तिहाँ (एदेशी)

नाडो भरियो हो डेडक माछलां, मांही नीलण फूलण रो पूर हो। भविकजन, लट पुहरा आदि जलोक सूं, त्रस स्थावर भरियो अपूर हो। भविक जन, करज्यो पारिखा जिन धर्म रो ॥१॥ सुलिया धान तणा ढिगला पड़्या, मांहे लटां ने डुल्यां अथाह हो ॥ भ० ॥ सुल-सुलिया ईण्डा अति घणा, ते तो टलवल करै तिण मांह हो ॥ भ० क० ॥ २ ॥ गाडो भरियो जमीकन्द सूं, तिण मे जीव घणा छे अनन्त हो ॥ भ० ॥ च्यार पर्याय च्यार प्राण हैं, मार्‍यां कष्ट कह्यो भगवन्त हो ॥ भ० क०

किण विध न मरै, जो नेड़ो न आण दे गाय हो ॥ भ० क० ॥ ११ ॥ लट गिराडोलादिक कुशले रहै, जो ते पंखो ने देवे उड़ाय हो । भ० ॥ मिन को धकाल उन्दर बचायले, तो उन्दर घर शोक न थाय हो । भ० क० ॥ १२ ॥ थोड़ोसो माको आगो पाछो कियां, माखी नाठी उडजाय हो । भ० ॥ साधां रे सगला सारखा, ते न पड़े बीच में जाय हो । भ० क० ॥ १३ ॥ मिनको धकाल उन्दर बचायले, माखी राखे मांका ने धिकाय हो । भ० ॥ और मरता देख राखे नहीं, यामें चूक पड़ी ते बताय हो । भ० क० ॥ १४ ॥ साधु पीयर वाजे छ:कायरा, एक छुड़ावे तसकाय हो । भ० ॥ पांच काय मरती देख राखै नहीं, ते पीयर किण विधि थाय हो । भ० क० ॥ १५ ॥ रजोहरणो लेइ ने उठिया, जोरी दावे देवे छुड़ाय हो । भ० ॥ ज्ञान दर्शन चारित तप मांहिलो, यांरे वधियो ते मोय बताय हो । भ० क० ॥ १६ ॥ ज्ञान दर्शन चारित तप बिना, और मुक्ति रो नहीं है उपाय हो । भ० ॥ छोडामेला उपकार ससार ना, तेथी सिद्ध गति किण विध थाय हो । भ० क० ॥ १७ ॥ जितरा उपकार संसार रा, ते तो सगला ही सावद्य जाण हो । भ० ॥ श्रीजिनधर्म मांही आवे नही, ते कूड़ी म कारो ताण हो । भ० क० ॥ १८ ॥

दूजो पर ना प्राण। तीजो पिण भलो जाणै मारियां, ये तीनूं ही हो जीव हिन्सक जाण ॥ भ० ॥ २ ॥ एक कुशील सेवै हर्ष्यो थको, सेवावै हो ते तो दूजो करण जोय। तीजो पिण भलो जाणै सेवियां, यां तीनां रै हो कर्म तणो बन्ध होय ॥ भ० ॥ ३ ॥ यां सगलांई ने सत गुरु मिल्या, प्रतिबोध्या हो आण्या मारग ठाय। हिवै किण २ जीवां ने साधां उद्धस्या, तिण रो सुणज्यो हो विवरा सुध न्याय ॥ भ० ॥ ४ ॥ चोर हिंसक ने कुशी-लिया, यांरे ताईं हो साधां दियो उपदेश। त्यांने सावद्य रा निर्वद्य किया, एहवो छै हो जिन दया धर्म रेंस ॥ भ० ॥ ५ ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र तप तणो, साधां कीधो हो तिण थी उपकार। ए तो तरणतारण हुवा तेहना, उतास्या हो त्यांने संसार थी पार ॥ भ० ॥ ६ ॥ चोर तीनूं ही समझ्यां थकां, धन रह्यो हो धणी रो कुशले क्षेम। हिंसक तीनूं ही प्रतिबोधिया, जीव बचिया हो किया मारण रा नेम ॥ भ० ॥ ७ ॥ जे शील आद-रियो तेहनी, स्त्री हो पड़ी कूवा मांही जाय। यां रो पाप धर्म नहीं साधु ने, रह्या लूवा हो तीनूं अव्रत मांय ॥ भ० ॥ ८ ॥ धन रो धणी राजी हुवो धन रह्यो, जीव बचिया हो ते पिण हर्षित थाय। साधु तिरण तारण नही तेहना, नारी ने हो नहीं डुबोई आय ॥ भ० ॥९॥

उदै आया अशुभ कर्म ॥ भ० ॥ १७ ॥ हिवे साधु कहै तुमे साम्भलो छः काया रे हो साता किण विध थाय। शुभाशुभ बांध्या ते भोगवै, नहो पाम्यो हो त्यां मुगत उपाय ॥ भ० ॥ १८ ॥ हणवा सूँस किया छः काय ना, तिणरै टलिया हो मैला अशुभ कर्म पाप। ज्ञानी जाणै साता हुई तेहने, मिट गया हो जन्म मरण सन्ताप ॥ भ० ॥ १९ ॥ साधु तिरण तारण हुवा तेहना, सिद्ध गति मे हो मेल्या अविचल ठाम। छः काय लारै झिलती रही, नहीं सीझ्या हो त्यांरा आत्म काम ॥ भ० ॥ २० ॥ आगै अरिहन्त अनन्ता हुवा, कहितां कहितां हो नहो आवै त्यांरो पार। ते आप तिख्या और तारिया, छः काया रै हो साता न हुई लिगार ॥ भ० ॥ २१ ॥ एक मोतै बच्यो मरवा थको, दूजो कीधो हो तिण रो जीवण रो उपाय। तीजो मिण भलो जाणै जीवियां, यां तीनां मे हो सिद्ध गति कुण जाय ॥ भ० ॥ २२ ॥ कुशलै रह्यो तिण रै अव्रत घटी नहीं, तो दूजां ने हो तुमे जाणज्यो एम। भलो जाण्यो तिण रै व्रत न नीपनो, ये तीनूं ही हो सिद्ध गति जासी किम ॥ भ० ॥ २३ ॥ जीवियां जीवायां भलो जाणियां, ए तीनूँ ही हो करण सरीखा जाण। कोई चतुर होसी ते समझसी, अणसमझ्यां हो करसी ताणाताण ॥ भ०

अवसरेजी, हाथ फेरयां सुख थाय ॥ च० ॥ ३ ॥ साधु पधारया देखनेजी गृहस्थी बोल्या वाय । थे हाथ फेरो पेट ऊपरे, सौ श्रावक जीवां जाय ॥ च० ॥ ४ ॥ जद कहै हाथ न फेरणोजी, साधां ने कल्पै नांय । थे कहता जीव बचावणा, अब बोल ने वदलो कांय ॥ च० ॥ ५ ॥ गोशाला नें वीर बचावियोजी, तिण में कह्यो छो धर्म । सौ श्रावक नहीं बचावियां, ज्यांरी सरधा रो निकल्यो भ्रम ॥ च० ॥ ६ ॥ गोशालारै कारणै जी, लब्धि फोरी जगन्नाथ । सौ श्रावक मरता देखने, थे कांय न फेरो हाथ ॥ च० ॥ ७ ॥ धर्म कह्यो भगवन्त ने तो पोतै कांय छोड़ी रीत । सौ श्रावक नहीं बचावियां, त्यांरी कुण मानसी प्रतीत ॥ च० ॥ ८ ॥ गोशालाने बचावियां में, धर्म कह्यो साक्षात । सौ श्रावक मरता देख ने, थे कांय न फेरो हाथ ॥ च० ॥ ९ ॥ इम कह्यां जाब न ऊपड़ै, जब कूड़ो करै बकवाय । हिवे साध कहै तुमे सांभलोजी. गोशाला रो न्याय ॥ च० ॥ १० ॥ साधां ने लब्धि न फोड़णोजी, सूत्र भगवती मांय । मिण मोह कर्म वश राग थी, तिणसूं लियो गोशालो बचाय ॥च०॥११॥ छः लेश्या हूंती जद वीर मे जी, हूंता आठू ही कर्म । छद्मस्थ चूक्या तिण समयजी, मूर्ख थापै धर्म ॥ च० ॥ १२ ॥ छद्मस्थ चूकपणो तिकोजी, मूंढै आगे बोल ।

ठिकाणै हाथ सूं, म्हारै दया रहै घट मांय ॥ च० ॥२२॥ तपसी श्रावक उपासरै जी, काउसग दीधो ठाय। त्यांनै मृगी आय ने ढह पड़्योजी, गावर भांजो जीव जाय॥ च० ॥ २३ ॥ कोई गृहस्थ आय ने इम कहैजी, थे मोटा छो मुनिराज। बैठो न कीधो एह ने, ओ मरै छै गावर भांज ॥ च० ॥ २४ ॥ जद तो कहै म्हे साधछांजी, श्रावक बैठो करां केम। म्हारै काम कांई गृहस्थसूंजी बोलै पाधरा एम ॥ च० ॥ २५ ॥ श्रावक बैठो करै नहीं, पखो मेलै माला रे मांय। देखो पूरो अन्धेरो एहवो अै चौड़े भूला जाय ॥ च० ॥ २६ ॥ पंखो माला मांहि मेलतांजी, शकै नहीं मन मांय। श्रावक ने बैठो कियां मे, धर्म न श्रद्धै कांय ॥ च० ॥ २७ ॥ इतरो समझ पड़े नहीं, त्यांमे समकित पावै केम। छकिया मोह मिथ्यात में, बोलै मतवाला जेम ॥ च० ॥ २८ ॥ कहै साधां नें उन्दर छुड़ावणोजी, मिनकी पासे जाय। श्रावक बैठो करै नहीं, ओ किण विध मिलसी न्याय ॥ च० ॥ २९ ॥ मूसादिक ने बचावतांजी, मिनकी ने दुःख थाय। श्रावक ने बैठो कियांजी, नहीं किण रै अन्तराय ॥ च० ॥३०॥ मूसादिक रै कारणैजी, मिनकी नसाड़ै डराय। श्रावक मरै मुख आगलै, बैठो न करै हाथ संभाय ॥ च० ॥ ३१ ॥ ए प्रत्यक्ष वात मिलै

पिण निर्वद्य कोय म जाणज्योजी, अकल हियारी खोल ॥ च० ॥ १३ ॥ ज्यूं आनन्द श्रावक ने घरेजी, गौतम बोल्या कूर। पड़िया छद्मस्थ चूक में, शुद्ध हुय गया वीर हजूर ॥ च० ॥ १४ ॥ इम अवश उदय मोह आवियोजी, नहीं टाल सक्या जगन्नाथ। ए तो न्याय न जाणियोजी, ज्यांरे मांहे मूल मिथ्यात ॥ च० ॥ १५ ॥ गोशालाने नहीं बचावता, तो घटतो अच्छेरो एक। निश्चय होनहार टले नहीं, थे समझो आण विवेक ॥ च० ॥ १६ ॥ गोशाले ने बचावियो तो, वधियो घणो मिथ्यात। लोही ठाण कियो भगवन्त ने, वले दोय साधां रो घात ॥ च० ॥ १७ ॥ गोशाले ने बचाविया में, धर्म जाणों जो स्वाम। दोय साध बचावत अपणा, वले करता धोहिज काम ॥ च० ॥ १८ ॥ गोशाला ने बचावियां में, धर्म जाणे जिनराय। तो दोय साध न राख्या आपणा, ओ किण विध मिलसी न्याय ॥ च० ॥ १९ ॥ जगत में मरता देखनेजी, आडा न दीधा हाथ। धर्म हुंतो तो आघो न काढ़ता, ए तो तरणतारण जगन्नाथ ॥ च० ॥ २० ॥ एहवो विवरो शुद्ध बतावियोजी, सूत्र भगवती मांय। कोई कुबुद्धि करे कदाग्रहीजी, सुबुद्धि रे आवे दाय ॥ च० ॥ २१ ॥ कहे साधां रे

ठिकाणे हाथ सूं, म्हारै दया रहै घट मांय ॥ च० ॥२२॥ तपसो श्रावक उपासरै जी, काउसग दीधो ठाय। त्यांने मृगी आय ने ढह पड़्योजी, गावर भांजो जीव जाय ॥ च० ॥ २३ ॥ कोई गृहस्थ आय ने इम कहैजी, थे मोटा छो मुनिराज। बैठो न कीधो एह ने, ओ मरै छै गावर भांज ॥ च० ॥ २४ ॥ जद तो कहै म्है साधछांजी, श्रावक बैठो करां केम। म्हारे काम कांई गृहस्थसूँजी बोलै पाधरा एम ॥ च० ॥ २५ ॥ श्रावक बैठो करै नहो, पखो मेलै माला रे मांय। देखो पूरो अन्धेरो एहवो अै चौड़े भूला जाय ॥ च० ॥ २६ ॥ पखो माला मांहि मेलतांजी, शकै नहीं मन मांय। श्रावक ने बैठो कियां मे, धर्म न श्रद्धै कांय ॥ च० ॥ २७ ॥ इतरी समझ पड़े नही, त्यांमे समकित पावै केम। छकिया मोह मिथ्यात में, बोलै मतवाला जेम ॥ च० ॥ २८ ॥ कहै साधां नें उन्दर छुड़ावणोजी, मिनकी मासे जाय। श्रावक बैठो करै नहीं. ओ किण विध मिलसी न्याय ॥ च० ॥ २९ ॥ मूसादिक ने बचावतांजी, मिनकी ने दुःख थाय। श्रावक ने बैठो कियांजी, नहीं किण रै अन्तराय ॥ च० ॥३०॥ मूसादिक रै कारणैजी, मिनकी नसाड़े डराय। श्रावक मरै सुख आगलै, बैठो न करै हाथ संभाय ॥ च० ॥ ३१ ॥ ए प्रत्यक्ष बात मिलै

नहीं जी, तावड़ा छांहड़ो जेम। ज्यां श्रीजिन मारग ओलख्यो, त्यांरे हृदये वसे केम ॥ च० ॥ ३२ ॥ कहै न्याय लागे तो ढांढा खोलने, साधु काढ़ै उघाड़ी द्वार। श्रावकने वैठो करै नहीं, आ श्रद्धा करै खुवार ॥ च० ॥ ३३ ॥ ढांढादिक ने खोलतांजी, खप घणी छै ताय। सो श्रावक हाथ फेर्‌यां वचे, त्यांरी कांय न आणै मन मांय ॥च०॥ ३४ ॥ कहै ढांढा खोल वचावस्यां, श्रावक रै न फेरां हात। एह अज्ञानी जीव रो, कोई मूरख मानै वात ॥ च० ॥ ३५ ॥ कहै गाडा हेठे आवे डावड़ो तो, साधां ने लेणो उठाय। श्रावक ने वैठो करै नहीं, श्री कुण्यो पन्थ इण न्याय ॥ च० ॥ ३६ ॥ ऋतु वर्षाला समयजी, जीव घणा छै ताय। लटां गिजायां ने कात-रार्जा, पड़िया मारग मांय ॥ च० ॥ ३७ ॥ साधु वारे निकल्याजी, जीव जीव मूके पाय। लारे ढांढा देखा भावना, पिण जीवां ने न ले उठाय ॥ च० ॥ ३८ ॥ जी वालक लेवे उठायनेजी, जीवां ने न ले उठाय। तो उणरी श्रद्धारे लेखे उणरे दया नहीं घट मांय ॥ च० ॥ ३९ ॥ जो वालक लेवे उठायने, और जीव देखि ले नाहिं। इण श्रद्धारी करन्यां पारखा, कोई रखे पड़े फन्द मांहि ॥ च० ॥ ४० ॥

॥ दोहा ॥

मच्छ गलागल लोक में, सबला निबलां ने खाय।
तिण में धर्म परूपियो, कुगुरां कुबुद्धि चलाय ॥ १ ॥
मूला जमीकन्द खुवाड्यां, कहै छै मिश्र धर्म।
ए श्रद्धा पाखण्ड्यां आदरी, जाडा बन्धसी कर्म ॥२॥
मूला खुवायां पाणी पावियां, सचित्तादिक द्रव्य अनेक।
खाधांखवायांभलो जाणियां, यां तीनांरी विधि एक ॥३॥
ये तो न्याय न जाणियो, ऊजड़ पड़िया अजाण।
करण योग विकटाविया, ए मिथ्यादृष्टि अनाण ॥४॥
कुहेत लगावै जीवने. हिंसा धर्म भाषन्त।
हिवै सात दृष्टान्त साधु कहै, ते सुणज्यो कर खन्त ॥५॥
मूला पाणी अग्नि नो, चौथो होकारो जाण।
त्रस जीव कलेवर तणो, सातमो मनुष्य बखाण ॥६॥
त्यामें तीन दृष्टान्त करड़ा कह्या, ते जाणै अज्ञानी विरुद्ध।
समदृष्टि जिन धर्म ओलख्यो, ते न्यायसूं जाणै शुद्ध ॥७॥
केशीकुमर दृष्टान्त करड़ा कह्या, तो छोड़ी परदेशी रूढ।
न्याय मेल हुवो समकिती, झगड़ो झालै ते मूढ ॥८॥
जिणरी बुद्धि छै निर्मली, ते लेसी न्याय विचार।
सुणै भारी कर्मा जीवड़ा, तो लड़वा नै छै त्यार ॥९॥
हिवै सात दृष्टान्त धुरसूं वले, आगै घणो विस्तार।
भिन्न भिन्न भवियण सांभलो, अन्तर आंख उघार ॥१०॥

॥ ढाल सातवीं ॥

(वीर सुणो मोरी विनती—एदेशी)

मूला खवायां मिश्र कहै, लगावे हो खोटा दृष्टान्त एह। पाप लागो मूलां तणो, धर्म हुवो हो खाधां वचिया तेह। भवियण जिन धर्म ओलखो ॥ १ ॥ कहै कूवा वाव खिणावियां, हिंसा हुई हो तिण रा लाग्या कर्म। लोक पिये कुशले रहै, साता पामो हो तिण रो हुवो धर्म ॥ भ० ॥ २ ॥ इम कही मिश्र परूपतां, नहिं शंकै हो करता बकवाय। इण श्रद्धा रो प्रश्न पूछियां, जाब न आवे हो जब लोग लगाय ॥ भ० ॥ ३ ॥ हिवे सात दृष्टान्त री थापना, त्यांरी सुणज्यो हो विवरा सुध वात। निर्णय कीजो घट भीतरे, बुद्धिवन्ता हो छोड़ि ने पक्षपात ॥ भ० ॥ ४ ॥ सौ मनुष्या ने मरता राखिया, मूला गाजर हो जमीकन्द खुवाय। वले मरता राख्या सौ मानवी, काचो पाणी हो त्यांने अणगल पाय ॥ भ० ॥ ५ ॥ सौ मास महीने ठारी पड़े, तिण काले हो वाजे शीतल वाय। अचेत पड्या सौ मानवी, मरता राख्या हो त्यांने अग्नि लगाय ॥ भ० ॥ ६ ॥ पेट दुखे तड़फड़ करे, जीव देहरा हो करे हाय तिराय। साता वपराई सौ जणा, मरता राख्या हो त्यांने हीको पाय ॥ भ० ॥ ७ ॥ सौ जणा दुर्भिक्ष काल में, अन्न विना

हो मरै उजड़ मांय । कोईक मारै त्रसकाय ने, सौ जणां ने हो मरता राख्या जिमाय ॥ भ० ॥८॥ किण-हिक काले अन्न बिना, सौ जणांरा हो जुदा हुवे जीव काय । सहजे कलेवर सुवो पड्यो, कुशले राख्या हो त्यांने तेह खुवाय ॥ भ० ॥ ६ ॥ वले मरता देखी सौ रोगला, ममाई विना हो ते साजा न थाय । कोई ममाई करे एक मनुष्य री, सौ जणारे हो साता कीधी बचाय ॥ भ० ॥ १० ॥ जमीकन्द खुवायां पाणी पावियां, त्यां में थापै हो पाप ने धर्म दोय । तो अग्नि लगाय होको पाविया, इत्यादिक हो सगलै मिश्र होय ॥ भ० ॥ ११ ॥ जो धर्म कहै बचिया तिको, हण्या तिण रा हो लागया जाणै कर्म । तो सातों ही सरीखा लेखवे, कह देना हो सगलै पाप ने धर्म ॥ भ० ॥ १२ ॥ जो सातां में मिश्र कहै नहो, तो किम आवे हो यांरी वोल्यां री प्रतीत । आप थापै आप उत्थापै, तो कुण मानै हो आ श्रद्धा विपरीत ॥ भ० ॥ १३ ॥ जो सातां ही मे मिश्र कहै, तो नहो लागै हो गमती लोकांमे बात । मिलती कह्यां विन तेहनी, कुण करै हो कूड़ां री पखपात ॥ भ० ॥ १४ ॥ एक दोय वोलां मे मिश्र कहै, सगलां में हो कहता लाजे मूढ । एहवो उलटो पन्थ झालियो, त्यांरे केड़ै हो बूड़ै कार कार रूढ ॥ भ० ॥१५॥ सौ सौ

मनुष्य सगलै बच्या, थोड़ो घणी हो हुई सगलै घात। जो धर्म बरोबर न लेखवै. तो उत्थप गयी हो मूलां पाणीरी बात ॥ भ० ॥ १६ ॥ बात उत्थपती जाणने. कदे कहदे हो सगले पाप ने धर्म । पिण समदृष्टि श्रद्धै नहीं, ए तो काढ्यो हो खोटी श्रद्धा रो भ्रम ॥ भ० ॥ १७ ॥ असंयती रो मरणो जीवणो. वांछा कीधां हो निश्चय राग न द्वेष । ए धर्म नहीं जिन भाषियो, संशय हुवै तो अङ्ग उपांग देख ॥ भ० ॥ १८ ॥ काच तणा देखी मिणकला, अणसमझू हो जाणे रत्न अमोल । ते निज सांपड़ियां सराफ री, कर दीधा हो त्यांरा कौड्यां मोल ॥ भ० ॥ १६ ॥ मूला खुवायां मिश्र कहै, ए श्रद्धा हो काच मिणिया समान । तो पिण धारी रत्न अमोल ज्यूं, न्याय न सूझै हो चाला कर्मा रा जान ॥भ०॥२०॥ जीव मारी झूठ बोलने चोरी करने हो पर जीव बचाय । बले करै अकारज एहवो, मरता राखे हो मैथुन सेवाय ॥भ०॥२१॥ धन दे राखै पर प्राणने. क्रोधादिक हो अठारै ही सेवाय । एहिज कामां पोते करी, पर जीवां ने हो मरता राखै ताय ॥ भ० ॥२२॥ हिन्सा करी जीव राखिया, तिण मे रोसा हो धर्म नै पाप दोय । तो इम अठारह ही जाणज्यो, ए चर्चा मां हो विरला समझै कोय ॥ भ० ॥ २३ ॥ जो एकण मे मिश्र कहै, मतरे में हो

भाषा बोलै और। ऊंधी श्रद्धा रो न्याय मिलै नहीं, जद उलटो हो कर उठै झोर ॥ भ० ॥ २४ ॥ जीव मारि जीव राखणा, सूत्र मे हो नही भगवन्त वेण। ऊंधी पन्थ कुगुरां चलावियो, शुद्ध न सूझै हो फूटा अन्तर नैण ॥ भ० ॥ २५ ॥ कोई जीवता मनुष्य तिर्यञ्च ना, होम करै हो युद्ध जीतण संग्राम। एक तो ओ पाप मोटको, जीव होम्या हो दूजो सावद्य काम ॥ भ० ॥२६॥ कोई नाहर कसाई ने मारने, मरता राख्या हो घणा जीव अनेक। जो गिणै दोयां ने सारखा. त्यांरी बिगड़ी हो श्रद्धा वात विवेक ॥ भ० ॥ २७ ॥ पहला कहता जीव बचावणो, तिण लेखै हो वोलै शुद्ध न काय। जीव बचियां रो धर्म गिनै नहो, खिण थापै हो खिण में फिर जाय ॥ भ० ॥ २८ ॥ देवल ध्वजा तेहनी परै, फिरता वोलै हो न रहै एकण ठाम। त्यांनै पाखण्डी जिन कह्या, झगड़ो झाल्यो हो नहीं चर्चा रो काम ॥ भ० ॥२९॥ जो एकण मे अधर्म कहै, दूजा में हो कहै धर्म नै पाप। ए लेखो कियां तो लड़ पड़ै, त्यांरै घट में हो खोटी श्रद्धा री थाप ॥ भ० ॥ ३० ॥ वलै शरणो लेई श्रेणिक तणो, सावद्य बोलै हो तिण री खवर न कांय। जोरी दावै पेलां नै वरजियां. तिण मांहे हो जिन धर्म वताय ॥ भ० ॥ ३१ ॥ कहै श्रेणिक पड़हो बजा-

वियो, हणो मति हो फेरी नगरी में आण। तिण मोक्ष हेतु धर्म जाणियो, एहवो भाषै हो मिथ्यादृष्टि अजाण ॥ भ० ॥ ३२ ॥ राय श्रेणिक थो समकिती, धर्म विना हो किम करसी ए काम। इम कहि कहि भोला लोक ने, फन्द में न्हाखे हो श्रेणिक रो ले नाम ॥ भ० ॥ ३३ ॥ श्रेणिक ने करै मुख आगलै, आमी स्हामी हो मांडै खांचा ताण। आप छान्दै उटकां मेलतां, कुण पालै हो श्रीजिनवर आण ॥ भ० ॥ ३४ ॥ समदृष्टि तणो कोई नाम ले, भरमावे हो अनसमझू अजाण ते शक्र इन्द्र समदृष्टि देवता, जिन भक्ताहो एका अवतारी जाण ॥भ०॥३५॥ ते भीड़ आया कौणक तणी, युद्ध कीधो हो ते सावद्य जाण। एक करोड़ अस्सी लाख ऊपरे, मनुष्यां रा हो कीधा घमसाण ॥ भ० ॥ ३६ ॥ श्रेणिक राय पड़हो फिराविया, ए तो जाणो हो मोटा राजा री रीत। भगवन्त न सराह्यो तेहने, तो किम आवे हो तेहनी परतीत ॥ भ० ॥ ३७ ॥ पड़हो फेर्यो हणो मति, इतरी छै हो सूत्र में वात। कोई धर्म कहै श्रेणिक भणी, ते तो बोलै हो चौड़ै झूठ मिथ्यात ॥ भ० ॥३८॥ मोक्षां सूं मिलती वात जाणने, कर रह्या हो कूड़ी बकवाद। मिश्र कहै ते पिण अटकलां, सांचा झूठे हो ... सूत्र में देवे बताय ॥ भ० ॥ ३९ ॥ ए तो पुलादिक

जायां परणियां, उछआदिक हो ओरी शीतला जाण। एहवै कारण कोई ऊपनें. श्रेणिक राजा हो फेरी नगर में आण ॥ भ० ॥४०॥ ते तो रुकिया नहीं कर्म आवता, नहीं काटिया हो तिण रा आगला कर्म। वले नरक जातो रह्यो नहीं, न सिखायो हो भगवन्त ओ धर्म ॥ भ० ॥ ४१ ॥ भगवन्त मोटा मोटा राजवी, प्रतिबोध्या हो आण्या मारग ठाय। साधु श्रावक धर्म बतावियो, न सिखायो हो पड़हो फेरणो ताय ॥ भ० ॥ ४२ ॥ तो श्रेणिक सीख्यो किण आगले, भगवन्तने हो पूछ्यां सांभे सून। वले न जणावे आमना, आज्ञा बिना हो करणी जाणो जबून ॥ भ० ॥ ४३ ॥ वासुदेव चक्रवर्ती मोटका, त्यांरी वर्त्ते हो तीन छः खण्ड में आण। जो पड़हो फेर्‌यां मुगत मिलै, तो कुण काढै हो आघो जिन धर्म जाण ॥ भ० ॥४४॥ कोई विसन वाला मिनख ने, विसन सातूं हो बिना मन दे छुड़ाय। जो इण विध जिन धर्म निपजे, तो छः खण्ड में हो बरजे आण फिराय ॥ भ० ॥ ४५ ॥ फल फूलादिक अनन्त काय मे, हिन्सादिक हो अठारह पाप जाण। जोरी दावे पेला मे मने कियां, धर्म हुवे तो हो फेरे छः खण्ड मे आण ॥ भ० ॥ ४६ ॥ वले तीर्थंकर घर में थकां, त्यां में हुंता हो तीन ज्ञान विशेष। वले हाल हुक्म थो लोक में, त्यां

न फेरयो हो पड़हो सूत्र देख ॥ भ० ॥ ४७ ॥ बलदेवादिक मोटा राजवी, घर छोड़ी हो किया पाप रा पच्चखाण। श्रेणिक जिम पड़हो न फेरियो, जीवी दावे हो न वरताई आण ॥ भ० ॥ ४८ ॥ ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती तेह ने, चित्त मुनि हो समझावण आय। साधु श्रावक रो धर्म बतावियो, पड़ह री हो न कहीं आमना काय ॥ भ० ॥ ४९ ॥ बीसां भेदे रुके कर्म आवता, बारह भेदे हो काटे आगला कर्म। ए मोक्ष रो मारग पाधरो, छोडा मेला हो सगला पाखण्ड धर्म ॥ भ० ॥ ५० दोय वेश्या कसाई वाड़े गयी, करता देखी हो जीवां रा संहार। दोनूं जण्यां मतो कर्‌यो, मरता राख्या हो जीव दोय हजार ॥ भ० ॥ ५१ ॥ एक गहणो देई आपणो, तिण छुड़ाया हो जीव एक हजार। दूजी छुड़ाया इण विधि, एक दोयसूं हो चौथो आस्रव सेवाड़ ॥ भ० ॥ ५२ ॥ एकण ने पाखण्डी मिश्र कहे, दूजी ने हो पाप किण विध थाय। जीव बराबर बचाविया, फेर पड़सी हो ते तो पाप में जाय ॥ भ० ॥ ५३ ॥ एकण सेवायो आस्रव पांचमो, तो उण दूजी हो चौथो आस्रव सेवाय। फेर पड्यो तो इण पाप में, धर्म होसी हो ते तो सरीखो थाय ॥ भ० ॥ ५४ ॥ एकण ने धर्म कहतां लाजे नहीं, दूजी ने हो कहतां आणे शङ्क। जब लोकां में

करै लगावणो, एहवा जाणो हो चौड़े कुगुरां डक ॥ भ० ॥ ५५ ॥ एक वेश्या सावद्य कामो करी, सहस्र नाणो हो ले चली घर मांय । दूजी कर्त्तव्य करी आपणो, मरता राख्या हो सहस्र जीव छुड़ाय ॥ भ० ॥ ५७ ॥ धन आण्यो खोटा कर्त्तव्य करी, तिण रै लाग्या हो दोनूं विध कर्म । तो दूजी छुड़ाया तेह ने, उण लेखै हो हुवो पाप ने धर्म ॥ भ० ॥ ५७ ॥ पाप गिणै मैथुन में, जीव बचिया हो तिण रो न गिणै धर्म । पोतै श्रद्धारो खबर पोते नहीं, ताण ताण हो बांधै भारी कर्म ॥ भ० ॥ ५८ ॥ इण प्रश्न रो जाब न उपजै, चर्चा में हो घटकै ठामो ठाम । तो पिण निर्णय करै नहीं, बक उठै हो जीवां रो ले नाम ॥ भ० ॥ ५९ ॥ जीव जीवै काल अनादि रो, मरै तिण री हो पर्याय पलटी जाय । संवर निर्जरा तो न्यारा कह्या, ते लेजावै हो जीव ने निर्वाण ॥ भ० ॥ ६० ॥ पृथ्वी, पाणी, अग्नि, बायरो, बनस्पति हो छठो त्रसकाय । मोलसूं छुड़ावै तेह ने, धर्म होसी हो तै तो सगलां मे थाय ॥ भ० ॥ ६१ ॥ त्रसकाय छुड़ायां मे धर्म कहै, पांच काय में हो बोलै नहीं निःशंक । भ्रम में पाड्या लोक ने, त्यां लगाया हो मिथ्यात रा डक ॥ भ० ॥६२॥ त्रिविधे छः काय हणावो नहीं, एहवी छै हो भगवन्त री वाय । मोल लियां धर्म

पाहै मोक्ष री, ए फन्द मांड्यो हो कुगुरां कुबुद्धि चलाय ॥ भ० ॥ ६३ ॥ देव गुरु धर्म रत्न तीनूं, सूत्र में हो जिन भाख्या अमोल। मोल लियां नहीं नीपजे, सांची श्रद्धा हो आंख हिया री खोल ॥ भ० ॥ ६४ ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र ने तप, मोक्ष जावा हो मारग छै च्यार। त्यांने भिन्न भिन्न ओलख आदरै, शुद्ध पाले हो ते पामै भव पार ॥ भ० ॥ ६५ ॥

॥ दोहा ॥

दया दया सब को कहै, ते दया धर्म छै ठीक।
दया ओलखने पालसी, त्यांने मुक्ति नजीक ॥१॥
दया तो पहलो व्रत छै, साधु श्रावक रो धर्म।
पाप रुकै जासूं आवता, नवा न लागै कर्म।
छः काय हणे हणावे नहीं, हणतां भलो न जाणै ताय ॥२॥
मन वचन काया करी, ए दया कही जिनराय।
दया सोधै तिण पालियां, तिरै घोर रुद्र संसार ॥३॥
[illegible] दया परूपनां, भव जीव उतरै पार ॥४॥
[illegible] नाम दया लौकिक री, तिण रा भेद अनेक।
[illegible] भेषधारी भूला घणा, मुगत्यां आणा विवेक ॥५॥

॥ ढाल आठवीं ॥

आ अनुकंकम्पा जिन आज्ञा मे (एदेशी)

द्रव्ये लाय लागी भावे लाय लागी, द्रव्य [illegible]
भावे कूवो। ऐ भेद न जाणे मूढ मिथ्याति, [illegible]
मुगत रो मारग जूवो॥ भेष धरने भूला [illegible]
करज्यो ॥ १ ॥ कोई द्रव्य लाय सूं वलता [illegible]
कूवे पड़ता ने झाल वचायो। ए तो उप[illegible]
भव रो, विवेक विकल त्यांने खबर [illegible]
॥ २ ॥ घट मे ज्ञान घालो ने पा[illegible]
पड़तो राख्यो भव कूवा मांयो। [illegible]
काढ़ै ऋषिश्वर, ते पिण गहिला [illegible]
॥ ३ ॥ सूने चित्त सूत्र वांचे मि[illegible]
रा नहीं निवेरा। परिवार सहित [illegible]
त्यां नरकां रै सन्मुख दीना डेरा [illegible]
मे औषध भेषज देई मे, [illegible]
वचायो। ए संसार तणो उप[illegible]
मारग मूढ बतायो ॥ भे० ॥ [illegible] वर
झपटा, सर्पादिक रो जहर [illegible] ड़
साकण भूत यक्षादिक, [illegible]
॥ भे० ॥ ६ ॥ एहवा [illegible]
तिविधे साधां त्यागज कीं[illegible]

जीव जिवावण री शरणो लीधो ॥ भे० ॥ ७ ॥ ए जीव बचावण री मुख सूं कहै पिण काम पड्यां बोलै फिरती वाणी। भोलां ने भ्रम में पाड़ विगोया, ते पिण डूबै छै कर कर ताणो ॥ भे० ॥ ८ ॥ कीड़ी मांकादिक लटां गिजायां, ढांढा रै पग हेठै चीथ्या जावै। भेषधारी कहै म्हे जीव बचावां तो, चुग चुग जीवां ने क्यूं न उठावै ॥ भे० ॥ ९ ॥ जो आखो चौमासो उपदेश देवै तो, दश बीस जीवां ने दोहरा समझावै। जो उद्यम करै चार महीना रे मांही, तो लाखां गमे जीव तेहिज बचावै ॥ भे० ॥ १० ॥ सौ घर रे आंतरै कोई लेवै मन्थारो, तो तुरत आलस छोड़ देवण जावै। सो पगल्यां गयां जीव लाखां बचै छै, त्यां जीवां ने जाय ने क्यूं न बचावै ॥ भे० ॥ ११ ॥ घर छोड़तो जाणे सौ कोसां ऊपर, तो मांग पहिरावण सताब सूं जावै। एक कोस गयां जीव कोड़ां बचै छै, त्यां जीवां ने जायर क्यूं न बचावै ॥ भे० ॥ १२ ॥ जब तो कहै म्हांरो काल्प नहीं छै, म्हे तो संसार सूं हुवा न्यारा। कभी कहै म्हे जीव बचायां, ए वाणी न बोलै एकण धारा ॥ भे० ॥ १३ ॥ साधु तो आपणा व्रत राखण ने, त्रिविध त्रिविध जीव नहीं सतावै। संसार मांही जीव पच रह्या छै, तिण सूं तो साधु हुआ निरदावै ॥ भे० ॥ १४ ॥ जीवणो

मरणो त्यांरो न चावे, समझता दीखे तो साधु समझावे। ज्ञानादिक घट मांहो घाले. मुक्त नगर मे संत पहुंचावे ॥ भे० ॥१५॥ गृहस्थ रै पग हेठे जीव आवै, तो भेषधारी कहै म्हे तुरत बतावां। ते पिण जीव बचावण काजे, सर्व ही जीवां रो जीवणो चावां ॥ भे० ॥१६॥ अव्रती जीवां रो जीवणो चावे, तिण धर्म रो परमार्थ नहीं पायो। श्रद्धा अज्ञान्यां री पगपग अटकै, न्याय सुणज्यो भवियण चित लायो ॥ भे० ॥ १७ ॥ गृहस्थ रै तेल जावै सूण फूट्यां, कीड्यांरा दल मांहि रेला आवे। बीच में जीव आवै तेलसूं बहता, तेल बुहो बुहो अग्नि में जावे ॥ भे० ॥ १८ ॥ जो अग्नि उठै तो लाय लागै छै, त्रस स्थावर जीव मार्‌या जावै। गृहस्थ रा पग हेठे जीव बतावै, तो तेल ढुलै ते बासण क्यूं न बतावै ॥ भे० ॥ १९ ॥ पगसूं मरता जीव बतावै तेलसूं मरता जीव नही बतावै। ए खोटी श्रद्धा उघाड़ी दीसै, पण अभ्यन्तर अंधारो नजर न आवै ॥ भे० ॥ २० ॥ भेषधारी विहार करता मारग में, त्यांने श्रावक स्हामा मिलिया आयो। मारग छोड़ने ऊजड़ पड़िया, त्रस स्थावर जीवां ने चौथता जायो ॥ भे० ॥२१॥ श्रावक ने ऊजड़ पड़िया जाणै, त्रस स्थावर जीवां ने मरता देखै। गृहस्थ रै पग हेठे जीव बतावै, तो मारग बतावणो कूण

लेखे ॥ भे० ॥ २२ ॥ एक पग हेठे जीव बतावे अज्ञानी, ठाले बादल अम्बर जिम गाजे । श्रावक उजाड़ में मारग पूछे, जद मौन साजे बोलतां कांय लाजे ॥ भे० ॥ २३ ॥ एक पग हेठे जीव बतावे, त्यां में थोड़ासा जीवां ने बचता जाणी । श्रावकां ने उजाड़सूं मारग घाल्यां, घणा जीव बचे त्रस स्थावर प्राणी ॥ भे० ॥२४॥ थोड़ी दूर बतायां थोड़ो धर्म हुवे, तो घणी दूर बतायां घणो धर्म जाणो । घणी दूर रो नाम लियां बक उठे, ते खोटो श्रद्धारो छे अहिनाणो ॥ भे० ॥ २५ ॥ कोई अन्धा पुरुष ग्रामान्तर जातां, आंख विना जीव किम विध जोवे, । कीड़ी मांकादिक चीथतो जावे, त्रस स्थावर जीवां रा घमसाण होवे ॥ भे० ॥२६॥ भेषधारी सहजे साथ हो जाता, आन्धारा पगसूं मरता जीवां ने देखे । यो पग पग जीवां ने नहीं बतावे, तो खोटी श्रद्धा आणाऱ्यो इण लेखे ॥ भे० ॥ २७ ॥ त्यां ने बताय बतायने जीव बचावणा, पूंज पूंजने करणा दूरो । इण धर्म क्रियां में पोतेज लाजे, तो बीजो कुण मानसी आमत पूरो ॥ भे० ॥ २८ ॥ ईल्यां मुलमुलियां सहित माटी छे, गृहस्थ सूं दूरे मारग मांयो । आ तपती रेत उन्हाले री जिम से, पल्ल प्रमाण हुवे जुदा जीव कायो ॥ भे० ॥ २९ ॥ गृहस्थ नहीं देवे माटी दूरतो, तो भी पधारां

री निजरां आवै। ए पग हेठै जीव बतावै अज्ञानी तो, आटा टुलता जीव क्यूं न बचावै ॥ भे० ॥३०॥ इत्यादिक गृहस्थ रै अनेक उपधिसूं त्रस स्थावर जीव मुवा ने मरसी। एक पग हेठै जीव बतावै, त्यां ने सगली ही ठौड़ बतावणा पड़सी ॥ भे० ॥ ३१ ॥ किणहिक ठौड़ जीव बतावै, किणहिक ठौड़ शङ्का मन आणै। समझ पड़्यां बिन श्रद्धा परूप, पीपल बांधी मूरख जिम ताणै ॥ भे० ॥ ३२ पग पग जावक अटकता देखै, कदा सर्व आरै हुवा अज्ञानी थूलो। कूड़ कपट रो मत कुशले राखणने पिण बुद्धिवन्त वात न मानै मूलो ॥ भे० ॥ ३३ ॥ गृहस्थ रो न वंछणो जीवणो मरणो, वंछ्यां बतायां लागै पाप कर्मों। राग द्वेष रहित रहणो निरदावै, एहवो निकेवल श्रीजिन धर्मों ॥

आ श्रद्धा श्रीजिनवर भाषी ॥ ३४ ॥

समवसरण एक योजन मांडला मे, नर नार्‍यांना वृन्द आवै ने जावे। अरिहन्त आगल वाणी सुणवा, भगवन्त भिन्न भिन्न धर्म सुणावे ॥ आ० ॥ ३५ ॥ चार कोस मांही त्रस स्थावर हूंता, मर गया जीव उराणे आया। नरनार्‍यां रा पगसूं बिना उपयोगे, भगवन्त काठे ही न दीसै बताया ॥ आ० ॥ ३६ ॥ नन्दन मणिहारो डेडको हुय ने, वीर वांदण जातां मारग मांयो। तिण ने घोथ

मारो श्रेणिक ने वछेरै, वीर साध सांहमा मेल क्यां गे वचायो ॥ श्रा० ॥ ३७ ॥ गृहस्थ रा पग हेठै जीव आवै तो, साधां ने वचावणो कठै ही न चाल्यो। भारी कर्मा लोगां ने भ्रष्ट करण ने ओपिण घोचो कुगुरां घाल्यो ॥ श्रा० ॥३८॥ साधां रो नाम तो अलगो मेलो, श्रावकां री चर्चा मुख लावै। साधु साधुसूं मरता जीव बतावै, ज्यूं श्रावक श्रावक ने जीव बतावै ॥ श्रा० ॥३९॥ सिद्धान्तरा बल बिना बोले अज्ञानी, श्रावकांरे सम्भोग साधां ज्यूं बतायो। ए गालां रा गोला मुख सूं चलावे, ते न्याय सुणज्यो भवियण चित्त लायो ॥ श्रा० ॥ ४० ॥ साधुसूं मरता जीव देखिने, सम्भोगी साधु देखी जो नहीं बतावै। तो अरिहन्त री आज्ञा लोपावै, पाप लागी ने विराधक थावै ॥ श्रा० ॥ ४१ ॥ साधु तो साधु ने जीव बतावै, ते पोता रो पाप टालण रे काजे। श्रावक श्रावक ने जीव नहीं बतावै, तो किसो पाप लागे किसो व्रत भांगे ॥ श्रा० ॥ ४२ ॥ श्रावक श्रावक ने न बतायां पाप लागो कहे, ए भेषधारयां मत काढ्यो कूरो। श्रावकां रे सम्भोग साधां ज्यूं हुवै तो पगपग बंधजाय पाप रो पूरो ॥ श्रा० ॥ ४३ ॥ पाट बाजोटादिक साधु बाहरै लेणो, ठाडे मात्रादिक कारज जावै। त्यारे और साधु त्यांरे भोलावणा देवे, जो ए लेइ न आवे तो प्रायश्चित

आवै ॥ आ० ॥ ४४ ॥ गरढा गिलाण साधु री वैयावच, साधु न करै तो जिन आज्ञा बारै। महा मोहनी कर्म-तणो बन्ध पाड़ै, इहलोक ने परलोक दोनूं बिगारै ॥ आ० ॥ ४५ ॥ आहार पाणी साधु बहरी ने आणे, सम्भोगी साधु ने बांटदेवा री रीतो। आप आण्यो जो अधिक लेवै तो, अदत्त लागे ने जाय प्रतीतो ॥ आ० ॥ ४६ ॥ इत्यादिक साध साधां रे अनेक बोलांरो, सम्भोगी साधांसूं न कियां अटके मोखो। एहिज बोलांरो श्रावक श्रावकांरे, न करै तो मूल न लागे दोषो ॥ आ० ॥ ४७ ॥ श्रावकांरे सम्भोग साधांज्यूं हुवे तो, श्रावक श्रावकां ने पिण इण विध करणो। ए श्रद्धा रो निर्णय न काढे अज्ञानी, त्यां विटल थई लियो लोकां रो शरणो ॥ आ० ॥ ४८ ॥ जो ए श्रावक श्रावकां रो नहीं करै तो, भेषधारयां रे लेखे भागल जाणो। श्रावकां रै सम्भोग साधांज्यूं परूपै, ते पड़ गया मूरख उल्टी ताणो ॥ आ० ॥ ४९ ॥ श्रावकांरे सम्भोग तो श्रावकांसूं छै, वले मिथ्यातासूं राखे मिलापो। त्यांरा संभोग तो अव्रत मे छै, तिणे त्याग कियां सूं टलसी पापो ॥ आ० ॥ ५० ॥ त्यासूं शरीरादिक नो सम्भोग टालि ने, ज्ञाना-दिक गुण रो राखे मिलापो। उपदेश देई निरदावे रहणो, पेलो समभोने टाले तो टलसी पापो ॥ आ० ॥

५१ ॥ लाय लागी जो गृहस्थ देखें, तो तुरत बुझावे छः काय ने मारो। ए सावद्य कर्त्तव्य लोक करै छे, तिण मांही धर्म कहै भांगधारो ॥ आ० ॥ ५२ ॥ कहे अग्नि पाणी छःकाय मुई त्यांरो, थोड़ोसो पाप कहे हुवे कानो। और जीव बच्या त्यांरो धर्म बतावे, लाय बुझावण री करे सानो ॥ आ० ॥ ५३ ॥ ए धर्म ने पाप रो मिश्र परूपै, टोटा बिचे लाभ घणो बतावे। त्यां रे भेषधारयां री प्रतीति आवे, तो लाय बुझावण दौड्या दौड्या जावे ॥ आ० ॥५४॥ एहवी दया बतावे लोकां ने, छःकायारा पीहर नाम धरावे। मिश्र धर्म कहै तेउ काया ने मारयां, पिण प्रश्न पूछे ज्यां रो जाब न आवे ॥ आ० ॥ ५५ ॥ छःकाय जीवां री हिंसा कीधां, और जीव बचे त्यांरो कहै छे धर्मो। ए अज्ञा सुण सुणने बुद्धिवन्ता, खोटा नाणा जिम काढियो भरमो ॥ आ० ॥ ५६ ॥ कोई नित्य नित्य पांच सौ जीवां ने मारे, कोई वांरे कसाई अनारज कर्मी। जो मिश्र धर्म हुवे अग्नि बुझायां, तो इणने भी मारयां हुवे मिश्र धर्मी ॥ आ० ॥ ५७ ॥ लायसूं बलता जीव जाणी ने छःकाय हणी ने लाय बुझाई। जो कसाईसूं मरता जीवां ने देखो, कोई जीव बचावण हणो कसाई ॥ आ० ॥ ५८ ॥ जो लाय बुझायां जीव बचे तो, कसाई ने मारयां बचे घणा

प्राणी। लाय बुझायां कसाई ने मार्यां, दोयां रो लेखो सरीखो जाणो ॥ अ० ॥५९॥ वले सिंह सर्पादिक चीता बघेरा, दुष्टी जीव करै पर घाता। मिश्र धर्म छै लाय बुझायां, तो यांने ही मार्‍यां घणारै साता ॥आ० ॥६०॥

॥ दोहा ॥

जीव हिंसा छै अति बुरी, तिणमें अवगुण अनेक।
दया धर्ममे गुण घणा, ते सुणज्यो आण विवेक ॥१॥

॥ ढाल नवमीं ॥

(ओ भवरत्न चिन्तामणि सरिखो)

दया भगवती जीवां ने सुखदाई, आ मुक्तपुरीनो साईजी। साठ नाम दयारा कह्या जिन, दशमा अङ्गरे मांईजी। दया धर्म श्री जिनजीरी वाणी ॥१॥ पूजनीक नाम दया रो भगवती मङ्गलीक नाम छै नीकोजी। जे भव जीव आया इण शरणै, त्यांने मुक्ति नजीकोजी ॥ दया० ॥२॥ त्रिविधे त्रिविधे छःकाय न हणावी, आ दया कही जिनरायो जी। दया भगवती रा गुण छै अनन्ता, ते पूरा किम कहायोजी ॥ दया० ॥ ३ ॥ त्रिविधे त्रिविधे छःकाय जीवांने, भय न उपजावै तामोजी,। ए अभयदान कह्यो अरिहन्तां, ते पिण दया रो छै नामोजी ॥ दया०

॥ ४ ॥ त्रिविधे त्रिविधे छःकाय मारणा रा, कोई त्याग कारै मन सूंधेजी। आ पूरी दया भगवन्तां भाषी, तिण सूं पाप रा बारणा रून्धेजी ॥ दया० ॥ ५ ॥ कोई त्याग कियां विन हिन्सा टालै, तोही कर्म निर्जरा थावेजी। हिंसा टाल्यां शुभ योग वर्त्तै छै तिहां पुण्य रा ठाट बन्धावेजी ॥ दया० ॥ ६ ॥ इण दयासूं पाप कर्म रुक जावे. वले कर्म हुवै चकचूरोजी। यां दोय गुणां में अनन्त गुण आया. ते पालै छै विरला शूरोजी ॥ दया० ॥ ७ ॥ छःकाय हणे हणावै नाहीं. वले हणतां ने नहीं सरावैजी। इसड़ी दया निरन्तर पालै. त्यांरे तुलै कुण आवैजी ॥ दया० ॥ ८ ॥ आहिंस दया ने महाव्रत पहिलो. तिण में दया दया सर्व आईजी। पूरी दया तो साधुजी पाले, बाकी दया रही नहीं कांईजी ॥ दया० ॥ ९ ॥ आहिंस दया चोखे चित्त पालै, ते केवलियां री छै गाईजी। आहिंस दया सभा में परूपै, त्यांने बीर कह्या न्यायवाईजी। दया० ॥ दया ॥ १० ॥ आहिंस दया केवलियां पाली, मनःपर्यव ने अवधि ज्ञानीजी। मति ज्ञानी ने श्रुत ज्ञानी रे, आहिंस दया मनमानीजी। दया० ॥ ११ ॥ आहिंस दया लब्धिधारयां पाली चौदह पूर्वधर ज्ञानी जी। शङ्का हुवै तो निःशङ्क [illegible], सूत्र में नहीं वात छानीजी ॥ दया० ॥ १२ ॥

देश थकी दया श्रावक पालै, तिण ने पिण साधु बखाणै जी। श्रावक हिंसा करै घर बैठो, तिण में धर्म न जाणैजी ॥ दया० ॥ १३ ॥ प्राण, भूत, जीव ने सत्व, त्यांरी घात न करणी लिगारोजी। आ तीन काल रा तीर्थङ्करांरी बाणी, आचाराङ्ग चौथा अध्ययन मंझारीजी ॥ दया० ॥१४॥ मति हणो हति हणो कह्यो अरिहन्तां, तो जीव हणो किण लेखैजी। अभ्यन्तर आंख हिया री फूटी, ते सूत्र साहमो नहि देखै जी ॥ दया० ॥ १५ ॥ हिंसा धर्म जीवांने दुःखदाई, ते नरकतणी छै साईजी। तीस नाम खोटा खोटा हिंसारा, कह्या दशमां अङ्ग रै मांईजी ॥

हिंसा धर्म कुगुरांरी बाणी ॥ १६ ॥

प्राणघात हिंसा छै खोटी, ते सर्व जीवां ने दुःखदाईजी। जीव हिंसा में अवगुण अनेक छै, ते पूरा किम कहाईजी ॥ हिंसा० ॥ १७ ॥ कोई कहै म्हे हिंसा किया में, जाणाछां पाप एकान्तो जी। पिण हिंसा किया विना धर्म न हुवै, म्हे किण विध पूरां मनखन्तोजी ॥ हिंसा० ॥ १८ ॥ कोई कहै म्हे हणां एकेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय जीवांरे तांईजी। एकेन्द्रिय मार पंचेन्द्रिय, पोष्यां म्हाने धर्म घणो तिण मांईजी ॥ हिंसा० ॥ १९ ॥ कहै एकेन्द्रिय सूं पंचेन्द्रियरा, मोटा घणा पुण्य भारीजी। तिणसूं

एकेन्द्रिय मार पचेन्द्रिय पोष्यां म्हाने पाप न लागे लिगारोजी ॥ हिंसा० ॥ २० ॥ कोई इसड़ो धर्म धारीने बैठा. ते तो कुगुरां तणो सिखायोजी। निःशङ्क थका छःकायां ने मारे, वलि मन मांहीं हर्षित थायोजी॥ हिंसा० ॥ २१ ॥ कोई पांच स्थावर ने सहल गिणी ने, त्यां ने मारयां न जाणे पापो जी। तिणसूं त्यांने हणतां शङ्क न आणे. ते तो कुगुरां तणो प्रतापोजी ॥ हिंसा०॥ २२ ॥ पांच स्थावर रा आरम्भ सेती, दुर्गति दोष वधारेजी। कह्यो दशवैकालिक छठे अध्ययने, ते बुद्धिवन्त किण विध मारेजी ॥ हिंसा० ॥ २३ ॥ छःकाय जीवां ने जीवसं मारी ने, सगा सयणा न्यात जिमावेजी। ए प्रत्यक्ष छै सावद्य संसारनो कामो, तिण में धर्म बतावेजी ॥ हिंसा० ॥ २४ ॥ जीवां ने मार जीवां ने पोषे, ते तो मारग संसार नो जाणोजी। तिण मांहो साधु धर्म बतावे, ते पूरा मूढ़ अयाणोजी ॥हिंसा० ॥ २५ ॥ मूला, गाजर, शकरकन्द कान्दा इत्यादिक नोलोती वनस्कायजी। त्यांरो दान दियां में पुण्य परूपे, ते डूबै छै बिना विवेका जी ॥ हिंसा० ॥ २६ ॥ जीव मुवायां में पुण्य परूपे, कोई मिश्र कहे छ ऊंठोजी। ए दोनूं रा [illegible] धर्म्म अनार्य, ते डूबे छै कर कर कूडोजी॥ हिंसा० ॥२७॥ कोई जीव खवायां में पुण्य परूपे, त्यांरा

जीभ वहै तरवारोजी। वली पहिरया सांग साधां रो राखै, धिक् त्यांरो जमवारोजी ॥ हिन्सा० ॥ २८ ॥ केई साधु रो विरद धरावै लोकां में, वलि वाजै भगवन्त रा भक्ताजी। पिण हिन्सा मांही धर्म परूपे, त्यांरे तीन व्रत भागै लगताजो ॥ हिन्सा० ॥ २९ ॥ छः काय मार्‌यां में धर्म परूपै, त्यांने हिन्सा छः काया री लागैजी। तीन काल री हिन्सा अनुमोदी, तिण सूं पहिलो महाव्रत भागैजी ॥ हिन्सा० ॥ ३० ॥ हिन्सा में धर्म तो जिन कह्यो नहीं, हिन्सा से धर्म कह्यां झूठ लागैजी। इसड़ो झूठ निरन्तर बोलै, त्यांरो बीजो हो महाव्रत भागैजी ॥ हिन्सा० ॥ ३१ ॥ जीवां ने मार्‌यां धर्म परूपै, त्यां जीवां रो अदत्त लागैजी। वलि आज्ञा लोपी श्री अरिहन्त नी, तिण सूं तीजो महाव्रत भागैजी ॥ हिसा० ॥ ३२ ॥ छः काय मार्‌यां मे धर्म बतावै, त्यांरी श्रद्धा घणी छै ऊंधीजी। ते मोह मिथ्यात मे जड़िया अज्ञानी, त्यांने श्रद्धा न सूझै सूंधीजी ॥ हिन्सा० ॥३३॥ त्यांने पूछ्यां कहै म्हे दया धर्मी छां, पिण निश्चय छः काय नां घातीजी। त्यां हिन्सा धर्मियां ने साधु श्रद्धै, ते पिण निश्चय मिथ्यातीजी ॥ हिन्सा० ॥ ३४ ॥ कोई कहै साधु जीव बचावै, राखै रखावै भलो जाणैजी। ते जिन मारग ना अजाण अज्ञानी, इसड़ी चर्चा आणै

जी ॥ हिन्सा० ॥३५॥ साधु तो जीवां ने क्यां ने बचावे, ते तो पच रह्या निज कर्मोजी। कोई साधु री संगति आय करे तो, सिखाय देवे जिन धर्मोजी ॥ हिन्सा० ॥ ३६ ॥ छःकाय रा शस्त्र जीव अब्रती, त्यांरो जीवणो मरणो न चावेजी। त्यांरो जीवणो मरणो साधु चावे तो, राग द्वेष वेहूं आवेजी ॥ हिंसा० ॥ ३७॥ छःकाय रा शस्त्र जीव अब्रती, त्यांरो जीवणो मरणो छे खोटोजी। त्यांने हणवारा त्याग किया त्यांरे, दया तणो गुण मोटोजी ॥ हिंसा० ॥ ३८ ॥ असंयम जीवितव्य ने बाल मरण यांरी, आशा वांछा नहीं करणीजी। पण्डित मरण ने संयम जीवितव्यनी आशा वांछा मन धरणीजी॥ हिंसा० ॥ ३९ ॥ छःकाय रा शस्त्र जीव अब्रती, त्यांरो असंयम जीवितव्य जाणोजी। सर्व सावद्य रा त्याग किया त्यांरो, संयम जीवितव्य एह पिछाणोजी॥ हिंसा० ॥ ४० ॥ त्रिविधे त्रिविधे ताहि छःकाय री साधु, त्यांरी दया निरन्तर राखेजी। ते छःकाय रा पीहर छःकाय ने मारयां, धर्म किस विध भाषेजी ॥ हिंसा ॥४१॥ छःकाय रा शस्त्र जणा संसारी, त्यांरे वीच न पड़णो जायोजी। वीच पड्यां व्रत भांगे साधुरा, ते विकल्पां ने खबर न कांईजी ॥ हिंसा० ॥ ४२ ॥ कोई कहै साधु ने वीच न पड़णो, कोई कहै वीच पड़णोजी। साधु ने समभाव

रहणो. ते विकलां ने नही निरणोजी ॥ हिंसा० ॥ ४३ ॥ साधु ने बीच पड़णो त्रिविधे निषेध्यो, ते हणतां बीच पड़े नहीं आयोजी । पिण गृहस्थ ने धर्म कहै बीच पड़ियां, तो घर रो धर्म कांई गंवायोजी ॥ हिंसा० ॥ ४४ ॥ हणै जीतबने प्रशंसा हेते, हणै मान पूजा रे कामोजी । बले जन्म मरण मुकावण हणै छै, हणै दुःख गमावण कामोजी ॥ हिंसा० ॥४५॥ ए छःकारण छःकाय ने मारै तो, अहित रो कारण थायोजी । जन्म मरण मुकावण हणै तो, समकित रत्न गमायोजी ॥ हिंसा० ॥ ४६ ॥ ये छः कारण छःकाय ने मारयां, आठ कर्मा री गांठ बंधायोजी । मोहनी मार बधै घणी निश्चय. बली पड़े नरक में जायोजी ॥ हिंसा० ॥ ४७ ॥ अर्थ अनर्थ हिंसा कीधां, अहित रो कारण तासोजी । धर्म रे कारण हिंसा कीधां, बोध बीजरो नाशोजी ॥ हिंसा० ॥ ४८ ॥ ये छः कारण छः कायने मारै, ते तो दुःख पामै इण संसारोजी । ए तो आचाराङ्ग पहले अध्ययने, छः उद्देशा मे कह्यो विस्तारोजी ॥ हिंसा० ॥ ४८ ॥ कोई श्रमण माहण आचार्यपण, करै हिंसा धर्मनो थापोजी । कहै प्राणभूत जीव ने सत्व, धर्म हेतु हण्यां नही पापो जी ॥ हिंसा० ॥५०॥ एहवी ऊंधी परूपणा करै अनार्य, त्यांने आर्य बोल्या धर प्रेमोजी । थे भूंडो दीठो भूंडो

साम्भलियो, भूगडो मान्यो भूगडो जाण्यो एमोजी॥ हिंसा० ॥ ५१ ॥ जीवां ने मारयां धर्म परूपे, ए तो अनार्यनी वाणीजी। ते तो भारी कर्मा मूढ मिथ्याती, त्यांरी सुधबुध नहीं ठिकाणोजी ॥ हिन्सा० ॥ ५२ ॥ तिण हिंसा धर्मियांनै आर्य पूछ्यो, थानै मारयां धर्म के पापोजी। तब तो कहै म्हानै मारयां पाप एकान्त है, साच बोल कीधी शुद्ध थापोजी ॥ हिंसा० ॥ ५३ ॥ तब आर्य कहे थांनै मारयां पाप छे, तो सर्व जीवांने इम जाणोजी। औरांनै मारयां धर्म परूपो, थे बूडो कांइ कर ताणोजी ॥ हिंसा० ॥ ५४ ॥ इम हिंसा धर्मी ... त्यांने, कीधा जिन मार्ग सूं न्यारोजी। जोवो आचारांग रै चौथे अध्ययने, बीजे उद्देशे विस्तारोजी ॥ हिंसा० ॥ ५५ ॥ औरांने मारयां धर्म परूपे, आपनै मारयां कहै पापोजी। आ श्रद्धा विकलां री ऊंधो, इण में कर रह्या मूढ विलापोजी ॥ हिंसा० ॥ ५६ ॥ अर्थ अनर्थ धर्म काज. जाव हणे छः कायोजी। तिणनें मन्द बुद्धि कहै ठाणांग अङ्ग. पहिला अध्ययनरे मांयोजी ॥ हिंसा ॥५७॥ छः काय जीवां रा घमसाण करनें, श्रावकने जीमावे जो उणने मन्दबुद्धि कह दिया भगवन्त, तिण में धर्म किम किम थावैजी ॥ हिंसा० ॥ ५८ ॥ कोई तो जीवांने मार मरावे. कोई मोह ममाय आणाजी। तिण मांही एकान्

धर्म बतावे. ते अनार्य री भाषाजी ॥ हिंसा० ॥ ५६ ॥ केई जीव माऱ्यां मांहे धर्म कहे छे, ते पूरा अज्ञानी ऊंधाजी । त्यांने जाण पुरुष मिलें जिन मारग रो, ते किण विध बोलै सूंधाजी ॥ हिंसा० ॥ ६० ॥ लोहनो गोलो अग्नि तपाय, ते अग्निवर्ण कर तातोजी । ते पकड़ सडासो लायो तिण पासे, कहे वल तो गोलो झेलो हातोजी ॥ हिसा० ॥ ६१ ॥ जब पाखण्डियां हाथ पाछो खैंच्यो, जब जाण पुरुष कहे त्यांनेजी । थे हाथ पाछो खेंचो किण कारण, थांरी श्रद्धा मत राखो छानेजी ॥ हिंसा० ॥ ६२ ॥ जब कहे गोलो म्हे हाथ मे ल्यांतो, म्हारो हाथ बलै लागै तापोजी । तो थांरो हाथ बाले तिण ने पापके धर्म, जब कहे उणने लागे पापोजी ॥ हिंसा ॥६३॥ थांराहाथ बाले तिणनै पाप हुवे तो, औरांने माऱ्यां धर्म नाहोजी। थे सर्व जीव सरीखा जाणो, थे सोच देखो मन मांहोंजी ॥ हिंसा० ॥ ६४ ॥ जे जीव माऱ्यां मे धर्म कहे छे, रुले काल अनन्तोजी । सूयगडाअङ्ग अध्ययन अठारह मे, भाष गया भगवन्तोजी ॥ हिन्सा० ॥ ६५ ॥ थानक करावै छः काय हणमे, करै अनन्त जीवां री घातोजी । अहित नो कारण निश्चय हुयो छे, धर्म जाणै तो आवै मिथ्यातोजी ॥ हिंसा० ॥ ६६ ॥ जब कहे म्हे थानक करावां तिण मे, जाणाछां एकान्त पापोजी ।

तिण कहिवाने पाप कह्यो झूठ बोलै, सदा गोप विगोवी आपोजी ॥ हिन्सा० ॥ ६७ ॥ कोई मनुष्य आलसियो छै तिण काले, धन उदके घानक काजोजी। जो थो पाप जाणै परभव जातो, इसड़ो कांई कियो अकाजोजी ॥ हिन्सा० ॥ ६८ ॥ घर रो धन देई जीव मराया, तै भार्य न दीसै कांईजी। अनर्थ पण जाण्यो नहीं दीसै, धर्म जाण्यो दीसै तिण मांईजी ॥ हिन्सा० ॥ ६९ ॥ हिंसारी करणी में दया नहीं छै, दया री करणी में हिन्सा नाहीं जी। दया ने हिन्सारी करणी न्यारी छै ज्यूं तावड़ो ने छांहोजी ॥ हिन्सा ॥ ७० ॥ और वस्तु में भेल हुवे पिण, दया में नहीं हिन्सा रो भेलोजी। ज्यूं पूर्व ने पश्चिम रो मारग, किण विध खावे मेलोजी ॥ हिन्सा० ॥ ७१ ॥ कोई दया ने हिन्सारी मिश्र करणी कहै, ते कूड़ा कुहेतु लगावेजी। मिश्र थापण ने सूठ मिथ्याती, भोला लोकां ने भरमावेजी ॥ हिन्सा० ॥७२ जो हिन्सा कियां मिश्र हुवे तो, मिश्र हुवे पाप अठारे जी। एक फिरयां अठारह फिरे छै, बुद्धिवन्त करज्यो विचारोजी ॥ हिन्सा० ॥ ७३ ॥ जिन मारग री नींव दया ऊपर, खोजी हुवे ते पावेजी। जो हिन्सा कियां धर्म हुवे तो, जल मथियां घी आवेजी ॥ हिन्सा० ॥७४॥ उगनीस अठारह वर्ष चंयालै, फागुण सुदी नवमी

रविवारोजी। जोड़ कीधी दया धर्म दीपावण, वगड़ी शहर मझारोजी ॥ हिन्सा० ॥ ७५ ॥

॥ दोहा ॥

नमो वीर शासण धणी, गणधर गौतम स्वाम।
त्यां मोटा पुरुषां रा नाम थी, सीझै आत्म काम ॥ १ ॥
त्यां घर छोड़ी सयम लियो, भगवन्त श्री वर्द्धमान।
बारह वर्ष ने तेरह पख, छद्मस्थ रह्या भगवान् ॥ २ ॥
त्यां गोशाला ने चेलो कियो, ते निश्चय अयोग्य साचात।
सराग भाव आयो तेह थी, ते पिण छद्मस्थ पणां री वात ॥३
तीर्थङ्कर छद्मस्थ थकां, चेलो न करै दीचा देवे नाहिं।
धर्मकथा पिण कहै नहीं, जोवो सूत्र रे मांहि ॥ ४ ॥
बारह वर्ष तेरह पच मझे, दीचा दे चेलो न कस्यो कोय।
एक गोशाला अयोग्यने चेलो कियो,
निश्चय होणहार टलै नहिं कोय ॥ ५ ॥
तीर्थङ्कर साथे दीचा लिये, तिणने दीचा दे जिणराय।
पछै केवली हुवे नहीं त्यां लगे, दीचा न देवे ताय ॥६॥
गोशाला ने बचावियो, छद्मस्थ पणा रो स्वभाव।
मोह राग आयो तिण ऊपरै, ते विकल न जाणै न्याय ॥७॥
गोशाला ने वचावियो, तिण मे मूर्ख थापे धर्म।
सूने चित्त बकवो करै, ते भूला अज्ञानी भ्रम ॥८॥

कहै भगवन्त दीक्षा लियां पछै न कियो किञ्चित पाप प्रमाद
जाणता ने अजाणता कहै, दोष न सेव्यो जिन आप ॥६॥
इम कहि कहि भोला लोकां भणी, नाखै छै फन्द मांय।
तिणरो न्याय निर्णय यथातथ्य कहूं, ते सुणज्यो चित्तलाय

॥ ढाल दशमी ॥

आयुष टूटो को सान्धो को नहीं रे (एदेशी)

गोशाला ने बचायो वीर सराग थी रे, तिण मांहि धर्म नहीं छै लिगार रे। आ तो निश्चय होणहार टले नहीं रे, ते भोला न जाणे मूल विचार रे ॥ गो० ॥१॥ कुपात्र ने बचायो वीर सराग थी रे, तिण में म जाणो कोई कूड़ रे। शङ्का हुवे तो भगवती रो अर्थ देखने रे, खोटी श्रद्धा ने करज्यो दूर रे ॥ गो० ॥ २ ॥ भारी कर्मा जीवां ने समझ पड़े नहीं रे, ते तो कुगुरां रे वदले बोले कूड़ रे। ताणा ताण में जासी ताणिया रे, वहतो अगाध नदी रे पूर रे ॥ गो० ॥ ३ ॥ गोशालो अधर्मी अविनीतड़ो रे, भारी कर्मी कुपात्र जीव रे। बले दावानल छै जिन धर्मनो रे, दुष्टी घणो छै अतीव रे। गो० ॥ ४ ॥ भगवन्त ने झूठा पाड़ण कारणे रे, तिण उन्माड़ियो पापी जाण रे। मिथ्यात्व पड़ि वज्जियो अभागियो रे, त्यांरे कूल न राखी पापी काण रे। गो० ॥ ५ ॥ जगत गुरू भगवन्ता चोरां थकी रे, गोशाले

अधिको चोर निःशंक रे। वली कूड़ कपट तणो तो कोथलो रे, तिण रो करड़ो मिथ्यात तणो छै बंक रे॥ गो० ॥ ६ ॥ तिण ने वीर वचायो बलतो जाणने रे, लब्धि फोरी शीतल लेश्या मूक रे। राग आण्यो तिण पापी ऊपरै रे, छद्मस्थ गया तिण काले चूक रे ॥गो० ॥ ७ ॥ कोई भेषधारी भागल इसड़ो कहै रे, गोशालेने वचायां हुवो धर्म रे। त्यां धर्म जिनेश्वर नो नहिं ओलख्यो रे, ते भूला अज्ञानी भ्रम रे॥ गो० ॥ ८ ॥ वली भगवन्त तो घर छोड्यां पछै रे, दोष न सेव्यो मूल लिगार रे। प्रमाद किञ्चित् मात्र सेव्यो नहो रे, वले आस्रव न सेव्यो किण वार रे ॥ गो० ॥ ९ ॥ इम कहि कहि सचवाया हुवै रे, पण एकान्त बोलै मृषावाय रे। त्यां धर्म जिनेश्वरनो नहिं ओलख्यो रे, फूटा ढोल ज्यूं बोलै बिरुआ वाय रे ॥ गो० ॥ १० ॥ ते झूठा बोलै छै सुधबुध बाहिरा रे, त्यांरी श्रद्धारी त्यांने खबर न काय रे। त्यां विकलां री श्रद्धा प्रगट करूं रे, ते भवियण साम्भलज्यो चित्त लाय रे ॥ गो० ॥ ११ ॥ भगवन्त आहार कियो छै जाणने रे, तिण में कहै छै प्रमादास्रव पाप रे। वली निद्रा लीधा मे कहै पाप छै रे, ते निद्रा पण लीधी भगवन्त आप रे ॥गो०॥१२॥ प्रमाद न सेव्यो कहै भगवानने रे, वली कहता जावे पापी प्रमाद रे।

न्याय निर्णय विकलां रे छै नहीं रे, यूंही करै कूड़ो बकवाद रे ॥ गो० ॥ १३ ॥ मोह कर्म उदय सावद्य सेविया रे, छद्मस्थ थकां भगवान रे। अजाणपणो रे विन उपयोग छै रे, ते बुद्धिवन्त सुणो सुरत दे कान रे ॥ गो० ॥ १४ ॥ दश स्वप्ना पिण भगवन्त देखिया रे, दश स्वप्नां रो पाप लागो छै आण रे। दश स्वप्नां रो पाप जुओ जुओ रे, शंका म करज्यो चतुर सुजाण रे ॥ गो० ॥ १५ ॥ कोई कहै भगवन्त घर छोड्यां पछै रे, पाप रो अंश न सेव्यो मूल रे। जो वे स्वप्न देख्यां मे पाप सोरे, त्यां रे लेखे त्यांरी श्रद्धा में धूल रे ॥ गो० ॥१६ छद्मस्थ थका पड़िकमणो करै रे, ते पाप लागो जाणे ताम रे। जो पाप लाग्यो न जाणे सर्वथा रे, तो पड़िकमणो क्यां ने करै बेकाम रे ॥ गो० ॥ १७ ॥ त्यांरे खोटी श्रद्धा उत्पती जाणने रे, झूठ बोलै अज्ञानी आल पंपाल रे। तीर्थङ्कर तो पड़िकमणो करै नहीं रे, कोई ... पिण कहै कूड़ा बाल रे ॥ गो० ॥ १८ ॥ सात प्रकारे छद्मस्थ जाणिये रे, कह्यो छै ठाणाङ्ग सूत्र मांय रे हिंसा लागै छै प्राणी जीवरी रे, वली लागै मृषा अदत्त ताय रे ॥ गो० ॥१९॥ शब्दादिक आस्वादे करै रे, पूजा सत्कार वांछै छै ताय रे। कहे ... सावद्य भाखै रे, वागरे जैसी करणी आवै नांय रे

गो० ॥ २० ॥ ये सातूं ही थानक सावद्य रा कह्या रे, छद्मस्थ सेवै छै किणही वार रे। त्यांरो पिण प्रायश्चित यथा योग्य छै रे, जाण अजाण सेव्यां रो करै विचार रे ॥ गो० ॥ २१ ॥ ये सातूं ही बोल न सेवे केवली रे, छद्‌मस्थ पिण निरन्तर सेवै नांय रे। सेवै तो मोह कर्म उदय हुवां रे, शङ्का हुवे तो जोवो सूत्र मांय रे ॥ गो० ॥ २२ ॥ भगवन्त ने पिण केवल ज्ञान उपनो रे, पहिले तो छद्‌मस्थ होता ताम रे। पड़िक्कमणो पिण जद करताथा पापनो रे, त्यांरै उपयोग न रहतो एकण ठाम रे ॥ गो० ॥ २३ ॥ गोशाला ने वीर बचायो जिण दिने रे छद्‌मस्थ होता जिण दिन भगवान रे। मोह राग आयो भगवन्तने जिण दिने रे, निश्चय होणहार टलै नहीं आसान रे ॥ गो० ॥२४ ॥ छद्‌मस्थ थकां पिण श्रीभगवन्तरै रे, समय समय लागता कर्म सात रे। मोह कर्म अवश्य उदय हुवो रे, कुपात्रने बचाय लियो साक्षात रे ॥ गो० ॥ २५ ॥ गोशालो दावानल छै श्रीजिनधर्मरो रे ते दुष्टां में दुष्ट घणो अतीव रे। वले कूड़कपटनो कोथलो तेहनेरे, बचायां रो फल सुणो भव जीव रे ॥ गो० ॥ २६ ॥ गोशालो तेजुलेश्या मेलने रे, दोय साधां री कीधी घात रे। ऊंधो अंवलो बोल्यो भगवानने रे, वीर सूं पड़िवज्जियो मिथ्यात रे।

कुपात ने वचायां धर्म किहां थकी रे ॥ २७॥ वली लेश्या मेली छे पापी वीरने रे, त्यांरो पिण एकान्त करवा घात रे। जाण्यो जमाऊ शासन मांहीं रे, एहवो गोशालो दुष्ट कुपात रे ॥ कु० ॥ २८ ॥ तिण रो प्रश्न पूछ्यां भगवन्त कह्यो रे, सांगणी मांहो तिण बताया सात रे। जब वीरने झूठा घालण पापिये रे, तिण उखाड़ने कीधी घात रे ॥ कु० ॥ २९ ॥ तेजूलेश्या सिखाई गोशाला भणी रे, इण लेश्याथी कीधी साधां री घात रे। वले लोहीठाण कियो भगवन्तने रे, इसड़ो काम कियो पापी साक्षात रे ॥ कु० ॥ ३० ॥ गोशाले पापी ने वीर वचावियो रे, तो वधियो भरतमें घणो मिथ्यात रे। घणा जीवां ने पापी बोड़या रे, ऊंधी श्रद्धा छिये मे घात रे ॥ कु० ॥ ३१ ॥ कूड़कपट कारे पापिये रे, झूठा रो शासन दियो थाप रे। घणाहूं तीर्थङ्कर थाप्यो लोक में रे, वीरनो शासन दियो उथाप रे ॥ कु० ॥ ३२ ॥ गोशाला ने वीर वचायो ताठा पा[illegible] रे, घणा जीवांरे हुवो बिगाड़ रे। ओ पापी [illegible] [illegible] अनेको रे, इण गुण रो न कीधो पापी निगार रे ॥ कु० ॥ ३३ ॥ गोशाला पापीड़ो वचियां पछे रे, [illegible] [illegible] कार्यिं अनेक अकाज रे। तिण दुष्टी ने वचा[illegible] [illegible] [illegible] रे, धिकलां ने दूल न आवे लाज रे

कु० ॥ ३४ ॥ गोशाले ने बचायां धर्म कहै तिणी रे, गोशालारा छेड़ायत जाण रे। त्यां धर्म न जाणयो श्रीजिनराजनो रे, यूंही बूड़ै अज्ञानी कर कर ताण रे ॥ कु० ॥ ३५ ॥ जो धर्म होसी गोशालै ने बचावियां रे, तो छ: ही काय बचायां होसी धर्म रे। तो वे जीव बचायां धर्म गिणै नहीं रे, तो विकलां री श्रद्धा रो निकल्यो भ्रम रे ॥ कु० ॥ ३६ ॥ गोशालेने बीर बचायो तिण विधेरे, श्रावक ने तिण विध बचावै नांय रे। कहै छै तिणहिज विध करै नहीं रे, तो धूल छै त्यांरी श्रद्धा मांय रे ॥ कु० ॥३७॥ पेट दुखै छै सौ श्रावकां तणो रे, जुदा हुवै छै जीव ने काय रे। साध पधास्या छै तिण अवसरै रे, त्यांरे हाथ फेरयां साता थाय रे ॥ कु० ॥ ३८ ॥ लब्धिधारी तो साधु पधारया देखने रे, गृहस्थ बोल्या छै इम बाय रे। हाथ फेरो त्यांरा पेट ऊपरै रे, नही फेरयां तो श्रावक जीवां जाय रे ॥ कु० ॥ ३९ ॥ जब कहै म्हाने तो हाथ न फेरणो रे, यं मरै भावै दुखिया घणा हुवै ताम रे। मरणो जीवणो मूल न वंछणो रे, म्हारे कांई गृहस्थसूं काम रे ॥ कु० ॥ ४० ॥ गोशाला दुष्टो ने वीर बचावियो रे, इण मांही कहै छै निश्चिवल धर्म रे। ते श्रावक मरतां ने नवि बचावियांरे, यांरो श्रद्धा रो त्यांहिज काढ्यो भ्रम रे ॥ कु० ॥ ४१ ॥

श्रावक बचायां धर्म गिणै नहीं रे, गोशालो बचायां गिणै धर्म रे। ते विवेक विकल छै सुधबुध बाहिरा रे, ऊंधी श्रद्धासूं बंधै पाप कर्म रे ॥ कु० ॥४२॥ गोशाला पापी दुष्टी रे कारणै रे, लब्धि फोरवी श्रीजगन्नाथ रे। तो श्रावक मरता ने देखने रे, थे कांई न फेरो त्यांरे हाथ रे ॥ कु० ॥ ४३ ॥ धर्म कहै गोशाला ने बचावियां रे, तो पोते छोड़ी कांई धर्मरी रीत रे। सो श्रावक मरतां ने बचावे नहीं रे, त्यां विकलां री विकल मांने प्रतीत रे ॥ कु० ॥ ४४ ॥ गोशाला दुष्टी ने वीर बचावियो रे, तिण मांहि धर्म कहै साचात रे। सो श्रावक मरतां ने नहीं बचावियां रे, त्यां विकला री बिगड़ी श्रद्धा बात रे ॥ कु० ॥ ४५ ॥ श्रावक आखड़ ने मरतां सुन रे, जिण ने पड़तो झेलै नांय रे। गोशालो बचायां कहै धर्म छै रे, ओ पिण अन्धारो त्यांरे मांह रे ॥ कु० ॥ ४६ ॥ ज्ञान दर्शन ने देश चारित्र श्रावक मझे रे, गोशालो तो एकान्त अधर्मी जाण रे। तिणने बचायां धर्म किहांथकी रे, तिणरो न्याय न जाणै मूढ अयाण रे ॥ कु० ॥४७॥ गोशाला ने बचायां रो धर्म छे रे श्रावक बचायां कहै पाप रे। एहवो अन्धारो छै विकलां तणां रे, [illegible] श्रद्धा कर राखी छै थाप रे ॥ कु० ॥ ४८ ॥ [illegible] ने [illegible] पत्र मझे रे, छद्मस्थ रक्षा श्रीभग-

वान रे। तिण मे एक गोशालाने बचावियो रे, किणने न बचायो श्रीवर्द्धमान रे। कु० ॥ ४९ ॥ गोशाला दुष्टी ने बचावियां रे, जो धर्म कठही जाणे स्वामरे। तो दोनूं ही साध बचावत आपरा रे, वले रात दिन करता ओहिज काम रे। कु० ॥ ५० ॥ गोशाले दुष्टीने बचावियांरे, तिण मांहो धर्म जाणे जिनराय रे। दोय साध मरता न राख्या आपरा रे, ओ पिण किण विध मिलसी न्याय रे। कु० ॥ ५१ ॥ अकाले जगतने मरता देखियारे, पिण आडा नहो दीधा भगवन हाथ रे। जो धर्म हुवे तो भगवन्त आघो न काढतारे, तरण-तारण जगन्नाथरे। कु० ॥५२॥ अनन्त चौबीसो तो आगै हुई रे, हिवड़ां तो ऋषभादिक चौवीस रे। त्यां तारा भव जीवांने समझायनैरे, पिण मरता न राख्या श्रीजगदीश रे। कु० ॥ ५३ ॥ एक गोशालो वीर बचावियोरे, ते तो निश्चय ही होणहार रे। मोह राग आयो भगवानगैरे, तिणरो न्याय न जाणे मूढ़ गिंवार रे। कु० ॥ ५४ ॥ संवत् अठारह तेपने समय रे, आषाढ़ वदी इग्यारस मंगलवार रे। गोशाले पापीने ओलखायवारे, जोड़ कोधी छै मांढा गांव मझार रे। कु० ॥ ५५ ॥

॥ अन्तर ढाल ॥

(समझू नर विरला—देशी)

कोई लोग मिथ्याती त्यांने नहीं ज्ञान, वली पूरो नहीं विज्ञान रे। समझू नर विरला। (आंकड़ी)॥ आज दोय तीर्थङ्कर रै झगड़ो लागो, ते तो सावत्थी नगरी रै बागो रे। स० ॥ १ ॥ ये दोनूं माहोंमाहीं वाद में बोले, एक एकरा पड़दा खोले रे। स० ॥ वीर कहै म्हारो चेलो गोशालो, मोसूं मतकर झूठो झकालो रे। स० ॥ २ ॥ गोशालो कहै हूं थारो चेलो नाहीं, तैं कूड़ो कयो लोकां मांही रे। स० ॥ मैं तो साधपणो थां आगे नहीं लीधो, मैं तो गुरु तोने कदेय न कीधो रे। स० ॥ ३ ॥ वीर कहै गोशालो तीर्थङ्कर नाहीं, तीर्थङ्करना गुण छे सो मांहीरे। स० ॥ गोशालो कहै हूं तीर्थङ्कर शूरो, ओतो काश्यप प्रत्यक्ष कूड़ो रे। स० ॥ ४ ॥ वारने सन्मुख कह्यो गोशालो, तूं तो सो पछिनी करमो कालो रे। स० ॥ जब वीर कहै सुण रे गोशालो, करमां तूं सो पछिजी कालो रे। स० ॥ ५ ॥ आप आप तणा मत दोनूं थापे, एक एक ने झूठ्या उथापे रे। स० ॥ यामें कुण साचो कुण मूरखाई किई करै ज्यांने तो खबर न कांई रे। स० ॥

६ ॥ यांमे कोई कहे गोशालोजी साचा, यांमे किण विध जाणां काचा रे ॥ स० ॥ यांमे उघाड़ी दीसै करामातो, तुरत कीधी वे साधां री घातो रे ॥ स० ॥ ७ ॥ इण देखतां वे इण रा बाल्या दोय चेला, इण सूं पाछा न हुआ हेला रे ॥ स० ॥ इण ने खोटो कहतो जब बोलतो सेंठो, पछै अण बोल्यो कांई बैठो रे ॥ स० ॥ ८ ॥ गोशालोजी बोलै गुञ्जार करतो, वीर पाछो बोलै सोई डरतोरे ॥ स० ॥ गोशालोजी सिंहतणी पर गुंज्या, वीरना साधु सगला धूज्या रे ॥ स० ॥ ६ ॥ वीर री तो लोकां देख लीधी सिद्धाई, इण में कला न दीखै कांई रे ॥ स० ॥ जो सिद्धाई होवे तो देखावता याने, जब ये पिण ऊभा रहता क्यांनै रे ॥ स० ॥ ओ तो इण ऊपर चलायने आयो, इण कोठग बागरै मांयो रे ॥ स० ॥ ओ शूरपणो तो दीसै इण मांई, इण में कमी न दीखै कांई रे ॥ स० ॥ ११ ॥ अब पिण लोकां में हूंतो इसड़ो अन्धारो ते विकलां ने नहीं विचारो रे ॥ स० ॥ ओ गोशालो पाखण्डी प्रत्यक्ष पापी, तिण ने दियो तीर्थंकर थापी रे ॥ स० ॥ १२ ॥ कोई चतुर विचक्षण था तिण कालो, त्यां खोटो जाण्यो गोशालो रे ॥ स० ॥ ओ गोशालो कुपात्र मूढ मिथ्याती, तिण कीधी साधां री घाती रे ॥ स० ॥ १३ ॥ क्षमा शूरा अरिहन्त भगवन्त,

त्यांरे ज्ञान तणो नहीं अन्त रे ॥ स० ॥ ज्यांरा कोड़ जिह्वा कर नित्य गुण गावे, त्यांरो पार कदे नहीं आवे रे ॥ स० ॥ १४ ॥ यां लखणां कर तीर्थङ्कर पिछाणो, ते तो भगवन्त महावीर जाणो रे ॥ स० ॥ ये तो अतिशय गुणे करी पूरा, यांने कदेय म जाणो कूड़ा रे ॥ स० ॥ १५ ॥ केई तो भगवन्त ने जिण जाणे, ते तो एकान्त त्यांने वखाणे रे ॥ स० ॥ केई अज्ञानी गोशाले रो ताणे, ते तो जिन गुण तुल न जाणे रे ॥ स० ॥१६॥ केई कहे दोनूं ही साचा, आपां थी दोनूं ही आछा रे ॥ स० ॥ आपां ने तो यांरे झगड़े में न पड़णो, सगलांने नमस्कार करणो रे ॥ स० ॥ १७ ॥ केई कहे दोनूं ही कूड़ा ने कर रह्या फेल फितूर रे ॥ स० ॥ आप आप तणा मत थापन काजे, तिणसूं झगड़ा करता नहीं लाजे रे ॥ स० ॥ १८ ॥ ओ तो पेट भरण रो करे छे उपाय, लोकां ने घाले छे फन्द मांय रे ॥ स० ॥ बुध शिव केई बोले अज्ञानी, ते तो आपा काढे मन-माने रे ॥ स० ॥ १९ ॥ झगड़ा अन्यायी हुआ तो तिण काले, अशुभ उदय आयो न सम्भाले रे ॥ स० ॥ तीर्थङ्कर थकां हुआ झगड़ा बेहदा, ते तो अनादि काल रा ठेहरा रे ॥ स० ॥ २० ॥ इम भारमल उत्तम नर नारी, अन्तर मांही करज्यो विचारी रे ॥ स० ॥

पक्षपात किण री मूल नहीं कीजै, साचो मारग ओलख लीजे रे ॥ स० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

दोय उपकार जिन भाषिया, त्यांरो बुद्धिवन्त करो विचार ।
तिणमें एक उपकार छै मोक्षरो, बीजो संसारनो उपकार ॥
उपकार करै कोई मोक्षरो, तिणरी आज्ञा दे आप ।
उपकार करै संसार नो, तिणमें आप रहे चुपचाप ॥२॥
उपकार करै कोई मोक्षरो, कुण कुण ससारनो उपकार ।
त्यांरा भाव भेद प्रगट करू', ते सुणज्यो विस्तार ॥ ३ ॥

॥ ढाल ग्यारहवीं ॥

(आ अनुकम्पा जिन आज्ञा में—पदेशी)

ज्ञान दर्शन चारित्र ने वली तप, यां च्यारां री कोई करै उपकारो। तिण ने निश्चय ही निर्जरा धर्म काह्यो जिन, वली जिन आज्ञा छै श्रीकारो ॥ ओ तो उपकार निश्चय ही मुगत रो ॥ १ ॥ ॥ आंकड़ी ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र ने तप, यां च्यारां बिना कोई करै उपकार। तिण मै निश्चय ही धर्म नही जिन भाख्यो, वले जिन आज्ञा नहीं छै लिगार॥ ओ उपकार संसार तणो छै ॥ २ ॥ ॥ आंकड़ी ॥ संसार तणो उपकार करै छै,

तिणरे निश्चय हो संसार बधे ते जाण । मोक्ष तणो उपकार करे छे, तिणने निश्चय हो नेड़ो होसी निर्वाण ॥ श्रो० मु० ॥ ३ ॥ कोई दरिद्री जीव ने धनवन्त कर दे, नवजात रो परिग्रह देई भरपूर। वले विविध प्रकारे साता उपजावे, उणरो जावक दारिद्र कर दियो दूर ॥ श्रो० म० ॥ ४ ॥ छः काय रो शस्त्र जीव अव्रती, साता पूछे ने साता उपजावे । त्यांरी करे वैयावच्च विविध प्रकारे, तिण ने तीर्थङ्कर देव तो नहीं सरावे ॥ श्रो० मं० ॥ ५ ॥ गृहस्थ री साता पूछ्यां ने वैयावच्च कियां में, तेथो साधु होय जावे अनाचारी । आ साता पूछ्यां ने वैयावच्च कियां में, पिण जिन आज्ञा नहीं छे तिणारी ॥ श्रो० मं० ॥ ६ ॥ साता पूछ्यां तो साधु ने पाप लागे है, तो साता कियां में धर्म किहां थी होवे । पिण मूढ मिथ्याती विवेक रा विकल, श्री जिन आज्ञा साहमी नहीं जोवे ॥ श्रो० म० ॥ ७ ॥ कोई मरता जीवां ने जावां बचाय, झाटा झपटा कर औषध देई ताम । वलि अनेक उपाय करने तिण ने, मरता राख्यो साजो कियो तमाम ॥ श्रो० मं० ॥ ८ ॥ कोई मरता जीवां ने [illegible] करावे, चार शरणा देई ने करावे सन्थारो । ज्ञान ध्यान करने परिणाम चढ़ावे, त्यांरा [illegible] देवे [illegible] [illegible] ॥ श्रो० मु० ॥ ९ ॥ श्रावक रा राणी पाणी है

सर्व अव्रत में, ते सेवै सावद्य योग व्यापारो। वले नव ही जातरो परिग्रह अव्रत में, तिण ने सेवै छे कोई वारंवारो ॥ श्रो० सं० ॥ १० ॥ श्रावक रो खाणो पीणो छै सर्व अव्रत मे, तिण ने त्याग करावै चढावै वैरागो। वले नवही जात रो परिग्रह अव्रत मे, ते छोडै छुडावै त्यांरे शिरै भागो ॥ श्रो० सु० ॥ ११ ॥ कोई लायसूं बलता ने काढ बचायो, वले कूवे पड़तां ने वचायो। वले तालाव में डूबता ने बारै काढै, वले ऊंचा थी पड़तां ने झाल लियो तायो ॥ श्रो० सं० ॥ १२ ॥ जन्म मरण री लायथी बारै काढै, भाव कूवा मांयथी काढै बारै, नरकादि नीच गति पड़तां ने राखै, संसार समुद्रथी बारै काढै उद्धारै ॥ श्रो० सु० ॥१३॥ किणरै लाय लागी घर बलै छै तिण में, नाना मोट जीव बल जाय। कोई लाय बुझाई त्यांने बारै काढै, घणां रै साता दीधी बपराय ॥ श्रो० सं० ॥ १४ ॥ किणरै तृष्णा लाय लागी घट भीतर, ज्ञानादिक गुण बलै त्यां मांई। उपदेश देई तिण री लाय बुझावै, समय समय साता दीधी बपराई ॥ श्रो सु० ॥ १५ ॥ कोई टाबर ने पालने मोटो करै छै, आछी आछी वस्तु तिणनै खवाय। वले मोटे मण्डाण करी परणावै, धन माल देवै कमाय कमाय। श्रो० सं० ॥ १६ ॥ कोई बेटां ने रूड़ो रीत

समभावै, धन माल सगलोही देवै छुड़ाय। काम भोग स्त्री आदिक खावो ने पीवो, भली भांति सूं त्याग करावै ताय॥ ओ० मु० ॥ १७ ॥ कोई मात पितारी सेवा करे दिन रात, वले मनमान्या भोजन त्यांने खवाई। वले कांवड़ कान्धे लियां फिरै त्यांरी, वले बेहूं टङ्कांरो स्नान करावै ताई॥ ओ० सं० ॥ १८ ॥ कोई माता पिता ने रूड़ी रीते, भिन्न भिन्न करने धर्म सुणावै। ज्ञान दर्शन चारित पमावै, त्यांने भोग शब्दादिक सर्व छुड़ावै॥ ओ० मु० ॥ १९ ॥ जिण रो खाणो पीणो गहणो अव्रत में छै, तिण ने मनमाने ज्यूं खवावै पिवावै। वले मांगे तिण ने धन धान्य आपै, वले विविध पणे तिण ने साता उपजावै॥ ओ० सं० ॥२०॥ जिण रो खाणो पीणो गहणो अव्रत में छै, उपदेश देई ने परो छुड़ावै। तिण रे ज्ञानादिक गुण घट मांही घालै, तिण री तृष्णा लाय ने परी बुझावै॥ ओ० मु० ॥ २१ ॥ किणरा बाला काढै किणरा कीड़ा काढै, वले लटां ने आदिक काढै है ताहीं। कानमलायां बुगादिक काढै, घणी साता उपजावै शरीर मांही॥ ओ० सं० ॥ २२ ॥ किणरे बाला कीड़ा ने लटां नें आदिक शरीर में उपना जीव अनेक। तिण ने बारे काढण रा त्याग करावै, कहै शरीर बारे काढणा नहीं, टेक॥

ओ० मु० ॥ २३ ॥ गृहस्थ भूलो उजाड़ वन में, अटवी ने वले ऊजड़ जावै । तिण ने मार्ग बतायने घरे पहुंचावै, वले थाको हुवै तो कांधे बैठावै ॥ ओ सं० ॥ २४ ॥ संसार रूपिणी अटवी भूल्या ने, ज्ञानादिक मारग शुद्ध बतावै । सावद्य भारने अलगो मेलै, सुखि सुखि शिवपुर में पहुंचावै ॥ ओ० मु० ॥ १५ ॥ नाग नागिनी हूंता वलता लकड़ा मे, त्याने पार्श्वनाथजी काढ्या कहे वारै । अग्नि में वलतां ने राख्या जीवता, पाणी अग्नि आदिक जीवां ने मारे ॥ ओ० सं० ॥२६॥ पार्श्वनाथजी घर छोड़ काउसग कीधो, जब कमठ उपसर्ग कर वर्षायो पाणी। जब पद्मावती हेठै सिंहासन कीधो, धरणीन्द्र छत्र कियो शिर आणी ॥ ओ० मु० ॥ २७ ॥ नाग नागिनी ने नवकार सुणावै, चारू शरणा ने सूंस कराया जाणी । ते शुभ परिणामां सूं मरनै हुआ, धरणीन्द्र ने पद्मावती राणी ॥ ओ० मु० ॥२८॥ सुग्रीव सूं उपकार कियो राम ने लक्ष्मण, जब सुग्रीव हुवो त्यांरो सखाई । सीता री खबर आण रावण ने मरायो, पाछो उपकार कियो भीड़ आई ॥ ओ० सं० ॥ २९ ॥ कोई दुष्टी जीव जूं जीव ने मारतो थो, तिण ने वर्जने जूं ने बचाई । ते जूं रो जीव मनुष्य हुओ जब, डूण रो कजियो डूण पिण दियो मिटाई ॥ ओ० सं० ॥ ३० ॥

धणी रे मुंडा आगे सेवक मरने, धणी ने कुशले खेमे जीवतो काढे। जब धणी तूठ्यो थको रिजक रोटी दे, इह लोक रो काम सिगाड़े चाढे॥ ओ० सं० ॥ ३१ ॥ दोय इन्द्र आया कोणक री भीड़ी, कोणक रै साता करदी ताम। एक क्रोड़ अस्सी लाख मनुष्यांने मारी, कोणक रो सुधाग्यो काम ॥ ओ० सं० ॥ ३२ ॥ एकी का जीवां ने अनन्ती वार बचायो, त्यां पिण इणाने अनन्तो वार वधायो। आमा सामा उपकार संसार ना कीधा, त्यां सूं जीव री गर्ज सरे नहीं कायो ॥ ओ० स० ॥ ३३ ॥ हातो नेवतादिक दे आमा सामा, गाड़ू वोपरादिक दे आमा सामा। अथवा कोई आत्रा पण देवें, इत्यादिक अनेक संसारना कामा ॥ ओ० स० ॥ ३४ ॥ संसार ना उपकार करे तिण सेती, कदा ते पिण पाछा करें उपकारो। एता एक एक जीवां सूं, कीधा छे अनन्त अनन्ती वारो।

आ श्रद्धा श्री जीनिवर भाषी ॥ ३५ ॥ आंकड़ी ॥ संसारना उपकार सबही फीका, ते तो थोड़ा में विलय होय जावें। संसारना उपकार फीका छे त्यांसूं, मुक्ति तणा सुख कोय न पावें ॥ आ० ॥ ३६ ॥ संसार ना उपकार कियां से, कोई मूढ़ मिथ्याती धर्म बतावें। कोई जन मारग जाणियां बिन, ज्यूं मनमाने गालांरा

गोला चलावै। आ० ॥ ३७ ॥ जितरा उपकार संसार तणा छै, जे जे करै ते मोह वश जाणो। साधु तो त्यांने कदे न सरावै, संसारी जीव तिण रा करै वखाणो ॥ आ० ॥ ३८ ॥ संसार रो उपकार कियां में, जिन धर्म रो अंश नही छै लिगार। ससार तणा उपकार किया में, धर्म कहै ते तो मूढ गिंवार ॥ आ० ॥३९॥ किणही जीव ने खप करने बचायो, किणही उपाय ने कीधो मोटो। जो धर्म होसी तो दोयां ने होसी, जो टोटो होसी तो दोयां मे टोटो ॥ आ० ॥४०॥ बचावणवाला बिचे तो पालणवालो, साम्प्रत दीसै उपकार मोटो। यांरो निर्णय कियां विन धर्म कहै छै, त्यांरो मत निर्केवल खोटो ॥ आ० ॥४१॥ बचावणवालो उपजावणवालो, ये तो दोनूं संसार तणा उपकारी। एहवो उपकार करै आमा सामा, तिण मे केवलियां रो धर्म नहीं छै लिगारी ॥ आ० ॥४२॥ जीव ने जीवां बचावै तिण सूं, वध जावै तिण सूं द्वेष विशेष। जो पर भव मांही आय मिलै तो, देखत प्राण जागै तिण सूं द्वेष ॥ आ० ॥ ४४ ॥ मित्र सूं मित्रपणो चलियो जावै, बेरी सूं वेरीपणो चलियो जावै। ए तो राग द्वेष कर्मां रा चाला छै, श्रीजिन धर्म मांहीं नहीं आवै ॥ आ० ॥४५॥ कोई अनुकम्पा आणी घर मण्डावै, कोई मण्डाता घर

ने देवे भंगाय। ए तो प्रत्यक्ष रागने द्वेष उघाड़ो, ते आगे लागा चलिया जाय ॥ आ० ॥ ४६ ॥ कोई तो पेलेरा काम भोग बधारे, कोई काम भोग री देवे अन्तराय। ओ पिण राग ने द्वेष उघाड़ो, ते आगे लागा दोनूं चलिया जाय ॥ आ० ॥४७॥ कोई पेला रो धन गमियो बतावे, वले स्त्री आदिक पण गमिया बतावे। कोई लाभ ने टोटो लोकां ने बतावे, तिण सूं आगे लाग्यो राग चलियो जावे ॥ आ० ॥ ४८ ॥ कोई वैद्यगरी करने लोकां रो, रोग गमावे ने जीवां बचावे। ओ उपकार लोकां सूं कीन्हो, आगे लग्यो राग चलियो जावे ॥ आ० ॥ ३६ ॥ कही कही ने कितरा एक कहूं, संसार तणा उपकार अनेक। ज्ञान दर्शन चारित्र तप विना, मोक्ष रो उपकार नहीं छै एक ॥ आ० ॥ ५० ॥ संवर ना वीस भेद कह्या जिन, निर्जरा तणा भेद कह्या छै बार। ए बत्तीस भेद उपकार मुक्ति रो, और मोक्ष रो उपकार नहीं छै लिगार ॥ आ० ॥५१॥ संसार ने मोक्ष तणा उपकार, समदृष्टि हुवे ते न्यारा न्यारा जाणे। पण मिथ्याती ने खबर पड़े नहीं संधो, तिण सूं मोह कर्मवश कर्मा ताणे ॥आ०॥५२॥ संसार ने मोक्ष रो उपकार ओलखावण, जोड़ कीधी खेरवा शहर मझार। संवत् अठारह वर्ष बावने आसोज सुदी बीज शुक्रवार ॥आ० ॥५३॥

॥ दोहा ॥

चौबीसमा जिनवर हुवा, महावीर विख्यात।
पहिली वाणी निष्फल गयी, हुवो अच्छेरो अचरज वात॥१॥
जम्भिका ग्राम बाहिरे, श्याम नाम कर्षणीरे खेत।
तिहां शाल नाम वृक्ष छै, गहर गम्भीर पान समेत॥२॥
तिण शाल वृक्ष हेठे आविया, भगवंत श्रीवर्द्धमान।
वैशाख सुदी दशमी दिने, उपनो कैवल ज्ञान॥३॥
केवल महोत्सव करवा भणी, तिहां देवता आया अनेक।
पिण मनुष्यांनेठीकपड़ीनहीं, तिणसूं मनुष्य न आयो एक॥
देवतामें वाणी वागरी, थिति सांचववा काम।
कोई साध श्रावक हुवो नहीं, तिणसूंवाणीनिष्फलगईआम
जो धन थकी धर्म निपजे, तो देवता पिण धर्म करन्त।
वीर वाणी सफली करै, मनमांही पिण हर्ष धरन्त॥६॥
व्रत पचखाणनहुवे देवतातणे धनसूं पिण धर्म न थाय।
तिणसूंवीरवाणीनिष्फलगयी,तिणरोन्यायसुणोचित्तलाय॥७

॥ ढाल बारहवीं ॥

(शील सुरतरु वर सेवियें—देशी)

जिन धर्म हुवे सोनइया दियां, तो देवता देता हाथो हाथजी। पूरता मन री मनरली, वीर वाणी निष्फल न गमातजी। भवि करज्यो पारखा जिन धर्म री॥१॥

(आंकडी) रत्न हीरा ने माणिक पन्ना, मन माने ज्यूं देवता देतजी ॥ भ० ॥ २ ॥ धन दियां धर्म हुवे जिन भाषियो, तो देवता दान दे दवाचालजी। यों कियां वाणी सफली हुवे, तो अच्छेरो न हुवे तिणकालजी ॥ भ० ॥ ३ ॥ धन धान्यादिक लोकां मे दियां, ए तो निश्चय छो सावद्य दानजी। तिण में धर्म नहीं जिनराज रो, ते भाष्यो छे श्रीभगवानजी ॥ भ० ॥ ४ ॥ जो जीव बचायां धर्म हुवे, ओतो देवता रे आसान जी। अनन्ता जीव बचायने, वाणी सफल करता देव आनजी ॥ भ० ॥ ५ ॥ असंख्याता समदृष्टि देवता, एकेको बचावता अनन्तजी। जो धर्म हुवे तो आघो न काढता, वीर वाणी सफल करंतजी ॥ भ० ॥ ६ ॥ साध श्रावक नो धर्म व्रत मे, जीव हणवारा करे पचखाणजी। ओ धर्म देवता थी न हुवे, तिण सूं निष्फल गई वीर वाण जी ॥ भ० ॥ ७ ॥ जीवांने जीवां बचावियां, हुवे संसार तणा उपकारजी। यूं तो वाणी सफल न हुवे वीरनी, धर्म नो अंश नहीं छे लिगारजी ॥ भ० ॥८॥ असंयति ने जीवां बचावियां, वलि असयति ने दियां दानजी। इम करतां वीर वाणी सफली हुवे, ओ तो देवता रे आसानजी ॥ भ० ॥ ९ ॥ कुपात्रने जीवां बचावियां, कुपात्रने दियां दान [illegible] माठ्या कर्त्तव्य संसार ना, भाष्यो छे श्रीभग-

वानजी ॥ भ० ॥१०॥ उत्तराध्ययन अट्ठावीसमें, मोक्ष ना मार्ग भाख्या च्यारजी । बाकी सर्व कामा संसार ना, सावद्य योग व्यापारजी ॥ भ० ॥ ११ ॥ धर्म हुवै सावद्य दान में, असंयति ने बचायां हुवै धर्मजी । ते निश्चय समदृष्टि जीवड़ा, ओ धर्म कर काटै कर्मजी ॥ भ० ॥ १२ ॥ कर्म काटै एह सावद्य धर्म सूं, एहवा सावद्य कामा अनेकजी । ते तो थोड़ासा प्रगट करूं, ते सुणज्यो आण विवेकजी ॥ भ० ॥१३॥ मच्छ गलागल लग रह्यो, सारा द्वीप समुद्रां मांयजी । मोटो मच्छ छोटा ने भखै, उण सूं मोटा मोटा उण ने खायजी ॥ भ० ॥ १४ ॥ जो उद्यम करै एक देवता, एक दिन में बचावै अनेक जी । धर्म हुवै तो आघो काढै नहीं, ओ तो छै देवता में विवेकजी ॥ भ० ॥ १५ ॥ जीव बचायां अभयदान हुवै तो, अभयदान घणां ने देतजी । धर्म जाणै जीव बचावियां, देव भव में पिण लाहो लेतजी ॥ भ० ॥१६॥ मछला बचावै एक दिन मझे, लाखां क्रोड़ां ही गिणियाई न आयजी । इण में धर्म हुवै जिनराज रो, तो देवता देवै बचायजी ॥ भ० ॥ १७ ॥ मच्छ आगा सूं मच्छ छोड़ावियां, उणरै पड़तो जाणे अंतरायजी । तो अचित्त मच्छला उपाय ने, उण ने पिण देवै खवायजी ॥भ०॥१८॥ जो धर्म हुवै माछला बचावियां, माछलाने

पोष्यां हुवे धर्मजी। जो धर्म हुवै देवता थकी. यूं कर कर
काटै कर्मजी ॥भ०॥१९॥ जो धर्म हुवे तो देवता, असं-
ख्याता माछला बचायजी। असंख्याता पोषे माछला देवता,
आलस्य पण न करै तायजी ॥ भ० ॥२०॥ पृथ्वी पाणी
तेउ वायु मझे, जीव कह्या असंख्यातजी। वनस्पति में
जीव अनन्त छै, यांने पण देव बचातजी ॥ भ० ॥ २१ ॥
तीन विकलेन्द्रिय मनुष्य तिर्यञ्च ने, बचायां धर्म जाणे
तो देवजी। तो त्यांने ही बचावण री खप करै, सम-
दृष्टि देवता स्वयमेवजी ॥ भ० ॥ २२ ॥ नाहर चीता
आदिक दुष्ट जीव छै, करै गाय आदिक री घातजी।
गाय आदिक ने तो खवावे नहीं, त्यांने पिण देव अचित
खवातजी ॥ भ० ॥ २३ ॥ जीव जीव तणो भक्षण करै,
त्यांने बचावे अचित खवायजी जो यूं कियां में धर्म
निपजै, तो देवता करै ओहिज उपायजी ॥ भ० ॥२४॥
अढाई द्वीप में मनुष्यां तणा, घर में आरम्भ करै जाण
जी। ते तो कत्ल करै जीवां तणी, छः ही काय तणा
घमसाणजी ॥ भ० ॥२५॥ नित्य एक एक घर में जीवां,
आरम्भ हुवे दिन रातजी। छेदन भेदन करै निलोतणी,
और अनन्त जीवां री घातजी ॥ भ० ॥ २६ ॥ टलणी
[illegible] ने पावणा, घर घर चूल्हो धुकावे तामजी।
[illegible] कूटा करै छः कायनो, करै अनन्त जीवां री

विनाशजी ॥ भ० ॥२७॥ एकेका समदृष्टि देवता, त्यांरी शक्ति घणी छै अत्यन्तजी अढ़ाई द्वीपनो आरम्भ मेटने, बचावै जीव अनन्तजी ॥ भ० ॥ २८ ॥ अढ़ाई द्वीपना मनुष्यां भणी, भूख तृषा न राखं सोयजी । अचित अन्न पाणी निपाय ने, सगलां ने तृप्त करै सोयजी ॥ भ० ॥ २९ ॥ विविध प्रकार ना भोजन करै, विविध प्रकार ना पकवानजी । खादम स्वादम विविध प्रकारना, विविध प्रकार ना खानपानजी ॥ भ० ॥ ३० ॥ शाक व्यञ्जन विविध प्रकार ना, फल नीलोती विविध प्रकारजी । मनशा भोजन सगला मनुष्यां भणी, करावै देवता वारम्वारजी ॥ भ० ॥ ३१ ॥ ठाम ठाम अचित्त पाणी तणा, कुण्ड भरभर राखै साम्हजी । वले भोजन विविध प्रकार ना, त्यांरा ढिगला करै ठाम ठामजी ॥ भ० ॥ ३२ ॥ चारों आहार अचित्त निपायने, दीधां हुवै धर्म ने पुण्य तामजी । धर्म हुवै जीव बचावियां, तो देवता करता ओहिज कामजी ॥ भ० ॥ ३३ ॥ देवता खाणो देवै मनुष्यां भणी, तो खेत रो आरम्भ टल जायजी । वले गहणा कपड़ा देवै देवता, तो घणा जीव मरै नहीं तायजी ॥ भ० ॥३४॥ घर हाट हवेलियां महलायतां, इत्यादिक कमठाणा तायजी । ए पिण निपजाए देवी देवता, तो अनन्त जीव मरता रह जायजी ॥ भ०

॥ ३५ ॥ ते छावणा लीपणा न पड़ै, ते तो सुन्दर ने शोभायमानजी। ते पिण दीसै घणा रलियामणा, देवतां ने करणा आसानजी ॥ भ० ॥३६॥ एही करणी कियां धर्म निपजे, तो देवता आघो न काढन्तजी। आ करणी कर कर्म काटने, काम सिराड़ै चाढन्तजी ॥ भ० ॥ ३७ ॥ दान दियां ने जीव बचावियां, जो कर्म तणो होय शोपजी। तो दान दे जीव बचाय ने, देवता पिण जाये मोक्षजी ॥ भ० ॥ ३८ ॥ अनेराने दियां पुण्य निपजे, देवता रे हुवे पुण्य रा थाटजी। वले धर्म हुवे जीव बचावियां, देवता मोक्ष जावे कर्म काटजी ॥ भ० ॥ ३९ ॥ असंयति जीवां रा जीवणो, ते सावद्य जीतव साक्षातजी। तिण ने देवे ते सावद्य दान छे, तिण में धर्म नहीं अंश मातजी ॥ भ० ॥ ४० ॥ धर्म हुवे तो सगला मनुष्यां तणा, रल अडग्गा कर दे मसल जी। ने पिण थोड़ा में निपायदे, देवता ने करतां सहलजी ॥ भ० ॥४१॥ खाणो पीणो गहणो कपड़ादिक, गृहस्थ तणा सारा काम भोगजी। त्यांरी करे वधाबरा मेल ने, बंधे पाप कर्मना संयोगजी ॥ भ० ॥ ४२ ॥ काम भोग सारा गृहस्थ ना, दुःख ने दुःख री छे खानजी। त्यांने किंपाक फल री उपमा, उत्तराध्ययन में कहीं भगवानजी ॥ भ० ॥ ४३ ॥ त्यांने भोगवावे धर्म

जाय ने, तिणरे बंधे छै पाप कर्मजी। तिण में समदृष्टि देवता, अंश मात्र न जाणे धर्मजी ॥ भ० ॥ ४४ ॥ कोई कोई अज्ञानी इम कहै, श्रावक ने पोष्यां हुवे धर्मजी। लाडू खवाय दया पलावियां, तिणरा कट जावे पाप कर्मजी ॥ भ० ॥४५॥ लाडुवां साटै उपवास बेला करै, तिण रा जीवितव्य ने छै धिक्कारजी। तिण ने पोषे छै मोल ले, तिण में धर्म नहीं छै लिगारजी ॥ भ० ॥४६॥ लाडुवां साटै पोषा करै, तिण में जिन भाख्यो नहीं धर्मजी। ते तो इह लोक रै अर्थे करै, तिण रो मूर्ख न जाणे मर्मजी ॥ भ० ॥ ४७ ॥ धर्म हुवै तो समदृष्टि देवता, अचित्त लाडुवादिक निपजायजी। वले पाणी पिण अचित्त निपजायने, श्रावकां ने जिमावे धपायजी ॥ भ० ॥ ४८ ॥ यावज्जीव सगला श्रावकां भणी, लाडू आदिक अचित्त खवायजी। अढाई द्वीप रा श्रावकां भणी, दया पलाय पोषो करायजी ॥ भ० ॥ ४९ ॥ त्यां ने आरम्भ करवा दे नहीं, कल्पै ते देवता देतजी। धर्म हुवै तो आघो न काढता, ओ पिण देवता लाहो लेतजी ॥ भ० ॥ ५० ॥ श्रावकां ने वस्तु हुवै चाहती, ऊणायत न राखे कायजी। धर्म हुवे तो आघो काढ़े नहीं, त्यांरे कमी न दीसे कायजी ॥ भ० ॥ ५१ ॥ जो धर्म हुवै श्रावक ने पोषियां, तो देवता पण करै ओ

धर्मजी। असंख्याता श्रावक पोषने, काटता निज पाप ने कर्मजी ॥ भ० ॥ ५२ ॥ असंख्याता द्वीप समुद्र में, असंख्याता श्रावक छै तामजी। त्यांने पोषे समदृष्टि देवता, जो जाणे धर्म नो कामजी ॥ भ० ॥ ५३ ॥ श्रावक नो खाणो पीणो सर्वथा, अव्रत में कह्यो छै आमजी। तिण सूं समदृष्टि देवता, पहयो किम करसी कामजी॥ भ० ॥५४॥ शक्र इन्द्र ने ईशान इन्द्र छै, तिरछा लोक-तणा सरदारजी। हाल हुक्म छै सगलां ऊपरे, असंख्याता द्वीप समुद्र मझारजी ॥ भ० ॥५५॥ मच्छ गलागल लग रह्यो, सारा द्वीप समुद्रां मांयजी। जो धर्म हुवे जीव बचावियां, तो इन्द्र थोड़ा में देता मिटायजी॥ भ० ॥५६॥ भगवन्त कह्यो हुवे इन्द्र ने, जीव बचावियां धर्म होयजी। तो दोनूं इन्द्र जीव बचावता, आलस्य नहीं करता कोयजी ॥ भ० ॥ ५७ ॥ मच्छ मच्छ आगा सूं छुड़ायने, मच्छां ने देता जीवां बचायजी। त्यांने विण भूख्यां नहीं मारता, अचित्त मच्छ कर देता खवायजी ॥ भ० ॥५८॥ यूं कियां जिन धर्म निपजे, तो भगवन्त सिखावता आयजी। वले आज्ञा देता तेहने, वली चौड़े करता आभित्र थापजी ॥ भ० ॥ ५९ ॥ जीव ने जीवां बचावियां, ओ तो संसार नो उपकारजी। ओ जिन आज्ञा श्रावक नहीं, धर्म पिण नहीं छै लिगारजी

भ० ॥ ३० ॥ छः कायरा शस्त्र बचावियां, छः काया नो वैरी होयजी । त्यारां जीवितव्य पिण सावद्य कह्यो, त्यांने बचायां धर्म न होयजी ॥ भ० ॥ ६१ ॥ असंयतीरा जीवणा मझे, धर्म नहीं अशमातजी । वले दान देवै छै तेहने ते पिण सावद्य साचातजी ॥ भ० ॥६२॥ दान देवो ने जीव बचायवो, ओ तो देवता रे आसानजी । जो यूं कियां धर्म हुवै तो देवता, जाय पंचमी गति प्रधानजी ॥ भ० ॥६३॥ जीव बचावणो ने सावद्य दान ने ओलखायो पुर शहर मझारजी । संवत् अठारह ने वर्ष सतावनै, कार्तिक वदी चौदस ने शुक्रवारजी ॥ भ० ॥ ६४ ॥

॥ इति श्री वृद्ध सिद्धान्त सारोपरि अनुकम्पा की चौपाई समाप्त ॥

॥ दोहा ॥

भेषधारी भूल्या थका, त्यारे दया नहीं घट मांय ।
हिंसा धर्म परूपियो, बिना सूत रे न्याय ॥१॥
दया दया मुख सूं कहै, पिण दया री खबर न काय ।
भोलां ने पाड्या भरम में, ते हणै जीव छः काय ॥२॥

हिंसा धर्म परूपता, फिरता बोले वैण।
आप डूबे अनेरा ने डुबोयने, त्यांरा फूटा अभ्यन्तर नैण ॥३॥
इसा धर्म परूपियो, तिण सूं डूबा जीव अनेक।
ते खोटी श्रद्धा प्रकट करूं, सो सुणज्यो आण विवेक ॥४॥

॥ ढाल तेरहवीं ॥

(आ अनुकम्पा जिन आज्ञा में—एदेशी)

श्रावक ने मांहो मांहो छः काय खुवावे, छः काय मारी ने जिमावें। ए जीव हिन्सा रो राहज खोटो, तिण मांही धर्म अनार्य बतावे॥ थां हिन्सा धर्मां री निर्णय कीजो ॥ १ ॥ छः काय जीवां री तो घमसाण कीधां, जिमाय कियो उण ने कर्मां सूं भारी। टोलां-वालां जीवां दोसै दिवालो, तिण मांहि धर्म कहै अपधारी ॥ थां० ॥ २ ॥ छः काय जीवां ने तो खाधां खवायां, अरिहन्त भगवन्त पाप बतावें। ये वचन उथापी ने मिथ्र परूपें, तिण दुष्टो रे दिल दया नहीं आवे ॥ थां० ॥ ३ ॥ रांकां ने मार धींगा ने पोषे, आ तो बात टोके वर्णी केरी। इण मांही दुष्टी धर्म परूपे, ते रांक जीवां रा वैरिया केरी ॥ थां० ॥ ४ ॥ पाखण्ड मत पाप प्रकट किया सूं, हुआ पंचेन्द्रिय पुण्य परवारी। तिण

रांक जीवां रे अशुभ उदय सूं, लोकां सहित लागू उठ्या भेषधारी ॥ यां० ॥ ५ ॥ कुपात्र दान में पुण्य परूपे, तिण सूं लोक हणे जीवां ने विशेषो। कुगुरु एहवा चाला चलावे, ते भ्रष्ट हुआ लेई साधु रो भेषो ॥ यां० ॥ ६ ॥ पूछे तो कहै म्हे मौनज साजां, सानोकर जीव मरावण लागा, हेठलो भोवरो खेंख अलगा हुआ, त्यांने व्रत विहुणा कहीजे नागा ॥ यां० ॥ ७ ॥ कोई माली रे ओडे भूखो आय ऊभो, गाजर मूला धपाय खुवावे। एकान्त पाप उघाड़ो दीसे, तिण मांही मूरख धर्म बतावे ॥ यां० ॥ ८ ॥ बेंगण वालोरादिक अनेक नीलोतरी, कोई राखी राखी पोषे पर प्राणी। तिण मांही दुष्टी धर्म बतावे, तो दुर्गति जावा री ए अहनाणी ॥ यां० ॥ ९ ॥ खर्च आघरणी ने भात बरोठी, अनेक आरम्भ कर न्यात जिमावे। ये सर्व संसार तणा कर्त्तव्य छे, तिण मांही मूरख धर्म बतावे ॥ यां० ॥ १० ॥ भेष-धारी श्रावक ने सुपात्र थापे, तिण ने नूंत जिमायां कहे मोक्ष रो धर्मो। उणाने सूत्र शस्त्र ज्यूं परगमिया, हिंसा हढाय बांधे मूढ कर्मो ॥ यां० ॥११॥ कोई बीस पचीस श्रावक न्योतर ने, घरे जाय घरकां ने धंधे लगावे। कोई मूंग दले कोई गेहूं पीसे, कोई अग्नि सूं धूको चूल्हो फंकावे ॥ यां० ॥१२॥ कोई लवण पाणी घाली

आटो गिलोवे, कोई आधण देई करे चोखो टालो। कोई रोटो तवे नांखी खीरां सेंके, कोई तरकारी रांध लेवे तत्कालो ॥ यां० ॥१३॥ छः काय जीवां री हिंसा करने अनेक चीजां रांधी कीधी रसालो। पछे दांतण कराय ने आगे बेसाणे, बाजोट देई ऊपर मेले थालो ॥ यां० ॥ १४ ॥ पछे भोजन पुरसी ने भेला बैठ्या, आप आप तणा पेट सगलाई भरिया। भेषधार्यां सहित श्रावकां ने पूछीजे, थामें कुण कुण डूबा ने कुण कुण तिरिया ॥ यां० ॥ १५ ॥ जब जीमणवाला ने तो पाप बतावे, हिन्सा करणवाला ने कहे पापी। जिमावणवाला ने धर्म कहे छे, आ श्रद्धा भेषधार्यां थापी ॥ यां० ॥ १६ ॥ जीमणवाला रे ने हिंसावाला रे, आ पाप री उत्पत्ति किण सूं चाली। वले छः काय रा जीव मुआ त्यांरी, त्यांरा जिमावणवाला दलाली ॥ यां० ॥ १७ ॥ इण पाप दलाली में धर्म परूपे, ते पड़ गया मोह मिथ्यात्व अन्धेरे। ते प्रत्यक्ष हिंसा धर्मी अनार्य, कोई डूब गया त्यां कुगुरां रे फेरे ॥ यां० ॥१८॥ श्रावक ने न्यात जिमावे तिण में, धर्म कहे मूढ बिना विचारे। कुबुद्धि बान्धी ने मोटा बोले, पिण जीम वले ज्यूं तीर्थ तारे ॥ यां० ॥ १९ ॥ किण ही जीव भगतां ने गाड़ा भर ने तुरन्त हणा सुण कुगुरां रा वाणां। पछे

हिन्सा कियां पाछ धर्म बतावे, तो कुगुरु वाणी जेहवी वहतो घाणी ॥ यां० ॥ २० ॥ किण ही रांक भिखारी ने दान उदकियो, उदकियो दान श्रावक ने दिरावै। धनवन्त धर्म रो लेवण लागा, तो रांकां रे हाथ कठा सूं आवै ॥ यां० ॥ २१ ॥ लाड् खोप रा रोकड़ नाणो, सानोकर सामग्री में दिरावै। कुगुरु एहवा चाला चलावै, पेट भरा जाणै पात रै आवै ॥ यां० ॥ २२ ॥ मांय सुखी हुआं गर्भ सुखी हुवै, कूवै पाणी हुवै तो उवारै आवै। इण दृष्टान्ते पेट काजै भेषधारी, आप आप तणी सामग्री में दिरावै ॥ यां० ॥ २३ ॥ जद देवणवाला ने तो धर्म कहे छे, लेवणवाला ने कहै पापज होवै। तो धर्म करण ने मूढ अज्ञानी, सर्व सामग्री मे कांय डुबोवे ॥ यां० ॥ २४ ॥ सर्व सामग्री में पाप लगायां, ते पिण होसी निश्चय पापां सूं भारी। साची श्रद्धा ने ऊंधी बोलै, तो विकलां ने गुरु मिल्या भेष-धारी ॥ यां० ॥ २५ ॥ धर्म करै ओरां पाप लगावै, ओ धर्म कदे मत जाणज्यो रूड़ो। भारी कर्मा लोगां रै अशुभ उदय सूं भेषधार्यां मत काढ्यो कूड़ो ॥ यां० ॥ २६ ॥ कुपात्र दान री चर्चा करतां, पड़िमाधारी श्रावक ने मुख आणै। भोला लोकां ने भ्रष्ट करण ने, ते पिण भेद मिथ्याती न जाणै ॥ यां० ॥ २७ ॥ पड़िमाधारी

श्रावक वहरी ने आणे, तिण ने तो एकान्त पाप बतावे।
दातार ने तो धर्म कहे पिण, प्रश्न पूछ्यां रो जाब न
यावे ॥ यां० ॥२८॥ पड़िमाधारी श्रावक ने पाप लगायो,
तो दातार ने धर्म होसी किण लेखे। उण अव्रत सेवण
ने दान दियो छे, तिण कर्त्तव्य साहमो अज्ञानी न
देखे ॥ यां० ॥ २९ ॥ पड़िमा पड़िमा कर रह्या मूरख
मैं पड़िमा तो छै श्रीजिनजी रो धर्मो। पण पड़िमा
पादरतां आगार रह्यो त्यां सूं, सेव्यां सेवायां सूं
बंधसी कर्मी ॥ यां० ॥ ३० ॥

चतुर विचार की ढालां

॥ ढाल पहली ॥

साध ने श्रावक रत्नारी माला, एक मोटी दूजो नान्हो रे। गुण गूंथ्या च्यारूं तीरथ नां, अव्रत रह गयी कानी रे ॥ चतुर विचार करी ने देखो ॥१॥ (आंकड़ी) श्रमणोपासक पड़िमा आदर ने, आपरी न्यात सें लीधो रे। तिण ने च्यारूं ही आहार वहिरायां, प्रति संसार न कीधो रे ॥ च० ॥२॥ ए तो गोचरी आपणे छान्दै, जोवो सिद्धान्त सम्भाली रे। दातार ने लेवाल वेहूं सें, जिन आज्ञा किण पाली रे ॥ च० ॥ ३ ॥ श्रावक नो खाणो पीणो ने गहणो, अव्रत मांहो घाल्यो रे। उववाइ सूयगडाअङ्ग मांहि, पाठ उघाड़ो चाल्यो रे ॥ च० ॥४॥ सेवायां अव्रत कर्म जु लागे, ए तो श्रद्धा सूँधो रे। कर्म तणे वश धर्म परूपै, अक्ल तिणांरी ऊन्धी रे ॥ च० ॥ ५ ॥ करण योग विगटावे अज्ञानी, लाग रह्या मत

झूठे रे। न्याय करी समझावै तिण सूं, क्रोध करी लड़वा उठै रे॥ च०॥ ६॥ खाधां पाप खुवायां धर्म, ए अन्य तीर्थीनो वायो रे। व्रत अव्रतनी खबर न कांई, भोला लोकां ने दे भरमायो रे॥ च०॥ ७॥ कहै ममता उतारियां धन थी, दे उपजावे साता रे। इसड़ो धर्म बतावे लोकां ने, मोह मिथ्यात में राता रे॥ च०॥ ८॥ द्रव्ये साता ने भावे साता, मूरख भेद न जाणे रे। सावद्य साता जिन धर्म बारै, ज्ञानी बिना कुण पिछाणे रे॥ च०॥ ९॥ कहै श्रावक रत्नां रो भाजन, तिण ने पोष्यां नहीं टोटो रे। च्यारूं आहार वहिरायां हर्षे, त्यांने लाभज मोटो रे॥ च०॥ १०॥ ए तो श्रद्धा अनार्य केरी, लोग रिझावण लागा रे। जो कोई साधु कहै तो उणरा, पांचूं ही महाव्रत भागा रे॥ च०॥ ११॥ रत्नां रो भाजन व्रतां करी ने, गुण आदरियां कह्यो रे। खावो पीवो देवो न लेवो, ए तो मारग [illegible] रे॥ च०॥ १२॥ श्रमण निग्रन्थ ने दानरो दाता, बारहमा व्रत में आख्यो रे। प्रति समार कियो गुण देखे, ज्यांने श्रीमुख वीर वखाण्यो रे॥ च०॥ १३॥ सामायक संवर पापां से, साधां ने हर्ष वहिरावै रे। जो श्रावक नेता रे पारणे, त्यां ने क्यूं न जिमावै रे॥ च०॥ १४॥ ए करणी जिन आज्ञा बारै, व्रतां मांहि

न आवै रे। सावद्य जोग रा त्याग करी ने, श्रावक कीम जिमावै रे॥ च०॥ १५॥ श्रावकरा च्यारूं विश्रामां, तिण मे छोड्यो ते माठो जाणो रे। सावद्य भार ने अलगो मेलो, जिन आज्ञा अगवाणी रे॥ च०॥ १६॥ वार वार दानने प्रशंसे, भेद न जाणै मिथ्याती रे। सूयगडांग अध्ययन इग्यारहमें, कह्यो छः कायारो घाती रे॥ च०॥ १७॥ दानशाला मण्डाई परदेशी, मोक्ष रो हेतु न जाणो रे। च्यार भाग तिण राज्य रा कीधा, त्यांने साधां नहीं बखाणो रे॥ च०॥ १८॥ तीनभाग मांहीं पाप कहो थे, एकणरी किम ताणो रे। केशी-कुमार तो मौन जु साधी, च्यारूं बरोबर जाणो रे॥ च०॥१९॥ आनन्द श्रावक व्रत आदरने, एहवो अभि-ग्रह लीधो रे। अन्य तीर्थी ने दान न देऊं, श्रीजिन आगल कीधो रे॥ च०॥ २०॥ छः छण्डी रो आगार राख्यो ते, आपणी जाण कचाई रे। सामायिक संवर पोषा में, ते पिण दे छिटकाई रे॥ च०॥ २१॥ एक तो त्याग करीने बैठो, एक दानशाला मंडावै रे। भग-वन्त री आज्ञा किण पाली, साधु किण ने सरावै रे॥ च०॥ २१॥ असंयति ने दान दियां में, धर्म पुण्य कांई थापो रे। श्रीवीर कह्यो भगवती मांहि, निर्जरा नहीं एकन्त पापो रे॥ च०॥ २३॥ जिण ने अन्न दियां

निपजै पुण्य, तो नमस्कार इम जाणो रे। उलटा पड़ पड़ कर्म म बांधो, कर कर ताणा ताणो रे॥ च०॥ २४॥ निर्णय न आवे नव बोलां रो, तिण रै भोलप मोटी रे। नवूं ही बोल सरीखा न थापै, तिण री श्रद्धा खोटी रे॥ च०॥ २५॥ जितरा द्रव्य सुपात बहिरै, तेहिज द्रव्य बताया रे। गाय भैंस धन धान ने धरती, त्यांने क्यूं न जताया रे॥ च०॥ २६॥ कहै करतां पाप देखो म्हे वरजां, धर्म करावां माडाणी रे। मिश्र ठिकाणे मौन जु साधां, ए कुदर्शणांरी वाणी रे॥च०॥ २७॥ साधु श्रावकरो एक ही मारग, दोय धर्म बताया रे। दोनूं ही जिन आज्ञा मांहीं, मिश्र अणहुंतो ल्याय रे॥ च०॥ २८॥ मिश्र पच्च ने मिश्र भाषा, मिश्र गु[illegible] ठाणा चाल्या रे। तिणरो नाम ले ले अज्ञानी, झूठ झगड़ा घाल्या रे॥ च०॥ २९॥ यां तीनां री ता[illegible] काढ्या तिण, जिण सिद्धान्त मानी रे। मिश्र धर्म [illegible] किण विध थइं, भगवन्तना सन्तानो रे॥ च०॥ ३० आयो चोड़ा रथ बैठा ने, श्रीवीर वन्दन ने चाल्या रे स्नान किया गहणा फूल पहस्या, ज्यांने श्रीमुखसूं ना[illegible] घाल्या रे॥ च०॥ ३१ पाप तणा फल कड़वा बताय [illegible] श्रावक जगाया रे। सुण सुणने वैराग्य किया ज्य[illegible] फूल लिया छोड़ी हाथो रे॥ च०॥ ३२॥ फूल गा[illegible]

ने काचो पाणी, कोई जोरो दावे ले खोसी रे। जे कोई वस्तु छुड़ावे बिना मन, इण विध धर्म न होसी रे ॥च० ॥३३॥ भोगीना कोई भोगजु रून्धै, वले पाड़े अन्तरायो रे। महामोहनी कर्म जु वांधे, दशाश्रुतखन्ध मे वतायो रे ॥ च० ॥ ३४ ॥ देव गुरु धर्म रै कारण, मूढ हणै छः कायो रे। उलटा पड़िया जिन मारगथी, कुगुरां दिया बहकायो रे ॥ च० ॥ ३५ ॥ धर्मरे कारण श्रावक न्यौंतरिया, मन में अधिक हुलासो रे। आरम्भ करी जिमायां धर्म जाणै, तो बोध बीजरो नाशो रे ॥ च० ॥ ३६ ॥ श्रीवीर कह्यो आचारांग मांही, ते ओलखायो तन्तसारो रे। समदृष्टि धर्म रै कारण, नहीं करै पाप लिगारो रे ॥ च० ॥ ३७ ॥ एकेन्द्रियमारी ने पचेन्द्रिय पोषै, तो निश्चय बांधै कर्मों रे। मच्छ गलागल ते चौड़े मांडी, पाखंडियांरो धर्मो रे ॥ च० ॥ ३८ ॥ लोही सूं खरड्यो पीताम्बर, लोही सूं किम धुपावे रे। तिम हिन्सा में धर्म किहांथी, जीव उज्ज्वल किम थावे रे ॥ च० ॥ ३९ ॥ कहै म्हे पाप करां थोड़ोसो, पछै होसी धर्म अपारो रे। सावद्य काम करां इण हेतु, तिणथी खेवो पारो रे ॥ च० ॥ ४० ॥ चतुर्विध संघना कोठा ठाख्या, पाछल भव दान वतायो रे। सनत्कुमार इन्द्र हुवो तिणथी, ए पिण झूसा वायो रे ॥ च० ॥४१॥ ए तो

पूछा वर्त्तमान काले, पाछल भव महिं चाली रे। फन्द
मांहि न्हाखे अजाण लोकांने, कुबुद्धि हिया में घाली रे
॥ च० ॥ तीन कालरी समझ पड़े नहीं, ते हेतने सुख
बतावे रे। चयारूं ही आहारनो नाम लेईने, गोला
धांय चलावे रे ॥ च० ॥ ४३ ॥ चोखो सिन्याण धर्म
काह्यो जिन, दान सिनांन बतायो रे। आठवां अध्ययन
ज्ञाता मांही, घणा लोक दिया भरमायो रे ॥ च० ॥
४४ ॥ जिम कोई सावद्य दान हटाई, मनमांहि कोप
कलिपायत रे। लोकां ने मन गमता बोले, चोखो
जोगण रा फिड़ायत रे ॥ च० ॥ ४५ ॥ आ सरधा सुख-
देव सन्यासी, सहस्र जणा शिष्य जाणी रे। सेठ सुदर्शन
तिण रो भक्त, छाड़ मों ज्यां रह्याणी रे ॥ च० ॥ ४६ ॥
कर्म थोड़ा ने सुलटा समझ्या, अन्तगंत निर्णय कीधो रे।
थावरच्चा अणगार प्रतिबोध्या जद, खोटा छोड़ संयम
लीधो रे ॥ च० ॥ ४७ ॥ अम्बड़ ना शिष्य सात सौ हुआ,
अणादियो नहीं लीधो रे। काचो पाणी अधर्म जाणीने,
अणसिन्यां अणसण कीधो रे ॥ च० ॥ ४८ ॥ जे कोई
छिन्नके दातार तिण ने, रूपैं वहरावतो पाणी रे।
[illegible] अदत्त रो लेतो, इमहिज दातार जाणी रे ॥
च० ॥ ४९ ॥ [illegible] पुरुषां ना दान जणा री, [illegible]
[illegible] रे। दातार ने काई धर्म कहे तो, [illegible]

तीर्थां नो बाणी रे ॥ च० ॥ ५० ॥ सम्यकित गंवाई नन्दन मणियारे, सांची श्रद्धा भांगी रे। तेलो करी तीन पोषा ठाया, भूख तृषा अति लागी रे ॥ च० ॥५१॥ सङ्गत पाखण्डियां री करने, उलटो मारग लीधो रे। धन्य धन्य कूवा तालाव खुदावे, त्यां सफल जमारो कीधो रे ॥ च० ॥ ५२ ॥ पोषो पार श्रेणिक ने पूछी, पोषरणी बाव खिणाई रे। धन खरची जश लियो लोकां मे, वली दानशाला मण्डाई रे ॥ च० ॥ ५३ ॥ सोलह रोग शरीर मे उपना, मुवो आर्त्तध्यान ध्याई रे। आप खिणाई मे जाय उपज्यो, डेडक नो भव पाई रे ॥ च० ॥५४॥ आर्द्र कुमार ने ब्राह्मण बोल्या, छोड़ तूं सगला परचा रे। म्हारो धर्म उत्तम ने उज्वल, सुण तूं म्हारी चर्चा रे ॥ च० ॥ ५५ ॥ दोय सहस ब्राह्मण जिमायां, परलोक मे सुखदायक रे। देव हुवे पुण्य खन्ध निपजावे, वेद तणा ये बायक रे ॥ च० ॥५६॥ आर्द्र कुमार कह्यो ए पाल ने, नित्य जिमाड़े तेही रे। दोय सहस ब्राह्मण ने दाता, नरके पहुंचे वेही रे ॥ च० ॥ ५७ ॥ मंजारी जिम रस ना गृद्धी, कह दियो काण न राखी रे। धर्म पुण्य नो अंश न भाख्यो, सूयगडांग छे साखी रे ॥ च० ॥ ५८ ॥ भृगू पुरोहित कह्यो बेटा ने, सुण तूं म्हारी शिक्षा रे। वेद भणी ब्राह्मण जिमाड़ी, पछे

लेजे दीक्षा रे ॥ च० ॥ ५९ ॥ कहै ब्राह्मण जिमायां ए
फल लागे. पहुंचावे तमतमा रे। उत्तराध्ययन चौदमे
भाख्यो. ए तो छे सावद्य धर्म रे ॥ च० ॥ ६० ॥ खोटी
श्रद्धा ने हीणाचारी, पूजा श्लाघा रा भूखा रे। कर्म वश
ने मुगटो न सूझे, कदाग्रह करवा ढूका रे ॥च०॥६१॥
रात भूला ते आशा राखे, दिने सूझसी सूला रे।
कहोनी आशा किण विध राखे, दिन दोफारां रा भूला
रे ॥ च० ॥६२॥ भाव मारग थी भूला अज्ञानी, उजड़
खलिया जायो रे। मन मांही आशा मुक्ति री राखे,
पिण दिन दिन अलगा थायो रे ॥ च० ॥ ६३ ॥ सूत्र
नी चर्चा अलगो मेली, लोक करे पखपाती रे। सांची
श्रद्धा किण विध आवै. हुवा घणां रा साथी रे ॥ च०
॥ ६४ ॥ जो थांरे दिल मे कांइयन वैसे, तो मगनी
झगड़ो चूको रे। ममता आदर ने ममता छोड़ो, जिण
तिण आगे मत झूको रे ॥ च० ॥ ६५ ॥ अनंत ओलखी
उत्तम प्राणी छोड़ दो राग ने द्वेषो रे। मानव रो भव
अफलो मत हारो, परभव मांहमो देखो रे ॥ च० ॥६६॥
गउले पोखली जीमण कीधो. ते तो आपणो छांदे रे।
जिम ने मरावे ते मूढ़ अज्ञानी कर्म तणा पुञ्ज बांधे रे
॥ च० ॥ ६७ ॥ तिण जीमण ने माठा जाणी, पांचां का
[illegible] रे। पछी रे दिन पांचा जु पचख्यो, आ

बड़ो वैरागी रे ॥ च० ॥ ६८ ॥ उपला श्रावक पोखली घर आया, विनय कियो शीश नमायो रे। ते तो छान्दो आप रो जाणो, भगवन्त नाहीं सिखायो रे ॥ च० ॥६९॥ नमस्कार अम्बड़ नें कियो चेला, सूत्र उववाई मे चाल्यो र। भगवन्त भाव दीठा जिम भाख्यो, जिन धर्म में नहो घाल्यो रे ॥ च० ॥ ७० ॥ नवकार ना पद पांच परूप्या, श्रावक ने दियो टालो रे। जिन आज्ञा नहिं गृहस्थ वन्दन री, थे भगवन्त वचन सम्भालो रे ॥ च० ॥ ७१ ॥ मांहो मांही विनय वैयावच्च कियां, श्री वीर नाहिं बखाण्या रे। गृहस्थ रा कार्य सावद्य दीठा, मन कर भला न जाण्या रे ॥ च० ॥ ७२ ॥ कहै म्हे अव्रत सेवां तिण मे, जाणां छां बंधता कर्मों रे। पिण कोई अव्रत सेवावे म्हांने, हुवे छै तिण ने धर्मों रे ॥ च० ॥७३॥ ए श्रद्धा श्रावक नहि राखे, नहीं दे किण ने दग्गो रे। धर्म ठिकाणे झूठ बोलै तो, जिन शासन से ठग्गो रे ॥ च० ॥ ७४ ॥ आप तो अव्रत से आणे, भोलां ने दे धर्म बताई रे। श्रावक एहवो झूठ न बोलै, जिन धर्म मांही आई रे ॥ च० ॥ ७५ ॥ साधां ने कोई अशुद्ध बहरावे, तो गर्भ में आडो आवे रे। श्रावक ने कोई सचित्त खुवावै, ते शुद्ध गति किण विध जावे रे ॥ च० ॥ ७६ ॥ एक एक मानव कर्म तणे वश, कर रह्या

उन्धी ताणो रे। सचित्त अशुद्ध रोकड़ दो म्हांने, ऐसो धर्म शङ्का मत आणो रे॥ च०॥ ७७॥ पेट रे कारण अनर्थ भाषे, परभव साहमो न जोवे रे। वले पखपात करे कुगुरां रो, मानव रो भव खोवे रे॥ च०॥ ७८॥ दान शील तप भावना चारूं, ये सेव्यां मुक्त जावे रे। तिणमें दान सुपात्र आयो, ते अव्रत में नहीं ल्यावे रे॥ च०॥ ७९॥ समचे दान मे धर्म कहे त्यां, नहीं जाणी जिन धर्म शैली रे। आक ने गाय नो दूध अज्ञानी, कर दियो भेल सभेलो रे॥ च०॥ ८०॥ अव्रत में दान लेवे पेला रो, मोक्ष रो मार्ग बतावे रे। धर्म कह्यां बिना लोक न देवे, जब कूड़ा कपट चलावे रे॥ च०॥ ८१॥ और जायगां धन देतां देखी, खबर तूं किणरे लेखे रे। ए श्रावक सुपात्र त्यांने, दे तूं दान विशेषे रे॥ च०॥ ८२॥ कल्पे ते वस्तु श्रावक ने देवे, गोत्र तीर्थंकर बांध्यो रे। एहवो धर्म अनार्य भाषे, ते किण विध मार्ग साध्यो रे॥ च०॥ ८३॥ आगारी ने सुपात्र कह्यो कहो, मानो कर माहात्म्य दिखावे रे। तिण रे [illegible] वीर अभागी, समकित किण विध आवे रे॥ च०॥ ८४॥ [illegible] करे व्याज बोहरा पासे, सुपात्र माने [illegible] रे। [illegible] सगपण आगा ने सोमर, वले बेटा बेटी [illegible] रे॥ च०॥ ८५॥ साधां रे आहार पाणी ने

बधै तो, परठै एकान्त जायो रे। इग्यारमी पड़िमा रो श्रावक मांगै तो, तिण ने न दे किण न्यारो रे॥ च० ॥ ८६ ॥ धरती परठ्यां तो व्रत रहै छै, दियां दोष उघाड़ो रे। पञ्च महाव्रत लूलगा तिण मे, सगलां मे पड़ै बघारो रे॥ च० ॥ ८७ ॥ धरती परठ्यां तो अर्थ न आवै, आ करणी नहीं नीची रे। दीधां दिरायां भलो जाण्यां, तिण सावद्य अव्रत सींची रे॥ च० ॥ ८८ ॥ जघन्य मध्यम उत्कृष्टा श्रावक, तीनां री एकज पान्तो रे। अव्रत छै सगलां री माठी, तिण मे मत जाणो भ्रान्तो रे॥ च० ॥८९॥ कोई श्रावक रा व्रत लेइ साधां पा, आयो जिण दिशि जायो रे। मारग मे दोय मन्त्री मिलिया, ते बोलै जुदी जुदी बायो रे॥ च० ॥ ९० ॥ एक कहै व्रत चोखा पालो. ज्यूं कटै आठूं ही कर्मों रे। काल अनाद रो रुलतै रुलतै, पायो जिनजी रो धर्मो रे॥ च० ॥ ९१ ॥ एक कहै तूं आगार सेवै, सचित्तादिक सर्व सम्भालो रे। यत घणा करजे डीलां रा, वले कुटुम्ब तणो प्रतिपालो रे॥ च० ॥९२॥ व्रत पालण री आज्ञा दीधी, ते धर्म रो मन्त्री मोटो रे। अव्रत री आज्ञा दीधी तिण ने, ज्ञानी तो जाणै खोटो रे॥ च० ॥ ९३ ॥ गुरु तो मिलिया जावक अन्धा, चेला पूरा निरन्धो रे। ए तो जाल रच्यो तिण चौड़े, कोई श्राय

पड़े तिण फन्दो रे ॥ च० ॥ ९४ ॥ न्याय री चर्चा रो काम पड़े तो, एक होय झगड़े लड़णो रे। पाखण्डियां सूं जाय मिलिया, वले लियो लोकां रो शरणो रे ॥ च० ॥ ९५ ॥ अति दुष्टी हुवे हिंसा धर्मी, निन्दा करे पर पूठे रे। कोई खांचाताण साधां पे आणे, तो अवगुण लेने ऊठे रे ॥ च० ॥ ९६ ॥ कहे दान दियो तीर्थंकर तिण में, जाणे क्यां काटिया कर्मो रे। ते तो सोनइया देवां आणि दीधा, त्यांने हुन्तो दीसे धर्मो रे ॥ च० ॥ ९७ ॥ कर्म कटे जो सोनइया सांटे, तो करणी नहीं करता रे। इण मारग थी शिवपुर पहुंचे, तो घर छोड़ दुःख में न पड़ता रे ॥ च० ॥९८॥ सोनइया दीधां कर्म कटै तो, वर्ष री जैज न पाड़ता रे। सगलां रा घर भर सोनइया, देता कर्म बिडारता रे ॥ च० ॥ ९९ ॥ कहे लोभ्यां पाप ने दीधां धर्म, तिण लेखे रह गया कोरा रे। देवां कने सूं मनुष्यां ने दीधा, पड़िया भव-कूपा फेड़ा रे ॥ च० ॥ १०० ॥ एक क्रोड़ आठ लाख सोनइया निकल्या वर्षी दान देई रे। मुक्ति रो मारग तिण में नहिं जाण्यो, संवर निर्जरा नहीं थई रे ॥ च० ॥ १०१ ॥ वर्षी दान अशास्वत जाण्यो, छद्मस्थपणा मांहि अव्रतकी रे। तीर्थंकर ने देव देवें अव्रती, त्यां पिण वर्षी न जाण्यो रे ॥ च० ॥१०२॥ भगवन्त दीक्षा लीधे

तिण काले, चढिया अत्यन्त वैरागो रे। सावद्यदान सिनांन सोनइया. माठा जाणी दीधा त्यागो रे॥ च०॥ १०३॥ भग्गु पुरोहित धन छोड़ि निसरियो. इक्षुकार राजा मंगायो रे। धनसूं धर्म करीने कर्म कटै तो, अहलो सांटै कांय गमायो रे॥ च०॥ १०४॥ घर छोड़ै त्यांमें अल्प घणो थो, आलस्य कर आघो न काढ़त रे। धन सूं धर्म हुवै तो करने, काम सिराड़ै चाढ़त रे॥ च०॥ १०५॥ धर्म री धुरा धन सूं न चालै, भग्गू ने कह्यो वेटा दोई रे। मांहो मांही धन दियां धर्म्म थापै, ते गया जमारो खोई रे॥ च०॥१०६॥ ऋषभ-दत्त ब्राह्मण देवानन्दा, वाणी सुण आयो वैरागो रे। ते पिण छोड़्यो धन अधर्म जाणी, धर्म हुंतो तो न काढ़त आगो रे॥ च०॥ १०७॥ कहे आरा मोसर दायजा-दिक में, मिश्र धर्म कर रह्या ताणो रे। राय उदाई राज्य दियो भाणेजाने, तिण लेखै मोटो लाभ जाणो रे॥ च०॥१०८॥ परिग्रह छै अनर्थ रो कारण, करे बोध बीज री घाता रे। श्रीवीर कह्यो दशमा अङ्ग मांही, ए नरक तणो छै दाता रे॥ च०॥ १०९॥ ठाम ठाम सूत्र सिद्धान्त मे, धन सूं धर्म्म न थायो रे। किण विध कर्म कटै दातार रा, अव्रत मांहीं आयो रे॥ च०॥ ११०॥ जंबु कुंवर आठ परणी आयो, दायजे

न्यायो व्यापारी रे। क्रोड़ निन्नाणुं तो पहरावणी रा, वले घर में कुन्ती ऋद्धि भारी रे ॥ च० ॥१११॥ कनक कामिनी सुं विरक्त भाव, उत्तम चारित्र लीधो रे। वैराग्य पाणी धन छोड़ि दियो, पिण धन में धर्म न कीधो रे ॥ च० ॥ ११२ ॥ बीस सहस्र सोना रूपारा आगार, खुटै नहि अखुट भण्डारो रे। चक्रवर्त्ती कः [illegible] रो साहिब, तिण री ऋद्धि रो घणो विस्तारो रे ॥ च० ॥ ११३ ॥ छकीं ऋद्धि में काल कियो तो, नरके [illegible] बांधी कर्मी रे। दुर्गति टल जावे धन दीधां तो, धन [illegible] करता धर्मी रे ॥ च० ॥११४॥ श्रावक तो तिण [illegible] भूता, धन गिवा ने त्यागी रे। यांने दीधां उद्धार [illegible] तो, [illegible] उत्तरता भव पारी रे ॥ च० ॥११५॥ चित्त [illegible] समभावण, साधु श्रावक धर्म बतायो रे। [illegible] दुर्गति मांय विराजे, छठो म कह्यो उपायो रे ॥ च० ॥११६॥ कहे साधु अहार करे अव्रतमें, संयमरो [illegible] रे। ए तो वचन अनार्य केरा, तिण आदरियां [illegible] रे ॥ च० ॥ ११७ ॥ अव्रत ने प्रमाद बेहूं में [illegible] के [illegible] रे। आठो [illegible] त्यांरो उभो अह्यो, [illegible] मिथ्यात्वक पक्को रे ॥ च० ॥११८॥ सावां तो [illegible] बापरो नहि आगारा रे। अव्रत [illegible] ने [illegible], ते निश्चय नहिं अणगारा।

॥ चं० ॥११९॥ चार गुण ठाणा एकलो अव्रत, श्रावक मे दोनूं पावे रे। साधांरे अव्रत मूल नहीं छै, कुबुद्धि कूड़ चलावे रे ॥ च० ॥ १२० ॥ अव्रत मे साधु आहार करे तो, जिन आज्ञा नहिं देता रे। पाप जाणता तो मौन साधता, ए पिण आज्ञा न लेता रे ॥ च० ॥१२१॥ प्रत्यक्ष पाप जाणे आहार कियां मे, कर्मतणो बन्ध होयो रे। तो गुरुरी आज्ञा लेई मूरख, गुरुने कांय डुबोयो रे ॥ च० ॥ १२२ ॥ गुरुनी आज्ञा ले पाप करणरी, ते तो मिलिया छै अनार्य रे। विनय सहित कोई सावद्य सेवै, तिण मोटो कीधो अकार्य रे ॥ च० ॥ १२३ ॥ ते गुरु पिण मिलिया अत्यन्त अज्ञानी, कर्म कारी सूझो भूण्डो रे। पाप करणरी आज्ञा देने पोते, अहलो सांटे कांईं वूडो रे ॥ च० ॥ १२४ ॥ चेलांने आज्ञा अव्रतरी देने, घाल्यो पाप मे सीरो रे। देखो अक्ल गयी उण गुरुरी, उणरे कांय पड़ीयो भीरो रे ॥ च० ॥ १२५ ॥ पाप करण री जे आज्ञा देसी, ते निश्चय होसी भारी रे। कुण चेलो गुरुने गुरुभाई, जोयज्यो ज्ञान विचारी रे ॥ च० ॥ १२६ ॥ साधु आहार कियां प्रमादने अव्रत, तो दातार ने नहीं धर्म्मी रे। अव्रत ने अव्रत मांहि घाल्यो, तो दोनांरे बधिया कर्म्मी रे ॥ च० ॥ १२७ ॥ कर्मतणे वश मूढ अज्ञानी, संवली सीख न धारे रे।

आप डूबे अव्रत मांहीं ल्याई, तो दूजां ने किण विध तारे रे ॥ च० ॥१२८॥ साधु आहार कियां पाप परूपे, तिणरे मोह मिथ्यात्वरो चालो रे । त्यां तीनूं ही कालरा ऋषीश्वरां रे, दियो अणहुन्तो आलो रे ॥ च० ॥१२९॥ आहार करणरी शुद्ध साधुने, भगवन्त आज्ञा दीधी रे । तिण मांही पाप बताई अज्ञानी, खांच गला मे लीधी रे ॥ च० ॥ १३० ॥ जो थाने समझ पड़े नहीं पूरी, तो राखो जिन प्रतीतो रे । आज्ञा मांहीं पाप परूपो, ज्यांरा म करो अनीतो रे ॥ च० ॥१३१॥ जिन आज्ञा मांही पाप परूपे, ते भूला भ्रम अज्ञानी रे । आज्ञा बाहर धर्म बतावे, त्यांने किण विध कहिजे ज्ञानी रे ॥ च० ॥१३२॥ गुण विन स्वांग धरे साधांरो, करे विकथांरा थापा रे । छः कारण विना आहार करे तो, तिणने छे एकान्त पापा रे ॥ च० ॥ १३३ ॥ छः कारण साधु आहार करे तो, जिन आज्ञा नहि लोपी रे । पाप तिणाने किण विध लागे, मत्सर कर आत्म गोपी रे ॥ च० ॥ १३४ ॥ निरवद्य गोचरी ऋषीश्वरांरी, मोक्ष री साधन मार्ग रे । पाप कर्म आहार करतां न लागे, [illegible] भाख्यो रे ॥ च० ॥१३५॥ सात कर्म साधु [illegible] आहार करे तिण काली रे । शुद्ध भोगवियां [illegible], सूत्र भगवती सम्भाली रे ॥ च० ॥१३६॥

सेलक यक्ष काम्धे ले निकलियो, रेणादेवीसूं राखी प्रीतो रे। अनुकम्पा आणी सामो जोयो, ते जिन ऋषि हुवो फजीतो रे ॥ च० ॥ १३७ ॥ सेलक यक्ष जिम संयम जाणो, रेणा देवी ज्यूं अव्रत मेली रे। मुक्ति नगर ने सन्त निकलिया, त्यां अव्रत छोड़ी पहली रे ॥ च० ॥ १३८ ॥ सेलक यक्ष ने रेणा देवी, माहो मांही नाहीं मिलापो रे। व्रत सुधर्म ते पार पहुंचावे, अव्रत लगावे पापो रे ॥ च० ॥ १३९ ॥ रेणा देवी एक भव दुःखदायक, अव्रत अनन्ता कालो रे। सांसो हुवे तो ज्ञाता मांही, नवमो अध्ययन सम्भालो रे ॥ च० ॥ १४० ॥

॥ ढाल दूजी ॥

(चतुर विचार करी ने देखो एदेशी)

सूयगडांग अध्ययन इग्यारमें, दान रो कियो निचोड़ो रे। मूढ़ मिथ्याती विवेक रा विकल ते, करे अणहूंतो झोड़ो रे ॥ च० ॥१॥ सोलहवी गाथा सूं ले इकवीसमी तांई, छः गाथा रो अर्थ छे सूंधो रे। त्यां सावद्य दान में मिश्र थापण ने, अर्थ करे छे ऊन्धो रे ॥ च० ॥ २ ॥ ते सावद्य दान संसार रो कारण, तिणमे निरवद्य रो नहीं भेलो रे। संसार ने मुक्ति रो मारग न्यारो, ते कठे ही न खावे मेलो रे ॥ च० ॥ ३ ॥ ये छः गाथां रा अर्थ

छे भारी संधा, त्यांरो निर्णय कीजो बुद्धिमानो रे। ते अर्थ विवरा शुद्ध छे त्यांरो, ते सुणज्यो सूरत दे कानो रे ॥ च० ॥ ४ ॥ दान रे अर्थे जीव हणे त्यांने, साधु तो भलो न जाणे रे। देवे सत्तूकार खुदावे कूवादिक, लाभ जाणे श्रद्धा प्रमाणे रे ॥ च० ॥ ५ ॥ ते आय साधां ने प्रश्न पूछे. आरम्भ लियां बोले वाणी रे। इण करणी में पुण्य हुवे कि नाहीं, जब साधु धारे मौन जाणी रे॥ च० ॥ ६ ॥ पुण्य पिण साधु न कहे तिण ने, वले न कहे थारे पुण्य नाहीं रे। दोनूं प्रकारे महा भय रो कारण, मौन करे ते कारण कांई रे ॥ च० ॥७॥ दान रे कारण लोक करे छे, त्रस स्थावर नी घातो रे। पुण्य कह्यां त्यांरो दया उठे छे, दया बिन नहीं पुण्य साक्षातो रे ॥ च० ॥ ८ ॥ असयती ने उदेरो उदेरो, आरम्भ कर अन्न पाणी रे। पुण्य नहीं कह्यां अन्तराय छे, ओतिण कारण जाणी रे ॥ च० ॥ ९ ॥ साधु तो अन्तराय किण ने न देवे. उण वेलां त्रिकरण क्यांने फिलाये रे। चर्चा रो काम पड्यां तिण काले, जुदे जिसा फल बतावे रे ॥ च० ॥१०॥ जे कोई दान प्रशंसे तिण ने, कह्यो छः काया रो घाती रे। ते देवे दिरावे त्यांरो सूं कह्यो, ते पिण उणां रा साथी रे ॥ च० ॥ ११ ॥ हिंसा झूठ चोरी कुशील [illegible] ने [illegible] सदा [illegible] रे। तो कारण सूं कार-

वध वाता री, किण विध होसी उद्धारो रे ॥ च० ॥१२॥ कोई गांव जलावे ने गायां काढ़ावे. इत्यादिक कार्य सब भूँडा रे। त्यांने सरावे ते बूड़ गया छे, तो कारणवाला विशेष बूड़ा रे ॥ च० ॥ १३ ॥ ज्यूं सावद्य दान प्रशंसे तिण ने, कह्यो छः काया री घाती रे। देवे तिण ने मिश्र धर्म कहे, तिण ने कहीजे मूढ़ मिथ्याती रे ॥ च० ॥ १४ ॥ माठा काम सरायां बूड़े छे, तो कीधां बूड़सी गाढो रे। ए श्रद्धा सुण सेंहठी धारो. थे शल्य अभ्यन्तर काढो रे ॥ च० ॥ १५ ॥ सावद्य दान प्रशंसे तिण ने, माठा फल कह्या जिनरायो रे। हिवे दान नहीं निषेधणो साधु ने, ते पिण सुणज्यो न्यायो रे ॥ च० ॥ १६ ॥ दातार दान देवे तिण काले, लेवाल लेवे धर प्रीतो रे। जव साधु कहे मत दे इण ने, निषेधे नहीं इण रीतो रे ॥ च० ॥१७॥ जो दान देता साधु निषेधे, तो लेवाल रे पड़े अन्तरायो रे। अन्तराय दियां फल काड़वा लागे, तिण सूं निषेधे नही इण न्यायो रे ॥च० ॥ १८ ॥ अन्तराय सूं डरता साधु न बोले, और परमार्थ मत जाणो रे। ते पिण मौन छे वर्त्तमान काले, बुद्धिवन्त करज्यो पिछाणो रे ॥ च० ॥ १९ ॥ उपदेश देवे साधु तिण काले, दूध पाणी ज्यूं करे निवेरो रे। बिन बतायां चार तीर्थ में, किण विध मिटे अन्धेरो रे

॥ च० ॥ २० ॥ दोनूं भाषा साधु नवि बोले, पुण्य छे
अथवा पुण्य नाहीं रे। ते पिण वर्जी वर्त्तमान काले
भाखी. थे सोच देखो मन मांही रे ॥ च० ॥२१॥ कोई
दाते पुण्य कहणो न कहणो वर्ज्यो, तो पुण्य में पाप री
भेल जाणो रे। तिण सूं मिश्र ठिकाणो ले उठ्या
अज्ञानी, वार वार ऊन्धो ताणो रे ॥ च० ॥ २२ ॥ पुण्य
छे कि नहीं प्रश्न पूछ्यां, पाप रो कथन न चाल्यो रे।
मिश्र री श्रद्धा वाले अज्ञानी, घोचो मिश्र रो घाल्यो रे
॥ च० ॥ २३ ॥ दान में मिश्र नहीं जिन भाख्यो, पुण्य
कहो कै पापो रे। सुपात्र सूं पुण्य कुपात्र सूं पाप, पिण
मोटो मिश्र री थापो रे ॥ च० ॥ २४ ॥ वली सूयगडांग
अध्ययन इग्यारमें, दोय बात जिन भाखी रे। त्यां
पिण न कह्यो छे मिश्र ठिकाणो, जोवो वत्तीसवीं गाथा
साखी रे ॥ च० ॥ २५ ॥ दातार ने देतां लेवाल ने
लेतां. साधु इमड़ो देवे जवाब्यो रे। गुण अवगुण न
कहे तिण काले, मौन करे पचाख्यो रे ॥ च० ॥ २६ ॥
जिण दान तणा साधु गुण करे तो, असंयम नी अनु-
मोदना लागे रे। ने असंयम छे पहलो अधर्म, अनु-
मोद्यां संयम भांगे रे ॥ च० ॥ २७ ॥ तिण दान ने
साधु भलो न जाणे, भलो जाण्यां बंधे पाप कर्म रे।
[illegible] दान तणा दाता ने, किण विध [illegible]

मिश्र धर्मो रे ॥ च० ॥ २८ ॥ पाप अनुमोद्यां पाप लागै छै, धर्म्म अनुमोद्यां धर्म्म होयो रे । तो मिश्र अनुमोद्यां मिश्र चाहिजे, ते मिश्र न दीसै कोयो रे ॥ च० ॥ २९ ॥ दान देवै दिरावै भलो जाणै, ये तीनूं री एक पांती रे । पुण्य पाप मिश्र होसी तो तीनूं ने, तिण में मत राखो भ्रान्ती रे ॥ च० ॥ ३० ॥ तिण दान तणा गुण साधु करै तो, असंयम री अनुमोदना लागै रे । ते दान असंयम में जिन थाप्यो, अवगुण कह्यां री बोलतो छै आगे रे ॥ च० ॥ ३१ ॥ दान तणा अवगुण कीधां में, लेवाल रै पड़े अन्तरायो रे । अन्तराय देणी तो साधु ने न कल्पै, तिण सूं मौन करै मुनिरायो रे ॥ च० ॥ ३२ ॥ इण न्याय साधु ने मौन कही छै, पिण मिश्र नहीं जाणै तिण मे रे । इण दान मे मिश्र धर्म थापै, तो कोरी मिथ्यात्व छै उणमे रे ॥ च० ॥३३॥ गुण कह्यां असंयम अनुमोदीजे, अवगुण कह्यां तो लागै अन्तरायो रे । इण दोनां सूं डरतो साधु नहिं बोलै, अठै मिश्र किहां थी थायो रे ॥ च० ॥ ३४ ॥ साधु मौन करै ते वर्त्तमान काले, उपदेश मे मौन न राखै रे । द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव देखै, तो हुवै जिसा फल दाखै रे ॥ च० ॥ ३५ ॥ मिश्र थापणने मूढ अज्ञानी, छल छिद्र रह्या नित्य देखी रे । और बोल मिश्रना घणा छै सूत्र में, त्यांमें मिश्र-

दान दे टेको रे ॥ च०॥३६॥ कोई कहे पाप कहे ति[illegible]
देतां पाल्यो. दूसड़ो बोले वाणी रे। ये दोनूं भाषा[illegible]
एकानु ग्रहे. ते भाषारा मूढ अयाणी रे ॥ च० ॥ ३७॥
कोई कहे पाप कहे तिण दान निषेध्यो. ते पि[illegible]
भाषारा अयाणो रे। सावद्य दान थापणने पक्षानी,
बोले छे ऊन्धी वाणो रे ॥ च० ॥ ३८ ॥ दान देता [illegible]
[illegible] तूं मत दे दुणने, तिण पाल्यो निषेध्यो दानो रे।
पाप हूंतो ने पाप बतायो. तिणरो छे निर्मल ज्ञानो रे ॥
च० ॥ ३९ ॥ असंयतिने दान दियां में, कह दियो
भगवन्त पापो रे। त्यां दानने वर्ज्यो निषेध्यो नाहीं,
[illegible] जिसी कीधी थापो रे ॥च०॥४० ॥ किण ही साधु
ने कह्यो आज पछे तूं, म्हारे घरे कदे मत आयो रे।
[illegible] कड़ा वचन नु बोल्या, हिवे साधु किस घर
[illegible] रे ॥ च० ॥ ४१ ॥ साधु ने वर्जे तिण घर में न
[illegible]. [illegible] तिण घरमें जायो रे। निषेध्यो न
[illegible] [illegible]. एकण भाषा में न समायो रे ॥च०
॥ ४२ ॥ जिम कोई दान देतां वर्जे रावे, कोई दीधां
[illegible] रे। ये दान री भाषा जुदी जुदी छै,
[illegible] एकण भाषा में न समावे रे ॥ ४३ ॥ कोई रां[illegible]
[illegible] देखी, त्यांरी अनुकम्पा मन आवे रे।
[illegible], रांकांरे छाप में पक[illegible]

ड़ावै रे ॥ च० ॥ ४४ ॥ धणी ने बिन पूछ्यां चोरी कर देवे, रांकांरी अनुकम्पा काजे रे। उणरी श्रद्धारे लेखै उणने ही मिश्र, अठे मिश्र कहतां कांय लाजे रे ॥च०॥ ४५ ॥ मालधणी ने दाह दीधो तिणरो, हुवो एकान्त पाप कर्मों रे। रांकांने दीधो ते अनुकम्पा आणी, उण लेखे ओ प्रत्यक्ष धर्मों रे ॥च० ॥४६॥ पैलारो धन खोस रांका ने देवै, तिणसे मिश्र कहै नाही रे। तो उठ गई मिश्ररी श्रद्धा उणांरे लेखै, सोच देखो मनमांहीं रे॥ च० ॥ ४७ ॥ पररो धन चोर रांकां ने दीधो, तिणसें मिश्र हुवे नाही रे। तो जावक जीव हणी रांक पोषै, अठै मिश्र कठै तिण मांही रे ॥ च० ॥ ४८ ॥ कोई चोरी करी रांकांने पोषै, कोई जीव हणी पोषै रांक रे। इण प्रत्यक्ष पाप मे मिश्र कहै त्यांरी, श्रद्धामें छे पूरो बांक रे ॥ च० ॥ ४९ ॥ असत्य ने मिश्र तो जावक छोड़णी, तिण बोल्यां बूड़ जाय वहता रे। जो मिश्र भाषा मे मिश्र हुवे तो, जावक छोड़णी नहीं कहता रे ॥ च० ॥ ५० ॥ रांकां ने पोषे घणा जीव हणने, त्यांने चोरी हिन्सा लागे दोय रे। ते चोरी त्यांरे. शरीररी लागी, जीव हण्यांरीं हिंसा होय रे ॥ च० ॥ ५१ ॥ रांकने परधन चोर देवै त्यांने, एक चोरी तणो पाप होय रे। ये दोनूं कर्त्तव्य करै अनुकम्पा आणी,

ते गया जमारो खोय रे॥ च०॥ ५२॥ परनी चोरी कार गांवां ने देवे, इण कर्त्तव्यसूं जो बूड़े रे। तो हिंसा करने कुपात्र पोषे, ते क्यूं बेससी नहिं कुण्डे रे॥च०॥ ५३॥ कहे अराधवी मिश्र भाषा छे, ते भाषा छे धर्म अधर्मी रे। अराधवी जिणरो छे एकान्त धर्म, विराधवी सूं लागे पाप कर्मी रे॥ च०॥ ५४॥ इम कहि कहि मिश्र करणी थापे, तिण करणी में कहे धर्म पापो रे। इम आंटी घाले छे सावद्य दान में, करे मिश्र धर्मरी थापो रे॥ च०॥ ५५॥ ते मिश्र भाषा छे सावद्य दान में, तिण बोल्यां बंधे पाप कर्मी रे। महा मोहिनी कर्म बंधे तिणसूं, तिणमें किहांथी धर्मी रे॥ च०॥५६॥ अराधवी विराधवी मिश्र भाषा कही, ते तो बोलवा मेले रे। अठे पाप धर्मरो कथन न चाल्यो, तिणरो मूरख्यां भेद विशेषे रे॥ च०॥ च०॥ ५७॥ अराधवी कही छे सत्य भाषाने, ते पिण बोलवा लेखे पिछाणो रे। ते साची भाषा छे सावद्य निरवद्य, तिण सावद्य में धर्म म जाणो रे॥ च०॥ ५८॥ सांची भाषा सावद्य मिश्र छे, अराधवी कही बोलवे लेखे रे। पण एकान्त पाप बंध मिश्र बोल्यां तो मिश्रमें कुछ पाप न देखे रे॥ च०॥ ५९॥ व्यवहार भाषाने कही छे जिनेश्वर, अराधवी विराधवी नाहिं रे। ते पिण कही छे बोलवा लेखे

धर्म अधर्म लिखो नहीं यांहीं रे ॥ च० ॥६०॥ धर्म अधर्म लेखे तो व्यवहार भाषा, अराधवी विराधवी जाणो रे। निरवद्यने तो अराधवी जाणो, विराधवी सावद्यने पिछाणो रे ॥ च० ॥ ६१ ॥ जो मिश्र भाषा धर्म अधर्म लेखे, अराधवी विराधवी होई रे । व्यवहार भाषा बोले तिण ने, धर्माधर्म न कोई रे ॥ च० ॥६२॥ जो सांची भाषा बोले धर्मरे लेखे, थापे अराधवी कीयो रे । तो सांची भाषा सावद्य बोल्यां, एकान्त धर्म जु होयो रे ॥ च० ॥ ६३ ॥ जो मिश्र भाषा सें मिश्र हुवे तो, सत्य भाषा में एकान्त धर्मो रे । व्यवहार भाषा तो शून्य हो जावे, बोल्यां न धर्म न पाप कर्मो रे ॥ च० ॥ ६४ ॥ ए तो बोलबा आश्री चारू भाषा, अराधवी विराधवी जाणो रे । अठै धर्म अधर्म रो कथन न चाल्यो, पन्नवणा सूं करज्यो पहिचाणो रे ॥ च० ॥ ६५ ॥ सत्य असत्य मिश्र ने व्यवहार, ये चार भाषा जिन भाषी रे। त्यांमें असत्य ने मिश्र तो जावक छोड़णी, जोवो दशवैकालिक साखी रे ॥ च० ॥ ६६ ॥ सत्य भाषा व्यवहार भाषा, ये तो सावद्य निरवद्य दोई रे । तो सावद्य टालने निरवद्य बोले, तो पाप न लागे कोई रे ॥ च० ॥ ६७॥ असत्य ने मिश्र जावक छोडणी, तिण बोल्यां वूड़ जाय वहता रे । जो मिश्र भाषा से मिश्र धर्म हुवे, जावक छोड़णी

नहीं कहता रे ॥ च० ॥६८॥ धर्म अधर्म आश्री चारूं भाषा, बोलवा नहीं बोलवा चाली रे। सत्य विचार विचारने बोलणी, असत्य मिश्र सर्व पाली रे ॥च०॥६९॥ तीसा बोलां बंधे महा मोहनी कर्म, ते एकान्त छे पाप कर्मी रे। तो मिश्र भाषा बोलै तिण मांहीं, किण विध होसी पाप धर्मी रे ॥ च० ॥७०॥ जो उणतीस बोलां में एकान्त पाप, तो मिश्र भाषा में एकान्त पापो रे। कोई मिश्र भाषा में मिश्र धर्म कहे छे, तिण आगम दिया उथापो रे ॥ च० ॥ ७१ ॥

॥ दोहा ॥

श्री जिन आगम मांहि इम कह्यो, धर्म अधर्म करणी होय। धर्म करणी में जिन आगन्यां, अधर्म करणी में आज्ञा नहीं कोय ॥ १ ॥ धर्म अधर्म करणी जुई जुई, ते कदे ही न खावे मेल। जे मूढ मिथ्याती जीवड़ा, त्यां कर दी भेल सभेल ॥ २ ॥ चतुर व्यापारी विणज करे, जहर ने अमृत दोय। मांगे ते वस्तु दे ग्राहक ने, मिल भेर नहीं दे कोय ॥ ३ ॥ विवेक विकल व्यापारी हुवे, तिण ने वस्तु री खबर न कांय। जहर घाले अमृत में, अमृत घाले जहर रे मांय ॥ ४ ॥ त्यांने वस्तु री

निगह पड़े नहीं, ते घाले और री और मांय। ते नाश करे दोनां तणो, तिम जाणो धर्म नो न्याय ॥ ५ ॥

॥ ढाल तीजी ॥

(चतुर विचार करी ने देखो पदेशी)

जो कोई घृत तंबाकू विणजै, पिण वासणारी विगत न पाड़े रे। घृत लेइने तम्बाकू में घाले, तो दोनूं ही वस्तु विगाड़े रे ॥च०॥१॥ जिम व्रतरो दान अव्रत मांही घाले, पिण वस्तुरी विगत न पाड़े रे। व्रतरी विगत पाड्यां विना वांहणा, सूनै चित्त दान पुकारै रे ॥ च० ॥ २ ॥ श्रावक मांहो मांहीं जीमै जिमावे, ते एकान्त आस्त्रव जाणो रे। तिण मांहीं धर्म परूपे अज्ञानी, ते,पूरा छै मूढ अयाणो रे ॥ च० ॥ ३ ॥ जीभ री औषध आख्यां में घाले, आंखरी औषध जीभ मे घाल्यो रे। तिणरी आंख फूटी ने जीभ भी फाटी, दोनूं इन्द्रिय खोय चाल्यो रे ॥ च० ॥ ५ ॥ जिम अधर्म रो काम धर्म में घाल्यो, धर्मरो काम अधर्म में घाले रे। ते दोनूं ही विध वूडा अज्ञानी, दुर्गति मांहीं चाले रे ॥ च० ॥५॥ सावद्य कर्त्तव्य में धर्म जाणै, निरवद्यमें पाप जाणे रे। सावद्य निरवद्य मे नहीं समझै, अज्ञानी थका ऊन्धी ताणे रे ॥च०॥६॥ सचित्त अचित्त दियां कहे पुण्य, शुद्ध

[illegible] दियां कहे पुण्यो रे। वले पुण्य कहे पात्र कुपात्र ने दीधां, यो मत जावक जबुनो रे॥ च०॥७॥ पात्र कुपात्र दोन्यांने दीधां, पुण्य कहे छे कर कर ताणो रे। तिण पात्र कुपात्र गिणिया सरीखा, ए पाखण्डियां रो बाणो रे॥ च०॥८॥ कुण्डाधर्मी कुण्डा बेठ जीमे जग, भला जीमे एकण कुण्डा मांयो रे। जात कुजात ने चोखो अचोखो, त्यांरो भिन्न न राखे कांयी रे॥ च०॥९॥ ज्यूं पात्र कुपात्र सर्व ने दीधां, पुण्य कहे एक धारो रे। यो मत कुण्डापन्थी जिम जाणो, किण मूं भिन्न न राखे निगारा रे॥ च०॥१०॥ कोई डाहवा [illegible] तो कुण्डापन्थ्यां ने, न्यात जात मूं जाणे भ्रष्टी रे। ज्यूं कुपात्र दान में धर्म कहे छे त्यांने ज्ञानी तो [illegible] मिथ्या दृष्टि रे॥ च०॥११॥ श्रीवीर कह्या सुपात्र ने दीधां, धर्म ने पुण्य दोनूं होई रे। कुपात्र दान में धर्म कहे ते, गया जमारो खोई रे॥ च०॥१२॥ श्रावक ने सुपात्र कहीने, तिण पोष्यां में धर्म [illegible] रे। [illegible] परूपणा कर कर पज्ञानी, [illegible] भमावे रे॥ च०॥१३॥ श्रावक ने [illegible] [illegible] कहे छे, [illegible] थांने छे मूढ अज्ञानी रे। त्यांने [illegible] [illegible] मिलिया, त्यांरी श्रद्धा माची [illegible] [illegible] रे॥ च०॥१४॥ [illegible] [illegible] [illegible] मिलियें,

जब कुण बतावै वाटो रे। ज्यूं श्रावक ने एकान्त सुपात्र थापे, त्यांरे अकल आड़ो आयो पाटो रे॥ च० ॥ १५ ॥ श्रावक ने एकान्त सुपात श्रद्धे, ते तो उठी अठा थी भूठी रे। निज गुण अवगुण सूल न सूझै; त्यांरी हिया निलाड़ी फूटी रे॥ च० ॥ १६ ॥ श्रावक सुपात व्रतां करी ने, अव्रत लेखे जहर रो वटको रे। अव्रतरो दूणरे काम पड़े जब, करै छः काया रो गटको रे॥ च० ॥१७॥ श्रावक सुपात व्रतां सूं हुवे, अव्रत लेखे अधर्मी जाणो रे। अव्रत रो दूणरे काम पड़े तो, छः काया रो करै घमसाणो रे ॥च०॥१८॥ श्रावक स्त्री सेवे सेवावे, वले परणीजे ने परणावे रे। तिणने एकान्त सुपात थापै, ते गाला रा गोला चलावे रे ॥च०॥१९॥ कोई श्रावक रे हुवे स्त्री हजारां, खासवान पासवान अनेको रे। एहवा भोगी भ्रमर ने सुपात जाणै, त्यांरे सूल मे नही विवेको रे॥ च० ॥ २० ॥ हिन्सा भूठ चोरी मैथुन परिग्रह, मेलै विविध प्रकारो रे। एहवा श्रावक ने एकान्त सुपात थापै, त्यांरे मत मे पूरो अन्धारो रे॥ च० ॥ २१ ॥ श्रावक लाखां बीघा खेती करे छै, क्रोड़ां मण काढ़े छै अणगल पाणी रे। त्यांने एकान्त सुपात कहै छै, आ कुदर्शण्यां री वाणी रे॥ च० ॥ २२ ॥ दमड़ां आजे पाघड़ा पड़े पड़ावे, आहमी साहमी पजारां चलावे रे।

एहवा श्रावक ने एकान्त सुपात्र कहतां, विकलां मे
लाज न आवे रे ॥ च० ॥ २३ ॥ कजियाखोर बथोकड़ा
लगिया, मन आवे ज्यूं बोले भूंडा रे । ममा चचा री गाळ
बस रही मुंहड़े, एकान्त सुपात्र कही कांय बूड़ा रे ॥
च० ॥ २४ ॥ कोई निर्लज्ज नागड़ा फाटा बोले, दोसे
उघाड़ा कुपात रे । त्यांने एकान्त सुपात कहे छे, त्यां
पिण कहीजे एहवा सुपात रे ॥ च० ॥२५॥ कोई दगा-
दगी रा विणज करे छे, कपड़ादिक नग बेचे बदला
रे । त्यांने एकान्त सुपात्र कही ने, विकलां ने विकल
भिळायें रे ॥ च० ॥ २६ ॥ आगे मोटा मोटा श्राव
हुआ, जीवादिक नव तत्व रा जाणी रे । रण संग्रा
म्हैणा तिण काले, घणा मनुष्यां रा किया घममाणो
॥ च० ॥ २७ ॥ एक कागादिक मारण रा त्याग किया
में, श्रावक री पांत मांझी रे । सावद्य काम बीजा मग
लाई, कुपात्र मांही ताड्यो रे ॥ च० ॥ २८ ॥ श्रावक
सुपात्र किण न्याय कहीजै, किण न्याय कहीजे असंयति
कुपात्र रे । सूत्र मांही जीवो भव जीवां, किया मांहि
यारी जमा ज्यारिर रे ॥ च० ॥२९॥ सूयगडांग अध्य
एक अट्ठारमें, तीन पक्ष तणा विस्तारो रे । धर्म अधर्म
मिश्र पक्ष तीजो, त्यांरा भेद छे न्यारा न्यारा रे ॥ च०
३० ॥ सर्व व्रती ने धर्म पक्ष कहीजे, अव्रती ने अध

पख जाणो रे। वले श्रावक ने कहीजे व्रती अव्रती, पण्डित बाल दोनूं पिछाणो रे ॥ च० ॥ ३१ ॥ श्रावक ने व्रतां करने संयति कहीजे, गुण रतां री खानो रे। व्रत आदरतां अव्रत रही ते, एकान्त अधर्म जाणो रे ॥ च० ॥ ३२ ॥ श्रावक रो खाणो पीणो ने गहणो, अव्रत मांहो घाल्यो रे। तिण मांहो धर्म कहे छे अज्ञानी, खोटो मत तिण झाल्यो रे ॥ च० ॥ ३३ ॥ पांच इन्द्रिय मोकली मेल्यां पाप कहे, मेलायां पिण लाग्यो पापो रे। पांच इन्द्रयां नी तेईस विषय छै, सेवायां पाप कह्यो जिण आपो रे ॥ च० ॥३४॥ श्रावक री रसेन्द्रिय कोई पोषे, विषय सेवाड़े तेवीसो रे। तिण मांहीं धर्म परूपे मिथ्यात्वी, ते बूड़ा छै बिसवावीसो रे ॥ च० ॥ ३५ ॥ कोई श्रावक ने असनादिक देवे, ते असंयति पणा मांह्यो रे। असंयति ने दान दे तिण रा, आछा फल किम लागे तायो रे ॥ च० ॥ ३६ ॥ असंयति ने दान दियां में, पाप कह्यो एकान्तो रे। भगवती सूत्र आठमे शतके, छठे उद्देशे कह्यो भगवन्तो रे ॥ च० ॥ ३७ ॥ श्रावक ने दान दे तिण रे करे प्रशंसा, ते ते परमार्थ रा अयाणो रे। श्रावक ने [illegible] म-छै, ते रूड़ी रीत पिछाणो रे ॥ च० ॥ ३८ ॥ श्रावक ने [illegible] ती एकान्त सुपात्र कहवा, इसड़ी बहु बांधे रे।

एकान्त सुपात्र न हुवे तो, चार तीर्थ में क्यूं जावे रे ॥ च० ॥ ३९ ॥ अधर्मी जीव चार गुणठाणा, श्रावक पांचमें गुणठाणो रे। बाकी नव गुणठाणा साधु श्रेणी-प्रवर, ए संसार में सर्व जीव जाणो रे ॥ च० ॥ ४० ॥ कोई मूढमति जीव अत्यन्त अज्ञानी, ते इसड़ी चर्चा आणे रे। श्रावक एकान्त सुपात्र न हुवे तो, चार तीर्थ कुण जाणे रे। ॥ च० ॥ ४१ ॥ चार तीर्थ ने कही रत्नां री माला, तिण माला रो भेद न जाणे रे। गुण अवगुण सर्व माला में घाले, अज्ञानी थका ऊन्धी ताणे रे ॥ च० ॥ ४२ ॥ चार तीर्थ गुण रत्नां री माला, तिण मांही अव्रत नहीं लिगारो रे। श्रावक रा व्रत माला मांही घाल्या, अव्रत ने काढ़ दोधी बारो रे ॥ च० ॥ ४३ ॥ अव्रत ने एकान्त अधर्म कहीजे, तिणमां पाप माठा माठा नामो रे। ते व्रत मांही किण विध आवे, समझाई मायदा कामो रे ॥ च० ॥ ४४ ॥ श्रावक ने एकान्त सुपात्र थापण, इसड़ी चर्चा ल्यावे रे। श्रावक एकान्त सुपात्र न हुवे तो, देवलोक में क्यूं जावे रे ॥ च० ॥ ४५ ॥ श्रावक जावे छे देवलोक मांही, ते तो समकित व्रत सूं जाणो रे। एक समकित सूं पिण देवलोक जावे श्रावक रे छे व्रत पचखाणो रे ॥ च० ॥ ४६ ॥ श्री भगवती सौधे गुणठाणे, ते एकान्त अव्रती

आणो रे। ते पिण देवलोक मांहि जावे छै, ते समकित गुण पिछाणो रे॥ च०॥ ४७॥ श्रावक देवलोक मांहि जावे छै, ते समकित व्रत मे पूरा रे। तिण रे पुण्य बंधे छै शुभ योग सूं, वले पाप कर्म करै दूरा रे॥च०॥४८॥ जे देवलोक जावे छै, निरवद्य गुण सूं, अवगुण से जावै दुर्गति जाणो रे। ज्यूं श्रावक पिण देवलोक जावे छै, ते गुणां री बहुलताई जाणो रे॥ च०॥४९॥ अभवी जीव एकान्त मिथ्याती, ते निश्चय कुपात्र ताहो रे। ते पिण कष्ट तणे प्रतापे, जावे नव ग्रैवेयक मांहीं रे॥ च०॥ ५०॥ ते तो समदृष्टि साधु श्रावक पिण नाहीं, नव ग्रैवेयक जावे रे। वले सन्यासी गोशाला मति, ते पिण वैमानिक थावे रे॥ च०॥ ५१॥ वले कृष्णपक्षो तिर्यञ्च मिथ्यात्वी, ते आठमें देवलोक जावे रे। देवलोक गयां मूं सुपात्र हुवे तो, ए पिण सुपात्र मे आवे रे॥ च०॥५२॥ बारह देवलोक ने नव ग्रैवेयक मांहीं, जीव गयो अनन्तो बारो रे। जो देवलोक गयां सुपात्र हुवे तो, जीव नही रुलतो अनन्त संसारो रे॥ च०॥ ५३॥ समदृष्टि ने सुपात्र कहीजे, ते समकित व्रत सूं जाणो रे। अव्रत सावद्य काम करे तिण सूं, एकान्त कुपात्र पिछाणो रे॥ च०॥ ५४॥ वले सुपात्र समदृष्टि ने कहिजे, समकित ने ज्ञान सूं जाणो रे। दूणरी

सावद्य कर्त्तव्य कीधां ते, कुपात्र पणा में पिछाणो ॥ च० ॥ ५५ ॥

साधु के आचार की ढालां

॥ ढाल पहली ॥

(भवियण जोवो रे हृदय विमासी परेशी)

आधाकरमी उदेशिक भोगवे तिणने, निश्चय कह्या अणाचारी। दशवैकालिक रे तीजे अध्ययने, शंका म जाणो लिगारी रे॥ भवियण जोयज्यो हृदय विमासी ॥१॥ आधाकरमी उदेशिक भोगवे तिणने, भिष्ट कह्या भगवान। दशवैकालिक रे छट्ठे अध्ययने, निरणो करो बुद्धिमान रे ॥ भ० ॥ २॥ आधाकरमी उदेशिक भोगवे तिणने, नर्कगामी कह्या भगवान। उत्तराध्ययन रे बीसमें अध्ययने निरणो करो बुद्धिमान ॥ भ० ॥ ३ ॥ आधाकरमी उदेशिक भोगवै, तिणरा छऊं व्रत भांग्या जाण। आचारांग रे दूजे अध्ययने जोय करो पिछाण रे ॥ भ० ॥ ४ ॥ आधा करमी उदेशिक भोगवै, तिणमें छै मोटी खोड़। आचारांगे पहिले श्रुत खंधे, कह दिया भगवंत चोर रे ॥ भ० ॥ ५ ॥ आधा करमी उदेशिक

सावद्य कर्त्तव्य कीधां ते, कुपात्र पणा में पिछाणो रे ॥ च० ॥ ५५ ॥

साधु के आचार की ढालां

॥ ढाल पहली ॥

(भवियण जोवो रे हृदय विमासी पदेशी)

आधाकरमी उदेशिक भोगवे तिणने, निश्चय कह्या अणाचारी। दशवैकालिक रे तीजे अध्ययने, शंका म जाणो लिगारी रे॥ भवियण जोयज्यो हृदय विमासी ॥१॥ आधाकरमी उदेशिक भोगवे तिणने, भिष्ट कह्या भगवान। दशवैकालिक रे छट्ठे अध्ययने, निरणो करो बुद्धिमान रे॥ भ० ॥ २॥ आधाकरमी उदेशिक भोगवे तिणने, नर्कगामी कह्या भगवान। उत्तराध्ययन रे बीसमें अध्ययने निरणो करो बुद्धिमान ॥ भ० ॥ ३ ॥ आधाकरमी उदेशिक भोगवे, तिणरा छऊं व्रत भांग्या जाण। आचारांग रे दूजे अध्ययने जोय करो पिछाण रे ॥ भ० ॥ ४ ॥ आधा करमी उदेशिक भोगवे, तिणमें छै मोटी खोड़। आचारांगे पहिले सुत खंधे, कह दिया गुणवंत चोर रे ॥ भ० ॥ ५ ॥ आधा करमी उदेशिक

भोगवे साधु गत जीव, वली कह्या छे अनन्त संसारी। भगवती रे पहले शतक रे नवमें उदेशे, तिहां बहुत किया विस्तारी रे ॥ भ० ॥ ६ ॥ आधाकरमी उदेशिक भोगवे तिण ने, कह्या गृही ने भेषधारी। दोय पक्ष रा सेवणहार कह्या छे, सूयगडांग दूजा श्रुत खंध मझारी रे ॥ भ० ॥७॥ आधा करमी उदेशिक एकवार भोगवे तिणने, चौमासी प्रायश्चित देणो। सदा निरन्तर नित ठठ स्यूं भोगवे, तिणने प्रायश्चित रो थांको लेणो रे ॥ भ० ॥ ८ ॥ आधाकरमी उदेशिक भोगवे तिण ने, [illegible] माहि। सदा निरन्तर नित ठठ स्यूं भोगवे तिणने प्रायश्चित रो थांको नाहिं रे ॥ भ० ॥ ९ ॥ साधु [illegible] जठे कीडी मकोडी देवे दाटी। अनेक त्रस [illegible] त्यांरी, तिकणांरी गत [illegible] माठी रे ॥भ० ॥१०॥ अनेक त्रस जीवां ने मारे, अनेकां पर देवे दाटी। [illegible] विच माहे, त्यांरा [illegible] [illegible] रे ॥ भ० ॥११॥ श्वास उश्वास कधी जीव मारे, [illegible] कर्म बंधाय। कह्यो दूजा श्रुत खंध सूत में [illegible] न आय रे ॥ भ० ॥ १२ ॥ [illegible] जठे, छिद्रियां मारयां [illegible]। [illegible] जठे छिद्रियां मारयां [illegible] [illegible] ॥ १३ ॥ [illegible] दोष [illegible] तिणने, कह्या

गृहस्थी ने भेषधारी। दोय मच्छरा सेवनहारा, कह्या छे, सूयगडांग दूजा श्रुत खंध मझारी रे ॥ भ० ॥१४॥ पोती कर्म दोष में आधा करमी, दोष विशेष छे भारी। सदा नित रो नित आधा करमी दोष सेवे छे, ते निश्चय नहीं अणगारी रे ॥ भ० ॥ १५ ॥ आधा करमी स्थानक सेवै उघाडुं, वलि साधू वाजे अनाखी। महामोहनी कर्म बांधै छे, दशा श्रुत खन्ध सूत्र छे साखी रे ॥ भ० ॥ १६ ॥ आधा करमी स्थानक सेवे उघाडुं, पूछ्यां थी पाधरुं बोलणुं नहीं आवै। मिश्र बोल्यां थी महा मोहनी कर्म बंधाय, कूड़ कपट थी काम चलावे रे ॥भ०॥१७॥ आधा करमी स्थानक सेवै उघाडुं, पूछ्यां थी बोलै कूड़। त्यांरा श्रावक त्यांरी साख पूरै छे, ते गया बहती रे पूर रे ॥ भ० ॥ आधा करमी स्थानक सेवै उघाडुं, वलो भूठ बोलै जाण जाण। त्यांरा जैसाई स्वामी तैसाज सेवक, निकल गयो जावक दाण रे ॥ भ० ॥१६॥ कोइक श्रावक त्यांरा भारी कर्मा, भूठ बोलतां न डरै लिगार। आधा करमी ने निर्दोष कहे छे, ते डूब गया कालीधार रे ॥भ०॥ २०॥ आधा करमी उदेशिक भोगवे तिण ने, साध सरधे ते मिथ्याती। ठाणांग रे दश में ठाणे कह्यो छे अर्थ, मुंहडे तणो मति जाणो याती रे ॥ भ० ॥ २१ ॥ आधा करमी उदेशिक भोगवै, ते छे भारी

करमां। शुद्ध बुद्ध बाहिरा जीव अज्ञानी, केम पामैं सी [illegible] धरमां रे ॥ भ० ॥ २२ ॥ आधा करमी दोष सूतर मां गवायो, सूत में दोष अनेक। मोलरो लियो दोष [illegible] री सुणज्यो आणविवेक रे ॥ भ० ॥२३॥ मोलरो लियो भोगवे तिणने, निसिथ कह्या अणाचारी। दश-वैकालिक रे तीजे अध्ययने शंका म जाणो लिगारी रे। भ० ॥ २४ ॥ मोलरो लियो भोगवे तिणने, भिष्टी कह्या भगवान। दशवैकालिक रे छट्ठे अध्ययने निरणय करो बुद्धिमान रे ॥ भ० ॥ २५ ॥ मोलरो लियो भोगवे तिण ने, नरीगामी कह्या भगवान। उत्तराध्ययन रे बीसमें अध्ययन निरणय करो बुद्धिमान रे ॥ भ० ॥२६॥ मोल-रो लियो भोगवे, तिण में छै मोटी खोड़। आचारांग [illegible] सूत्र मांहे, काढ़ दिया भगवन्त चोर रे ॥भ०॥२७॥ मोलरो लियो भोगवे तिणरा, सुमत गुप्त महाव्रत भागा। निसीथ रे उगणीसमें उद्देशे, कह्या व्रत विरूपा लागा रे ॥ भ० ॥२८॥ मोलरो लियो एक बार भोगवें, तिणने [illegible] प्रायश्चित्त देणा। सदा लियो नित ठठ सूं [illegible] तिणने प्रायश्चित्त री कांई कहणो रे ॥ भ० ॥ २९ ॥ मोलरो लियो भोगवे तिणने, सबलो दोषण लागे। [illegible] ठठ सूं भोगवें, तिणने प्रायश्चित्त कांई कहणो रे ॥ भ० ॥३०॥ मोलरो लियो दोष मूल स्यूं

बताऊं, सूत्र में दोष अनेक। नितपिण्ड रो दोष कहूं छूं, सुणज्यो आण विवेक रे ॥ भ० ॥ ३१ ॥ नित रो नित एकण घर को वहिरै, तिणने निश्चय कह्या अणाचारी। दशवैकालिक रे तीजे अध्ययने, शंका म जाणो लिगारी रे ॥ भ० ॥ ३२ ॥ नित रो नित एकण घर को वहिरै, तिणने भ्रष्ट कह्या भगवान। दशवैकालिक रे छट्ठे अध्ययने, जोय करो पिछाण रे ॥ भ० ॥ ३३ ॥ नित रो नित एकण घर को वहिरै, तिणने नर्कगामी कह्या भगवान। दशवैकालिक रे छट्ठे अध्ययने निरणय करो बुद्धिमान रे ॥ भ० ॥३४॥ नित रो नित एकण घर को वहिरै, तिण मे छै मोटो खोड़। आचारांग पहले श्रुत खंधे कह दिया भगवन्ते चोर रे ॥ भ० ॥ ३५ ॥ नित रो नित एकण घरको वहिरै एक वार तिणने, चौमासी प्रायश्चित देणो। सदा नित रो नित ठेठ स्यूं वहिरै, तिणने प्रायश्चित री कांई कहणो रे ॥ भ० ॥३६॥ नित रो नित एकण घर को वहिरै, तिणने सबलो दोषण लागै। सदा नित रो ठेठ स्यूं वहिरै, तिणने प्रायश्चित री कांई थाग रे ॥ भ० ॥ ३७ ॥ भागल भेषधारी नित रो नित वहिरै, एकण घर को आहार। पूछ्यां थी पाधरा नहीं बोले, झूठ बोले विविध प्रकार रे ॥ भ० ॥ ३८ ॥ भागल भेषधारी नित रो नित वहिरै, एकण घर को

आगार पाणी। पूछ्यां थकां पाधरा नहीं बोले झूठ जाणे जाणा जाणी रे॥ भ०॥३९॥ आहार तणो संभोग न तोड़्या, ते पिण श्यावा न काजे। एम मांडले रा आगार जुवा जुवा करे छै, निर्लज्जा मूल न लाजे रे॥ भ०॥४०॥

॥ ढाल दूजी ॥

(मुनिवर जीव दया प्रतिपालो एदेशी)

आधा करमी थानक माहे साध रहे तो, पंचमांई महाव्रत भागो। दया रहित कह्यो सूत्र भगवती में, छकाया तणा मरण करमी लागो रे। मुनिवर जीव दया प्रतिपालो॥ ए आंकड़ो॥१॥ सर्व सावद्य रा त्याग छै ते मा, दूजोई महाव्रत भागो। जे उवे थानक श्रावक काज न कीधो तो, कपट सहित झूठ भाखे रे॥ मु०॥२॥ त्रस जीव मुवा त्यांरा जीव न जाणे तो, अदत्त दत्त जीवां रो लागो। आज्ञा तोड़ी ने दर्शन दीधा तो, तिणस्यूं तीजो महाव्रत भागो रे॥ मु०॥३॥ थानक में आपणो करि राखे, ममता रहे तिण माहे। हट वाला हट माहे बसि ज्यूं पांचमो ... ... रे॥ मु०॥४॥ ... ने कह्यो ...

तो किण विध भाग्या, आचार कुशीलिया ने सेवै। एहवा भागल फिरे साधां ने भेष मे, तिण ने बुद्धिवन्त ज्ञान स्यूं देखे रे ॥मु०॥५॥ एक काय हण्यां स्यूं उत्कृष्टे भांगे. हिन्सा छः काय री लागी। एक व्रत भांग्या स्यूं उत्कृष्टे भांगे. व्रत छऊं गया भागी रे ॥ मु० ॥६॥ इण स्यूं तो दोष मोटा मोटा सेवै, स धां रा भेष मझारो। ते चतुर विचक्षण जाण हुसे ते, थांने कीम सरधे अण-गारो रे ॥ मु० ॥ ७ ॥ दोष बेतालीस कह्या सूत्र मां, बावन कह्या अणाचारो। ए दोष सेव्यां सेवायां, महा-व्रत में पड़सी विगाड़ो रे ॥ मु० ॥ ८ ॥ आचारांग रे बीजे अध्ययने, छठे उद्देशे निहालो। वचन सुण सुणने हिये विमासो..मत करो आल पंपालो रे ॥ मु० ॥ ९ ॥ कोई स्थानक निमिते ग्रन्थ देवे तिण ने, मुख स्यूं मति सरावो। आपस मे छः काय जीवां ने, सानी करि जीव ने कांई मरावो रे ॥ मु० ॥ १० ॥ स्थानक करावता ने धर्म कही ने, भोला ने मत भरमावो। आप रहिवा ने जग्यां कारणे, जीवां ने कांई मरावो रे ॥ मु० ॥११॥ साधु काजे जीव हणे त्यांरे, होसे भूंडे स्यूं भूण्डो। जे साधु उण जग्यां में रहसी तो, साधपणो तिण रो बूड़ो रे ॥ मु० ॥ १२ ॥ जिण स्थानक निमिते ग्रन्थ दियो तिण ने, उत्तरा जीवां रो उगने पापो। धर्म जाणे तो

माम अठारमों, होसे घणो सन्तापो रे ॥ मु० ॥ १३ ॥ साधु कावे दड़ नीपे छपरा छावे, जीव अनेक विध मारे। आप डूबे बली वधे जीवा स्यूं, गुरां रो जनम बिगाड़े रे ॥ मु० ॥ १४ ॥ ये धर्म ठिकाणे जीव हणो तो, दया किसो ठोर पालो। कुगुरां ने भरमाया तुम ने कांई लगाओ कालो रे ॥ मु० ॥ १५ ॥ रात अन्धारी मे जोर न सूझे तो, आडा मत जड़ो किंवाड़ो। छ: काय रा पीयर वाजो तो, हाथ स्यूं जीव मत मारो ॥ मु० ॥ १६ ॥ जो थांने साची सोख न लागे, तो मत लेवो साधवियां रो शरणो। साधां ने रहणो द्वार उघाड़े, साधवियां रे चाल्यो छे जड़णो रे ॥ मु० ॥१७॥ गृहस्थ मांहे रह्यो सहेरा, जब मारो जावे छ: कायो। जो [illegible] बिना धेर मारग में, एहवो मत करो अन्यायो रे ॥ मु० ॥१८॥ ण साधपणो थां स्यूं पलतो न दीसे तो, श्रावक नाम धरावो। शक्ति माफक व्रत बांध्या पाली, [illegible] मति लगावो रे ॥ मु० ॥ १९ ॥ आचार थां स्यूं पलतो न दीसे तो, औरां रे मांय मति न्हाखो। अकल्प्या ने कल्पनिक थापो, तो झूठ बोलता क्यूं न संको रे ॥ मु० ॥२०॥ [illegible] लिङ्गगा साधु वाजे, यो [illegible] दूजो। [illegible] कारण क्यूं थांरा वाजे, थां [illegible] रे ॥ मु० ॥ २१ ॥ इत्यादिक आचार मार्ग

ने, पूरो प्रेम कहवायो। हिन्सा माहीं जो धर्म थापो ते, पिण खबर न कायो रे ॥ मु० ॥ २२ ॥ तेलो करै तिण ने तीन दिन कोई, उनुं पाणी कर पावै। तिण ने तो आगले री श्रद्धा रे लेखे, एकन्त पाप बतावे रे ॥ मु० ॥ २३ ॥ चौथे दिन आरम्भ करी ने, छः काय हणी ने जीमायो। तिण में मिश्र धर्म परूपो तो ओ किण विध मिलसी न्यायो रे ॥ मु० ॥ २४ ॥ तेला करै तेहने पाणी पायां, एकन्त पाप बतावे। चौथे दिन आरम्भ करी ने जीमावे, तिण मे मिश्र किहां थी थावे रे ॥ मु० ॥२५॥ मिश्र माहें धर्म कीवे तिण री सरधा रे लेखे, ओ घणो सल कहवायो। हिन्सा माहें धर्म थापो तो, सूत सामो जोवो रे ॥मु०॥२६॥ अर्थ अनर्थ ने धर्म रे काजे, जीव हणे मन्द बुद्धि। धर्म काजे जीव हणे त्यांरी, श्रद्धा ऊन्धी स्यूं ऊन्धी रे ॥मु०॥२७॥ समुचय आचार साधु रो बतायो, तिण में राग द्वेष मति आणो। ए वचन सुण सुण हिये विमासो, मत करो खांचा ताणो रे ॥ मु० ॥ २८ ॥ प्रीत पुराणी थी थां स्यूं पहली, तिण स्यूं भिन भिन कर समझाऊं। जे थारे मन में शंका हुवे तो, सूत काढि बताऊं रे ॥ मु० ॥२९॥ संवत् अट्ठारै वरस तेवीसे, मेड़ता शहर मझारो। वैशाख वदी दशम दिन थां ने, सीख दीनी हितकारी रे ॥ मु० ॥ ३० ॥

॥ दोहा ॥

पहिलां अरिहन्त ने नमूं, ज्यां सार्‌या आतम काम ।
वले विशेषे वीर ने, ते शासण नायक स्वाम ॥१॥
जिण कारज साझी आपणा, पहुन्ता छै निरवाण ।
सिद्धां ने वन्दणा करूं, ज्यां मेट्या आवण जाण ॥२॥
आचारज सहू सारसा गुण रतना री खाण ।
उपाध्याय ने सरव साधुजी, ए पांचू पद बखाण ॥३॥
[illegible] नित तेहनी, नीचो शीश नमाय ।
गुण ओळखने वन्दणा करो, ज्यूं भव भवरा दुःख जाय ॥४॥
सुगुरु कुगुरु दोनूं तणी, गुण बिना खबर न काय ।
[illegible] कुगुरु ने ओळखो सुणो सूतर रो न्याय ॥५॥
[illegible] सार लियां बिना, लोक न माने बात ।
[illegible] में नर नारियां, छोड़ो मूल मिथ्यात ॥
कुगुरु चरित्र अनन्त छै, ते पूरा किम कहाय ।
[illegible] पाधरा कहूं ते सुणज्यो चित्त लाय ॥

॥ ढाल तीजी ॥

([illegible])

[illegible] कुगुरु चरित्र [illegible]
[illegible] हम भाख्यो भगव[illegible]

जी। साधु मत जाणो इण चलगत सूं ॥ १ ॥ आधा कर्मी थानक में रहै तो, पड़ग्रो चारित में भेदजी। निशीथ रे दशमें उद्देशे, चार मास रो छेदजी ॥ सा० ॥ २ ॥ अठारे ठाणा कह्या जूवा जूवा, एक विराधै कोयजी। बाल कह्यो श्री वीर जिणेश्वर, साध म जाणो सोयजी ॥ सा० ॥ ३ ॥ आहार सेज्या ने वसतर पातर, असुध लियां नहीं सन्तजी। दशवैकालिक छठे अध्ययने, भीष्ट कह्यो भगवन्तजी ॥ सा० ॥ ४ ॥ अचित वस्तु ने मोल लिरावै, तो सुमत गुपत हुवे खण्डजी। महाबरत पांचूं ही भागे, तिण रो चौमासी डण्डजी ॥ सा० ॥५॥ ए तो भाव निशीथ में चाल्या, उगणीसमें उद्देशजी। सुध साधु विण कुण सुणावै, सूल नो ऊंडी रेशजी॥ सा० ॥ ६ ॥ पुस्तक पातरा उपासरादिक, लिखरावे ले ले नामजी। आछा भूण्डा कही मोल बतावे, करै गृहस्थ रो कामजी ॥ सा० ॥ ७ ॥ ग्राहक ने तो कड़यो कहीजे, कुगुरु बीच दलालजी। वेचणवालो कह्यो वाणियो तीनां रो एक हवालजी ॥ सा० ॥ ८ ॥ क्रय विक्रय में वरते ते तो, महा दोष छै एहजी। पैंतीसमां उत्तराध्ययन में, साधु न कह्यो तेहजी ॥ सा० ॥ ९ ॥ नित को बहिरै एकण घर को, च्यारां मे एक आहारजी। दशवैकालिक तीजे अध्ययने, साधु

कह्यो अणाचारजी ॥ सा० ॥ १० ॥ जो लावे नित धोवण पाणी, तिण लोप्यो सूतर रो न्यायजी। बतलायां बोले नहीं सूधा, दूषण देवे छिपायजी ॥ सा० ॥ ११ ॥ नहिं कल्पे ते वस्तु वहिरे, तिणमें मोटी खोड़जी। आचारांग पहिले सुतखंधे, कहि दियो भगवन्त चोरजी ॥ सा० ॥ १२ ॥ पहिलो वगत तो पूरो पड़ियो, अब जाडा जड़े किंवाड़जी। कोटा आगल होडा अटकावे, ते निश्चय नहीं अणगारजी ॥ सा० ॥ १३ ॥ पोते हाथे जड़े उघाड़े, करे जीवां रा ज्यानजी। गृहस्थ उघाड़े आगार अछिरावे, जद कथे अणाहुन्ता फेनजी ॥ सा० ॥ १४ ॥ साधवियां ने जड़णो चाल्यो, तिण री म करो तामजी। यां लारे कोई साधु जड़े तो, भागल रा पच-खाणजी ॥ सा० ॥ १५ ॥ मन मारने जो जड़णो बंछे, तिण नहीं साधो परपीड़जी। पैंतीसमां उत्तराध्ययनमें, कह्यो गया महावीरजी ॥सा०॥१६॥ परनिन्दा में राता माता, तिण में नहीं संतोषजी। वीर कह्यो दशमां अंग मांहि तिण में तेरे दोषजी ॥ सा० ॥ १७ ॥ बांध टोला [illegible] आगन लीजे, श्रोर करे ते पासजी। कुगुरु [illegible] थाप करावे, या धीठ जस्यो पासजी ॥सा०॥१८॥ [illegible] करता लागे, गृहस्थ सूं मेलप थायजी। [illegible] ठहरे, [illegible] कह्यो जिनरायजी ॥सा०॥१९॥

जिमनवार में बहिरण आवै, आ साधां री नहीं रीतजी। बरज्यो आचारंग बृहत्कल्प मे, वले उत्तराध्ययन निशीथजी॥ सा० ॥२०॥ आलस नहीं आरा में जातां, बैठो पांत विशेषजी। सरस आहार ल्यावें भर पातरा, ज्यां लज्या छोड़ी ले भेषजी ॥ सा० ॥२१॥ चेला कारण री चलगत ऊन्धी, चाला वहोत चलायजी। लियां फिरै गृहस्थ ने साथे, रोकड़ दाम दिरायजी ॥ सा० ॥ २२॥ विवेक विकल ने सांग पहिरावै. भेलो करै आहारजी। सामगिरि में जाय वदावै, फिर फिर हुवै खुवारजी ॥ सा०॥ २३ ॥ अजोग ने दीचा दीधी ते, भगवन्त नी आज्ञा बारजी। निशीथ रो डण्ड मूल न मानै, ते विटल हुवा विकरालजी ॥ सा॰ ॥२४॥ विण परलेह्यां पुस्तक राखै, तो जमै जीवां रा जालजी। पड़ै कुंथवा उपजै मांकड़, जिण वांधी भारी पालजी ॥ सा० ॥२५॥ जावै वरस छमास निकलियां, तो पहिलो वरत हुवै खण्डजी। नित परलेयां विण मेलै तिण ने, एक मास रो डण्डजी ॥ सा० ॥२६॥ गृहस्थ साथे कहै सदेशो, तो भेलो हुवै संभोगजी। तिण ने साधु किम सरधीजे, लागो जोगने रोगजी ॥ सा० ॥ २७ ॥ समाचार विवरासुध कही कही, सानी कर गृहस्थ वोलायजी। कागद लिखावै करी आमना, पर हाथ देवै चलायजी ॥ सा० ॥

२८ ॥ आवण जावण बैसण उठणारी, जायगा देवे बताय जी। इत्यादिक साधु कहे गृहस्थ ने, तो बेहूं बराबर थायजी ॥ सा० ॥ २९ ॥ गृहस्थ ने देवे लोट पातरा, पूरा परत विशेषजी। रजोहरण ने पूंजणी देवे, ते भिक्षु तणा लिई भेषजी ॥सा०॥३०॥ पूछे तो कहे परठ दिया में, कूड कपट मन मांहिजी। काम पड़े जब जाय उगाले न मिटी अन्तर चाहिजी ॥ सा०॥ ३१ ॥ कहै परठ्या गृहस्थ ने देई, थाने वली अन्यायजी। कह्यो आचारांग उत्तराध्ययन में, साधु परठे एकान्त जायजी ॥सा०॥३२॥ थारे गृहस्थ सूं सट्टा बट्टा, पंडित नाम धरायजी। पुणे पड़ी मगनां वरतां री, भेष ले भूला जायजी ॥ सा० ॥ ३३ ॥ थोरी उपधि गृहस्थ ने दीधां, वरत [illegible] [illegible] [illegible]जी। चौमासी दंड निशीथ में गुंथ्यो, तिण [illegible] जिन धर्म टेकजी ॥ सा० ॥ ३४ ॥ बिन आंकुश [illegible] [illegible] आवे, घोड़ो बिगर लगामजी। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], कहावे साधु नामजी ॥ सा० ॥ ३५ ॥ [illegible] [illegible] [illegible] पाल नो गुण बिन कहे धर्म माथजी। [illegible] [illegible] आचारांग दूजामें, विरला परमारथ साधजी ॥ सा० ॥ ३६ ॥ कह्यो आचारांग उत्तराध्येन में साधु [illegible] [illegible] [illegible]जी। [illegible] [illegible] तिरछो दिष्टि जोवे, तो [illegible] [illegible] [illegible]जी ॥ सा० ॥ ३७ ॥ सरस आहार

ले बिन मरयादा, तो बधै देही रो लोथजी। काच मणि परकाश करै ज्यूं, कुगुरु माथा थोथजी ॥ सा० ॥३८॥ दबक दबक उतावला चालै, तस थावर मार्‍या जायजी। इरज्या सुमत जोयां बिन चालै, ते किम साधु थायजी ॥ सा० ॥ ३९ ॥ कपड़ा मैं लोपी मरयादा, लांबा पना लगायजी। इधका राखै दोय पुर उडे, वलि बोलै मृषा-वायजी ॥ सा० ॥ ४० ॥ लुष्टपुष्ट कर मांस वधारै, करै विगैरा पूरजी । माठा परिणामा नार्‍यां निरखै, तो साधुपणा थी दूरजी ॥ सा० ॥४१॥ उपग्रण जो अधिका राखै, तिण मोटा कियो अन्यायजी। निशीथ रे सोलमें उद्देशे, चौमासी चारित जायजी ॥ सा० ॥४२॥ मूरख नै गुरु एहवा मिलिया, ते लेई डुबसी लारजी । साचो मारग साधु बतावै, तो लड़वा नै हुवै त्यारजी ॥ सा० ॥ ४३ ॥ एहवा गुरु साचा करी मानै, ते अन्ध अज्ञानी बालजी । फोड़ा पड़ै उत्कृष्टा तिण सूं, रुलै अनन्तो कालजी ॥ सा० ॥४४॥ हलुकरमी जीव सुण सुण हरषे, करै भारी कर्मा द्वेषजी । सूतर रो न्याय निन्दा कर जानै, तो डूबै वले विशेषजी ॥ सा० ॥ ४५ ॥

॥ दोहा ॥

भेष पहर्‍यो भगवान रो, साधु नाम धराय।
आचार सूं ढीला घणा ते कह्यां काठा लग जाय ॥१

त्यांरे थांपे गुरु आगमे, वले कूड़ी करै पखपात।
त्यां झूठा ने साचा करण थपे, त्यांरे मोटो शाल मिथ्यात॥
कुगुरु तणा पग थांपने, आगे बूडा जीव अनन्त।
वली बूडे ने बूडसी घणा, त्यांरो कहतां न आवे अन्त।
साध मारग छै सांकडो, तिण से न चाले खोट।
आगार नहीं त्यांरे पापरो, त्यां वरत किया नवकोट॥
भेषधारी भागल घणा, त्यांसूं पले नहीं आचार।
कुण कुण अकारज कर रह्या, ते सुणज्यो विसतार॥५॥

॥ ढाल चौथी ॥

आदर जीव क्षिम्यां गुण आदर (पदेशी)

कुगुरु तणा चरित्र चावा कर मूं, सूतरनी दे साखसौं। सुमता आण सुणो भव जीवां, खोटोर गया छे मानसों॥ साध मत जाणो कुण आचारि॥१॥ [illegible] कुगुरु मंडा कर भाल्या, तो सुण सुण म [illegible] [illegible]। [illegible] झूठ [illegible] निर्ग्रंथ, सूतर [illegible] [illegible]॥ सा०॥२॥ [illegible] मांहो मूं कोई [illegible], [illegible] पाछो [illegible]। पछे आप [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ने [illegible]॥ सा०॥३॥ [illegible] [illegible], [illegible] दियो [illegible]। [illegible] [illegible] त्यांने [illegible] [illegible]

जी। सा० ॥ ४ ॥ ए अणाचार उघाडो सेवे जे साहमो आण्यो ले आहारजी। दशवैकालिक तीजे अध्ययन, कोई जोवो आंख उघारजी ॥ सा० ॥ साध साधवी ठले जावे, एकण दरवाजे जायजी। वीर वचन सूं उलटा पड़िया, धधड़े करे अन्यायजी ॥ सा० ॥ ६ ॥ गांव नगर पुर पाटण पाड़ो, तिण रो हुवे एक निकालजी। तिहां साध साधवी नहीं रहे भेला, आ बांधी भगवन्त पालजी ॥ सा० ॥ ७ ॥ एकण दरवाजे साध साधवी, जावे नगरी बारजी। तो अप्रतीत उठे लोकां में, कोई बरत भागे हुवे खुवारजी ॥ सा० ॥ ८ ॥ जुदो जुदो निकाल छै तो पिण कोई जावे एकण दरवाजजी। धेठा हटक न माने किणरी, वले न माने मन में लाजजी ॥ सा० ॥ ९ ॥ एक निकाल तिहां रहियोई बरज्यो, तो किम जाए एकण दुवारजी। ए वृहत्कल्प रे पहिले उद्देशे, ते बुधवन्त करी विचारजी ॥ सा० ॥ १० ॥ गृहस्थ ने घर जाय गोचरी, जो जड़ियो देखे दुवारजी। तिहां सुध साधु तो फिर जाय पाछा, आगल जावे खोल किंवारजी ॥ सा० ॥ ११ ॥ केई भेषधाऱ्यां रे एहवी सरधा, जो जड़ियो देखे दुवारजी। तो धणी तणी आगन्या लेई ने, मांहि जावे खोल किंवारजी ॥ सा० ॥ १२ ॥ हाथ सूं साध किंवार

उघाड़े, मांहि जावे बहिरण ने आहारजो। इमड़ो ढीलो करे परूपणा, ते विटल हुवा बिकरालजो ॥ सा० ॥ १३ ॥ किंवार उघाड़ी ने आहार बहिरण रो मूल न सरधे पापजो। कदा न गया तो पण गया सरीखा, ण्या वार राखो छे थापजो ॥ सा० ॥ १४ ॥ किंवार उघाड़ ने बहिरण ने जावे, तो हिंसा जीवां री थायजो। ते आचारंग सूतर मांहि वरज्यो, चौथा अध्ययन रे मांयजो ॥ सा० ॥ १५ ॥ गांव नगर बारे उतरियो, कटक सगरो ताहिजी। जो साधु रात रहे तिण ठामें, ते नहीं जिण आज्ञा मांहिजी ॥ सा० ॥ १६ ॥ एक रात रहे कटक में तिण ने, च्यार मास रो छेदजी। ए बृहत्कल्प रे तीजे उद्देशे, ते सुण सुण मत करो खेदजी ॥ सा० ॥ १७ ॥ इमड़ा दोष जाणी ने सेवे, तिण छोड़ी जिण धर्म रीतजी। एहवा भिष्ट आचारी आगम, त्यांरी कुण करसी परतीतजी ॥ सा० ॥ १८ ॥ बिन कारण आंख्यां में अंजण, तो घाले आंख सभावजी। [illegible] साधवियां किम सरधीजे, त्यां छोड़ दिया आचारजी ॥ सा० ॥ १९ ॥ बिन कारण जो [illegible] घाले, [illegible] जिन आज्ञा बारजी। इग्यारै [illegible] [illegible], ते उघाड़े पनाचारजी ॥ सा० ॥ २० ॥ [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] रे [illegible] [illegible]।

पछी विहार कर दे घणी भलामण, तिण प्रवचन दीधा ठेलजी ॥ सा० ॥ २१ ॥ पछे गृहस्थ आंहमा सांहमा मेलतां, हिंस्या जीवां री थायजी। तिण हिंसा सूं गृहस्थ ने साधु, दोनूं भारी हुवै तायजी ॥ सा० ॥ २२ ॥ भार उपरावै गृहस्थ आगे, ते किम साधु थायजी। निशीथ रे बार मे उदेशे, चौमासो चारित जायजी ॥ सा० ॥२३॥ वले विण पडलेहां रहे सदा नित, गृहस्थ रा घर मांय जी। ओ साधपणो रहसी किम त्यांरो, जोवो सूतर रो न्यायजी ॥ सा० ॥ २४ ॥ जो विण पडलेह्या रहे एकण दिन, तिण ने डंड कह्यो मासीकजी। निशीथ रे दूजे उदेशे, तिहां जोय करो तहतीकजी ॥ सा० ॥ २५ ॥ मातपितादिक सगा सनेही, त्यांरा घर मे देखै खालजी। त्यांने परिगरो साध दिरावै, आ चौडे कुगुरु री चालजी ॥ सा० ॥ २६ ॥ सानीकर साध दिरावै, रुपिया, बरत पांचमों भागजो। वले पूछ्यां भूठ कपट सूं बोलै, त्यां पहिर विगाड्यो मांगजी ॥ सा० ॥ २७ ॥ न्यातीला ने दाम दिरावै, तिण रे मोह न मिटियो कोयजी। वले सार संभार करावै त्यांरी, ते निश्चय साध न होयजी ॥ सा० ॥ २८ ॥ अनरथ रो मूल कह्यो परिगरो, ठाणांग तीजे ठाणजी। तिण री साध करै दलाली, ते पूरा मूढ अजाणजी ॥ सा० ॥ २९ ॥ ऋतु उन्हाले पाणी ठारै,

गृहस्थ रा ठाम मझारजी । मनमाने जब पाछा सूंपे, ते थो जिन आज्ञा बारजी ॥ सा० ॥ ३० ॥ गृहस्थ रा भाजन में साधु जीमे असणादिक आहारजी । तिण ने भिष्ट कह्यो दशवैकालिक में, छठा अध्ययन मझारजी ॥ सा० ॥ ३१ ॥ केई सांग पहिर साधवियां वाजे, पिण घट मांहि नहीं विवेकजी । आहार करे जड़ जड़े किंवाड़, वले दिन मांहि बार अनेकजी ॥ सा० ॥ ३२ ॥ ठण्डे मातरे गोचरी जावे, जन आडा जड़े किवारजी । वले साधां कने आवे तीजो जरने, त्यांरो बिगर गयो आचारजी ॥ सा० ॥ ३३ ॥ साधवियां ने जड़णा चाल्या, ते शीलादिक राखण कामजी ॥ थांरे काम जो जड़े साधवी, तिण छोड़ी संजम लाजजी ॥ सा० ॥ ३४ ॥ आवसग मांहि खिमा [illegible] आलोवणा आवे ताहिजी । मन करने [illegible] उत्तराध्ययन पैंतीसमां मांहिजी ॥ सा० ॥३५॥ थानक आद दे वलिनी आणी, कोई आमी [illegible] । ते जाय मेले गृहस्थ रा घर में, पछे [illegible] ॥ सा० ॥ ३६ ॥ आप रा [illegible] गृहस्थ में [illegible] दोष [illegible] । वले [illegible] रा [illegible] रा आणजी ॥ सा० ॥ ३७ ॥ वले चौथे दोष पूछ्यां झूठ बोले, बाली

राख्यो न कहै सूढजो। केई भेषधारी छै एहवा भागल, त्यांरे झूठ कपट छै गूढ़जो ॥ सा० ॥३८॥ औषध आद दे बासी राख्यां, वरतां से पड़े वघारजी। कह्यो दश-वैकालिक तीजे अध्ययने, बासी राखे तो अणाचारजी ॥ स० ॥ ३९ ॥ केई आधाकरमी पुस्तक वहिरै, वले तेहिज लीधां मोलजी। ते पिण साहमां आण्यां वहिरै, त्यांरे मोटो जाणज्यो पोलजी ॥ सा० ॥४०॥ कोई आप कने दीक्षा ले तिणरे. सानी कर मेले साजजी। पुस्तक पानादिक मोल लिरावे, वले कुण कुण करै अकाजजी ॥ सा० ॥ ४१ ॥ गच्छवासी प्रमुख आगा सू, लिखावे सूतर जाणजो। पहिला मोल कराय परत रो. सचकार दिरावे आणजो ॥ सा० ॥४२॥ रुपिया मेहलावे और तणे घर, इसड़ो सैंठो करै कामजी। ते पिण हाथ परत आयां दिन, दीक्षा दे काढ़े तामजो ॥ सा० ॥४३॥ पछे गच्छ-वासी बिकलां सूं डरतां, परत लिखे दिन रातजो। जीव अनेक मरे तिण लिखतां, करे त्रस थावर री घात जो ॥ सा० ॥४४॥ इण विध साधु परत लिखावे, तिण संयम दीधो खोयजो। जे दया रहित छै एहवा दुष्टी ते निश्चय साध न होयजी ॥सा०॥४५॥ छः काय हणीने परत लिखी ते. आधा कारमी जाणजी। तेहिज परत तो साधु वहिरै; तो भागल रा एहनाणजी ॥सा०॥४६॥

वलि तेहिज परत टोला में राखे, आधा करमी आव जी। जे शामिल हुआ ते सघला डूबा, तिण में शंका मत आणजी॥ सा०॥ ४७॥ आधा करमी रा सेवण करे तो, उत्कृष्टो काल अनन्ताजी। दया रहित कह्यो तिण साधु ने, भगवती में भगवन्ताजी॥ सा०॥ ४८॥ कोई श्रावक साधु समीपे आए, हरषे वांदे पग आण जी। जद साधु हाथ दे तिण रे माथे, आ चोड़े कुगुरु री चालजी॥ सा०॥४९॥ गृहस्थ रे माथे हाथ देवे तो, गृहस्थ बरोबर जाणजी। एहवा विकलां ने साधु सरधे, पिण विकल समानजी॥ सा०॥५०॥ गृहस्थ रे माथे हाथ दियो तिण, गृहस्थ सूं कीधो संभोगजी। तिण साधु किम सरधीजे, लागे जोग ने रोगजी॥ सा० ॥५१॥ दशवैकालिक आचारांग मांही, वलि जोवो ग्रन्थ निशीथजी। गृहस्थ ने माथे हाथ देवे आ पर-प्रत्यक्ष कुगुरु री रीतजी॥ सा०॥ ५२॥ सेवा करे ते ओर-स्यों परे, दग पाषाण ज्यूं नावजी। उत्तम जिन ने उपकार में जाय डूबे और गामजी॥ सा० ॥ ५३॥ आछा आहार दिखावे तिण ने, कपड़ादिक [illegible] दिखावे जी। इत्यादिक लालच लोभ बताये, [illegible] [illegible]जी॥ सा०॥ ५४॥ इण विध चेला [illegible] [illegible], [illegible] गुण विन कीधा अयजी। साध पणो [illegible]

सांग पहिर ने, भारी हुवे विशेषजी ॥ सा० ॥ ५५ ॥ मूंड मुंडाय भेलो कीधो, त्यां सूं पले नहीं आचारजी। भूख तृषा पिण खमणी न आवे, जद लेवे, असुध पिण आहार जी ॥ सा० ॥ ५६ ॥ अनल अजोग ने दीक्षा दीधां, तो चारित रो हुवे खण्डजी। निशीथ रै उद्देशे इग्यार मे, चौमासी रो डण्डजी ॥ सा० ॥ ५७ ॥ विवेक विकल बालक बूढ़ा ने, पहिरावे सांग शितावजी। त्यांने जीवादिक पदारथ नव रा, जाबक न आवे जाबजी ॥ सा० ॥५८॥ शिष्य करणो तो निपुण बुध वालो, जीवादिक नव जाणे ताहिजी। नहीं तर एकल रहणो टोला में, उत्तराध्ययन बत्तीसमां मांहिजी ॥ सा० ॥ ५९ ॥ कोई दड़े लोपे हाथां सूं थानक, ते पिण ठगलिया कूट जी। इसड़ो काम करे तिण साधु, पाड़ी भेष मांहे फूटजी ॥ सा० ॥ ६० ॥ जो दड़े लोपे थानक ने साधु, तिण श्री जिण आज्ञा भङ्गजी। तीजा वरत री तीजी भावना, तिहां वरज्यो दशमें अङ्गजी ॥ सा० ॥ ६१ ॥ छतां साधवियां छै टोला में, वले कारण न पड्यो कोयजी। तो पिण दोय साधवियां रहे छै, ओ दोष उघाड़ो जोयजी ॥ सा० ॥ ६२ ॥ एक वितणी रहे दोय साधवी, ते जिन आज्ञा में नाहिजी। त्यांने वरज्यो छै व्यवहार सूतर में, पांचमा उद्देशा मांहजी ॥ सा०

॥६३॥ कारण विना एकलो साधवी, पसवादिक बहि-रण जायजी। वले ठरडे पण एकलड़ी आवे, ते नहिं जिन आज्ञा मांयजी ॥ सा० ॥ ६४ ॥ वले एकलड़ी ने रहणो वरज्यो, इत्यादिक बोल अनेकजी। [illegible] रे पांचमे उद्देशे, ते समझो आण विवेकजी ॥ सा० ॥६५॥ कुगुरु एहवा हीण आचारी, साधां सूं दे भिड़-कायजी। आप तणा किरतब मूं डरतां, जिन मारग दियो छिपायजी ॥ सा० ॥ ६६ ॥ इसड़ा कुगुरां ने गुरु कर मानें, त्यांरे अभिन्तर में अन्धकारजी। गुरु में खोट पाय पछाने, ते चाल्या जनम बिगारजी ॥सा०॥६७॥ अशुभ कर्म ज्यांरे उदय हुवा जब, कुमड़ा गुरु मिलिया आयजी। दग्धबीज होय जावक बूड़ा, पछे बिगुंगत [illegible] आयजी ॥ सा० ॥ ६८ ॥ इम सांभल उत्तम नर [illegible], छोड़ो कुगुरु नी संगजी। सतगुरु सेवो सुख पामोगे, दिन दिन चढ़ते रंगजी ॥ सा० ॥ ६९ ॥ [illegible] कुगुरु [illegible], गहर [illegible] [illegible]। संवत् [illegible] वरस [illegible], [illegible] [illegible] जी ॥ सा० ॥ ७० ॥

॥ दोहा ॥

[illegible] [illegible] [illegible] कुड़ी [illegible]।
[illegible] [illegible] [illegible], ते मूरख [illegible] ॥१॥

बांसाधपणो नहीं ओलख्यो, भूला भ्रम गिवार ।
सर्वसावद्य त्याग्यो मुखसूं कहै, वले पापरो कहै आगार ॥२
आहार पाणी कपड़ादिक ऊपरे, उवे सदा रह्या मुरझाय।
एहवा भेषधार्यांरे इव्रतखरी. पिण साधांरेइव्रत नहीं काय
च्यार गुणठाणा इव्रत कही, त्यां न दीसै व्रत लिगार॥
देश व्रत गुणठाणो पांचमो, आगै सरव व्रती अणगार॥
जो साधां रे इव्रत हुवे, तो सर्व व्रती कुण होय ।
त्यांरा भाव भेद प्रकट करू, ते सांभलज्यो सहु कोय ॥५॥

॥ ढाल पांचवीं ॥

(आ अनुकम्पा जिन आज्ञा में—एदेशी)

चौबीसमां श्री वीर जिनेश्वर, निरदोष आहार आणी ने खायो-। सुध परिणाम उदरमें उतार्यो, तिण मांही मूरख पाप बतायो ॥ इण पाखण्ड मत रो निरणो कीजो ॥ १ ॥ अनन्त चौबीसी मुगत गई ते, आहार ल्याया था दोषण टालो । तिण मांही पाप बतावै अज्ञानी, त्यां सगलां रे शिर दीधो आलो ॥ इ० ॥ २.॥ सरव सावद्य जोग रा त्याग करी ने, सरव व्रती सुध साध कहावे । तिरण तारण पुरुषां रे अज्ञानी, इव्रत रो आगार बतावे ॥ इ० ॥ ३ ॥ गोतम आदि दे साध

अनन्ता. साधवियां रो छेह न पारो । सगलां रो आकार आगम मांहि घाल्यो. तिण आंख मींची ने कीधो अंधारो ॥ इ० ॥ ४॥ साधु रो जनम हुवो जिण दिन थी. कामपे ने वस्तु वहिरी ने लावे। ते पिण अरिहन्त नी आगन्या मं . तिण मांहि कुरण पाप बतावे ॥ इ० ॥५॥ वसतर पातरा रजूहरणादिक, साधु रा उपध सूतर मांहि चाल्या । अरिहन्त री आगन्या मं राख्या, अधर्म मांहि अज्ञानी घाल्या ॥ इ० ॥ ६ ॥ दशवैकालिक ठाणा अंग में. प्रश्न व्याकरण उववाई माह्यो, धरम उपध साधु रा [illegible] में. तिण मांहि दुष्टी पाप बतायो ॥ इ० ॥ ७॥ किण ही गृहस्थ लीलोतरी ने त्यागी, जीवे ज्यां लग आण वैरागी । साधपणो लेई हुवत सरधे, तो किण [illegible] मांहि लागो ॥ इ० ॥ ८ ॥ अधर्म आवे [illegible] गाभो, तो पचखाण भागो किम [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] त्यागो थो, तुगा, साहमुं [illegible] [illegible] ॥ इ० ॥ ९ ॥ किण ही गृहस्थ [illegible] [illegible], तो अधर्म रो [illegible] [illegible] जाणो । साधपणो [illegible] [illegible], ते क्यूं न पाले लिया पचखाणो ॥ इ० ॥ १० ॥ हुवत सरधे ने [illegible] न पाले, तिण आगम [illegible] [illegible]। [illegible] छोड़ने [illegible] परिया, [illegible] [illegible] किया [illegible] सरधे अधर्मी ॥ इ० ॥ ११ ॥ [illegible]

वैयावच्च चेला गुरु री, कर्म तणी क्रोड़ तेह खपावे। तीर्थङ्कर गोत बंधे उत्कृष्टो, पिण गुरु ने मूरख पाप बतावे ॥ दू० ॥ १२ ॥ दश बीस चेला खरिकणा मे करने, गुरु री वैयावच्च करवा ने आवे। तो गुरु ने पाप लगाय अज्ञानी, दुरगत मांय कांय पहोंचावे ॥ दू० ॥ १३ ॥ गुरु ने पाप लागे वैयावच्च करायां, सूत्र मांहि कठै ही न चाल्यो। मूढमती जीव भारी करमा, यो पिण घोचो अणहुन्तो घाल्यो ॥ दू० ॥ १४ ॥ गुरु ने पाप सूं भेला कियां में, चेलां रा कर्म कटै किण लेखै। अभिन्तर फूटी ने अन्ध थया ते, सूतर सांहमो मूंढ मूल न देखे ॥ दू० ॥ १५ ॥ साध मांहोमांहि देवै ने लेवैं, वसतर पातर आहार ने पाणी। ते पिण लीधां में पाप बतावे, एहवी कुपातर बोले बाणी ॥दू०॥१६॥ दातार ने धर्म साधां ने बहिरायां, पिण साध बहिरी हुवा पाप सूं भारी। दातार तिरिया साध डबोया, आ पिण सरधा कहे भेषधारी ॥ दू० ॥१७॥ जो पाप लागे साधु आहार कियां मे, तिण रै पाप रो साज दियो दातारो। तिण री आशा राखे किण लेखे, भूला रे भूला थे मूढ गिंवारो ॥ दू० ॥ १८ ॥ साधां तो पाप अठारे ही त्याग्या, चोखी छै ज्यांरी सुमति ने गुपती। दातार कने सुध जांच लियां में, पाप कठै सूं लागो रे

कुमती ॥ इ० ॥ १६ ॥ गुरु दीक्षा देई शिष्यनी करै ते, निर्ग्रंथ रा भेद मांहि चाल्या। मोह मिथ्यात सूं भारी आत्मा, ए पिण परिग्रहमां घाल्या ॥ इ० ॥ २० ॥ छठे गुणठाणे परमाद कह्योने, साधां रे इब्रत थापे स्वामी। पूछे तो कहे सरब ब्रती छां, ओ पिण झूठ बोले भेषधारी ॥इ०॥२१॥ छठे गुणठाणे परमाद कह्यो ते, जिण छिद्र ऊनां लागतो जाणो। विषे कषाय अशुभ जोग आणी, पिण कुडमती करे ऊन्धी ताणो ॥इ०॥२२॥ प्रमाद कहे आहार उपध सूं, कर रह्या कुबुद्धि कूड़ो विषवादो। आहार उपध केवली पिण आणे, कठे गयो त्यांरो परमादो ॥ इ० ॥ २३ ॥ अप्रमादी कह्या सातमें गुणठाणे, प्रमाद कह्यो तिण गुणठाणा आगे। आहार उपध उठे जिण भोगवता, त्यां साधां ने प्रमाद क्यूं नहीं लागे ॥ इ० ॥ २४ ॥ केवली आवरियो छद्मस्थ आचरै, केवली कह्यो ने छद्मस्थ त्यागे। आहार उपध केवली क्यूं भोगविया, तिण साधां ने प्रमाद किण विध लागे ॥ इ० ॥ २५ ॥ [illegible] आहार करतां चारित्र कुशले, सुध परिणाम सूं कटै आगला कर्मी। अट कुमती [illegible] [illegible] [illegible] क्यूं [illegible] धर्मी ॥ इ० ॥ २६ ॥ [illegible] साध [illegible] गाढे, [illegible] [illegible]। उण कुमतां रा मरम [illegible],

पाखो मात में करणो वखाणो ॥ इ० ॥ २७ ॥ जैणा सूं साधु करै परलेहण, काटवा कर्म आत्म ने उद्धरणो । उण जन्ममती री सरधा रै लेखै, आखो ही दिन परलेहण करणो ॥ इ० ॥२८॥ मरजादा सूं आहार साधां ने करणो, मरजादा सूं करणो वखाणो । मरजादा सूं परलेहण करणो, समझो रे समझो थे मूढ अयाणो ॥ ॥ २९ ॥ छ: कारण आहार साधां ने करणो, घणा घणो खासी किण लेखै । छाईसमां उत्तराध्ययन में छै, वले छट्ठो ठाणो मूढ क्यूं नहीं देखै ॥ इ० ॥३०॥ कहै धर्म हुवै साधु आहार कियां में, तो क्यांने करै आहार रा पचखाणो । पाप जाणी ने त्याग करै छै, उलट बुद्धि बोलै एहवी वांणो ॥ इ० ॥ ३१ ॥ साधु काउसग में त्यागो हालवो चालवो, वले मुख सूं न बोलै निरवद्य वाणो । उण उलट बुद्धि री सरधा रै लेखै, ए पिण पाप तणा पचखाणो ॥ इ० ॥ ३२ ॥ कोई साध बोलण रा त्याग करी मून साजै, धर्म कथा मांडी न करै वखाणो । उण उलट बुद्धि री सरधा रै लेखै, ए पिण पाप तणा पचखाणो ॥ इ० ॥ ३३ ॥ कोई साधु साधां ने आहार देवण रा, त्याग करै मन उछरङ्ग आणो । उण उलट बुद्धि री सरधा रै लेखै, ए पिण पाप तणा पचखाणो ॥ इ० ॥ ३४ ॥ कोई साधु साधां री न करै

वैयावच, त्याग करै मन उछरङ्ग आणो। उत्तम उलट
बुद्धि री सरधा रे लेखे, ए पिण पाप तणा पचखाणो।
आ० ॥ ३५ ॥ साधां मूल गुण में सरब सावज त्याग्यो
तिण सूं नवा पाप न लागै जाणो। आगलां कर्म
काटण साधां रे, उतर गुण छै दश विध पचखाणो।
आ सरधा श्री जिनवर भाषी ॥ ए आंकड़ी ॥ ३६ ॥
कोई साध वेलादिक करै संथारो, कोई साध करै नित
रा नित आहारो। पाप रा त्याग दोयां रे सरिखा, पिण
पाप रह्यो छै भेदज न्यारो ॥ आ० ॥ ३७ ॥ जेणा सूं
चाल्या जेणा सूं ऊभा, जेणा सूं बैठा जेणा सूं सुवंता।
जेणा सूं भोजन किया जेणा सूं बोल्या, तिण साधु रे
पाप न लागो भगवन्ता ॥ आ० ॥ ३८ ॥ दशवैकालिक
चौथे अध्ययने, आठमी गाथा अरिहन्त भाषी। छःकाय
मांहि जेणा सूं किया में, पाप कर्म [illegible]
॥ आ० ॥ ३९ ॥ निरवद्य गोचरी ऋषेश्वरां री मोक्ष
साधन भगवन्त भाषी। दशवैकालिक पांच में अध्ययने,
बाणुंमी गाथा मांहें साखी ॥ आ० ॥ ४० ॥ सुध आहार
लियां साधु [illegible] जावे, निरदोष दियां जाय [illegible]
[illegible]। दशवैकालिक पांच में अध्ययने, पहिला उदेशा
रे [illegible] गाथा ॥ आ० ॥ ४१ ॥ [illegible]
[illegible] मुनि ने आहार करे तिण [illegible]। [illegible]

सूतर पहिले श्रुत खंधे, नवमो उद्देशो जोय संभालो ॥ आ० ॥ ४२ ॥ आहार करै गुरु री आगन्या सूं, तिण साधु ने वीर कह्यो छै मोचो। अठारमो अध्ययन ज्ञाता रो जोई, सांसो काटो मेटो मन रो धोखो ॥ आ० ॥ ४३ ॥ शब्द रूप गंध रस फरसरी, साधां रे इव्रत मूल न कायो। सूयगडाअग अध्ययन अठार मे और उव-वाई सूल मायो आ० ॥ ४४ ॥ साधां रे इव्रत कहै पाखण्डी, तिण कुमतो री सगत दूर निवारो। इम सांभल ने उत्तम नरनारी, सर्व व्रती गुरु माथे धारो ॥ आ० ॥ ४५ ॥

॥ दोहा ॥

समदृष्टि आरै पांचमे, थोड़ी ऋद्धि अल्प मान।
मिथ्यादृष्टि जोड़े हुसी, बहु ऋद्ध बहु सन्मान ॥१॥
समण थोड़ा ने मूढ़ घणा, पांच मे आरै चैन।
भेष लेई साधु तणो, करसी कूड़ा फैन ॥२॥
साधु अल्प पूजा हुसी. ठाणा अङ्ग मे साख।
असाधु महिमा अति घणी, श्रीवीर गया छै भाख ॥३॥
कुदेव कुगुरु कुधर्म मे, घणा लोक रह्या बंध होय।
ओलखने निरणो करै, ते तो विरला जोय ॥४॥

साध मारग छे सांकड़ो, भोला ने खबर न काय।
जिम दीवे पड़े पतंगियो, तिम पड़े पगां में जाय ॥५॥
घणा साधु ने साधवी, श्रावक श्राविका लार।
उलटा पड़ो जिण धर्म थी, पड़सी नरक मझार ॥६॥
महा निशीथ मे में सुणी, गुण बिन धारी भेष।
गागां कोड़ा गमे मांयठा, नरक पडंता देख ॥७॥
सोधा व्रत न पालसी, खोटी दिष्ट अयाण।
तिणने कही छे नारकी, कोई आप म लिज्यो ताण ॥८॥
आगम थी अवला वहे, साधु नाम धराय।
सुध करणी थी वेगला, ते कस्या काठा लग जाय ॥९॥

॥ ढाल छट्ठी ॥

[illegible] राजा सुणो (पदेशी)

सोधा घर थापे साधु ने, वली और कराये आगे रे। [illegible] उपासरा भोगवे, त्यांने वजर क्रिरिया लागे रे। [illegible] साधु मत जाणिये ॥ १ ॥ आचारांग दूजे कह्यो [illegible] है निरणो रे। जो वीर वचन मानो [illegible] साधु [illegible] निरणो रे ॥ नि० ॥२॥ साधु [illegible] उपासरो, श्रावों लिख्यो [illegible] नाम गामी रे। [illegible] श्रावक [illegible], आवच्चा क्रिरिया लागी रे। नि० ॥ ३ ॥ निश्चे [illegible] सूत्र [illegible], [illegible]

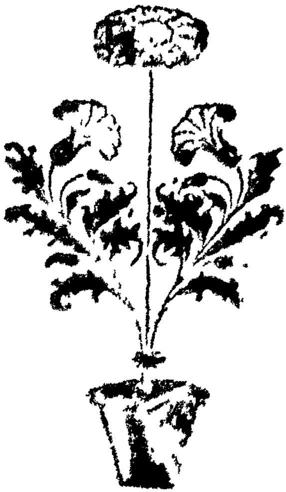
आचारांग साखी रे। भेषधारी कह्यो सिद्धान्त मे, तिण री भगवन्त काण न राखी रे ॥ ति० ॥ ४ ॥ सिज्यातर पिण्ड भोगवे, वले कुबुद्ध केलवे कपटो रे। धणी छोड भाग्या ले और री, सरस आहारादिक रा लपटो रे ॥ ति० ॥ ५ ॥ सबलो दोषण लागे तेहने, निशीथ मे डंड भारी रे। अणाचारी कह्यो दशवैकालिके, भगवत री सीख न धारी रे ॥ ति० ॥६॥ अणकंपा आण श्रावक तणी, द्रव दिरावण लागे रे। दूजे करण खंड हुवो ब्रत पांचवों, तीजे करण पांचूं ही भागे रे ॥ ति० ॥ ७ ॥ गृहस्थ जिमावण री करे आसना, वले करे साधु दलाली रे। चौमासी डंड कह्यो निशीथ मे, वरत भांग हुवो खाली रे ॥ ति० ॥८॥ करे बांसादिक नो बांधवो, वले किया भींत ना चेजा रे। छायो लीप्यो तेह ने, कहीजे सारी कर्म सेजा रे ॥ ति० ॥ ९ ॥ एहवी बसती भोगवे, ते साधु नही लवलेशो रे। मासिक डंड कह्यो तेहने, निशीथ रे पांच मे उद्देशो रे ॥ ति० ॥ १० ॥ बांधे पर्दा परेच कनात ने, वले चन्द्रवा सिरकी ने टाटा रे। साधु अरथे करावे ते भोगवे, ज्यांरा ज्ञानादिक गुण न्हाठा रे ॥ ति० ॥ ११ ॥ थापीतो थानक भोगवे, त्यां दिया महाब्रत भांगो रे। भावे साधुपणा थी वेगला, त्यां मे गण विन जाणे सांगो रे ॥ ति० ॥ १२ ॥ काच

चमको वरज्यो ते राखियो, वली जाणो छै दोषण थोरो रे। पांचमो व्रत पूरो पल्यो, वली जिण आगन्या रो चोरो रे॥ ति० ॥१३॥ गृहस्थ आयो देखी मोटका, हाव भाव सूं हरषित हुया रे॥ विछावणा री करे आमना, ते मायपणा री जुवा रे॥ ति० ॥ १४ ॥ गृहस्थ आयो साधु तेड़वा कपड़ो वहिरावण लई जावे रे। इणविध वहिरे हेत सूं, चारित्त किण विध पावे रे॥ ति० ॥१५॥ साहमो आण्यो ले जावे तेड़िया, ए दोषण दोनूं भारी रे। गांम टाले मिछायत वीरना, सिव्यां नहीं साध आचारी रे॥ ति० ॥ १६ ॥ धोवणादिक में नीलोतरी, जीवां सहित कण भिना रे। एहवा वहिरे शंक नहीं, ते परभव मूं नहीं बिहना रे॥ ति० ॥ १७ ॥ एहवो अन्न पाणी भोगवे, त्यांने साधु किम थापीजे रे। जो सूतर ने माथो धरो, त्यांने चोरा री पांत में थापीजे रे॥ ति० १८ ॥ गृहस्थ ना सजाय बोल थोकड़ा, साधु सिखै तो दोषण लागे रे। सिखायने अणमोदिया, [illegible] उपजता भागे रे॥ ति० ॥ १९ ॥ [illegible] पास छे, तो सिखायां दोषण उथागो रे। [illegible] त्यां वचनां में परिया अथागो रे॥ ति० ॥ २० ॥ [illegible] गृहस्थ ने, [illegible] रे। [illegible] न मानिये, सिंके

मुगत सूं मारग न्यारो रे ॥ ति० ॥ २१ ॥ गृहस्थ उपध रा कारे आवता, किया वरत चकचूरो रे। सेवग हुवा संसारिया, साधुपणा थी दूरो रे ॥ ति० ॥ २२ ॥ साता पूछे पूछावे गृहस्थ री, इव्रत सेवण लागा रे। अणाचारी कह्यो दशवैकालिके, वले पांचूंही महाव्रत भागा रे ॥ ति० ॥ २३ ॥ श्रावक ने वले श्राविका, कारे मांहोमांही कारज रे। साता पूछे विना वैयावच करे, तिण मे धर्म परूपै अनारज रे ॥ ति० ॥ २४ ॥ अणाचार पूरा नहीं ओलख्या, नव भांगा किण विध टाले रे। गृहस्थ ने सिखावे सेवना, लीधा व्रत नहीं सभाले रे ॥ ति० ॥ २५ ॥ कारण पड़ियां लेणो कहे साधने, करै असुध वहिरण री थापो रे। दातार ने कहे निर्जरा घणी, वली थोरो बतावै पापो रे ॥ ति० ॥ २६ ॥ एहवी ऊन्धी करै परूपणां, घणा जीवां ने उलटा नाखे रे। अण विचारी भाषा बोलतां, भारी कर्मा जीव न शंके रे ॥ ति० ॥ २७ ॥ भिष्ट आचार री करै थापना, कहे कहे दुखम कालो रे। हिवड़ां आचार छै एहवो, घणा दोषण रो न हुवै टालो रे ॥ ति० ॥ २८ ॥ एक पोते तो पालै नहीं, वले पालै तिण सूं द्वेषो रे। दोय मूरख कह्या तेहने, पहिलो आचारांग देखो ॥ ति० ॥ २९ ॥ पाट बाजोट आणे गृहस्थ रा, पाछा देवण री नहीं नीतो रे सर-

आटा नोपने भोगवे. तिण छोड़ो जिणधर्म री गे
॥ ति० ॥ ३० ॥ तिणने डंड कह्यो एक मास
निशीथ रे उद्देशे बीजे रे । न्याय मारग परूपतां,
करमा मुण मुण खोजे रे ॥ ति० ॥ ३१ ॥

॥ इति साधाँ रा आचार सम्पूर्ण ॥



अथ जिन आज्ञा को चौढालियो

॥ दोहा ॥

केई पाषण्डी जैन रा, साधु नाम धराय । ते पाप कहै जिन आज्ञा मफे, कुड़ा कुहेत लगाय ॥१॥ आहार पाणी साधु भोगवे, ते श्रीजिन आज्ञा सहित । तिण मे प्रमाद ने अव्रत कहै, त्यांरी श्रद्धा घणी विपरीत ॥ २ ॥ वले वस्त्र पात्र कामलो, इत्यादिक उपधि अनेक । ते जिन आज्ञा स्यूं भोगवे, तिण मे पाप कहै ते विना विवेक ॥३॥ त्यां श्री जिन धर्म नहीं ओलख्यो, जिन आज्ञा पिण ओलखी नांह । तिणस्यूं अनेक बोलां तणो, पाप कहै जिन आज्ञा रे मांह ॥ ४ ॥ कहै नदी उतरे तिण साधु ने, आज्ञा दे जिन आप । आ प्रत्यक्ष हिन्सा देखल्यो, आज्ञा छै तो पिण पाप ॥ ५ ॥ इत्यादिक अनेक बोलां मझे, आज्ञा दे जिनराय । जठे हिंसा होवे छै जीव री, तठे पाप लागे छै आय ॥ ६ ॥ इम कही ने जिन आज्ञा

सा. थापे पाप एकान्त। हिवे ओलखाऊं जिन आगन्यां ते सुणज्यो मतिवन्त ॥ ७ ॥

॥ ढाल पहली ॥

(भवियण सेवो रे साधु सयाणा एदेशी)

जे जे कारज जिन आज्ञा सहित छै, ते उपयोग सहित करे आय। ते कारज करतां घात होवे जीवांरी, तिण रा साधु ने पाप न होय रे ॥ भवियण जिन आगन्यां पहचाणो ॥ १ ॥ जीवां तणी घात हुई साधु थी, त्यांरा साधु ने पाप न लागे। जिन आगन्यां पिण त्यांरा न कहिजे, वली साधु रा व्रत न भांगे रे ॥ २ ॥ आ कारज वालो वात उघाड़ी, कावां रे किण कीम समझाय। ज्यां जिन आज्ञा ओलखवी नहीं पूरी, ते जिन आज्ञा में पाप बतावे रे ॥ ३ ॥ नदी उतरे अब गुरु साधु ने, आज्ञा दे थी जिन आप। जो यां नदी उतरतां पाप कहे तो आज्ञा दे त्यांने पिण पापरे ॥ ४ ॥ कल्पमध्य साधु नदी उतरे जद, त्यांने कियरो आज्ञा दे कोण। [illegible] नदी उतरे छे, पाप हुवो तो [illegible] ॥ ५ ॥ जे नदी उतरे छे केवलज्ञानी, त्यांने [illegible] विचार। तो [illegible] ने पाप किम [illegible] आचार रे ॥ ६ ॥ [illegible]

आगार होवे तो, नदी उतरतां मोक्ष न जावे। किसा रे आगार में पाप लागे जब, चवदमों गुणठाणो न पावे रे ॥ १५ ॥ कोई कहे नदी उतरे जब साधु ने, लागे असंख्य किया परिहार। तिणरो प्रायश्चित लियां बिन शुद्ध नहीं छे। इम कहे तिण रे हिय छे अन्धार रे ॥ १६ ॥ जो नदी उतर्यां रो प्रायश्चित बिन लीधां, तो साधु शुद्ध नहीं थावे। तो नदी मांहि साधु मरे तो अशुद्ध छे, ते मोक्ष मांहि क्यूंकर जावे रे ॥ १७ ॥ साधु नदी उतर्यां मांहि दोष हुवे तो, जिन आगन्या दे नाहीं। जिन आगन्या दे तिहां पाप नहीं छे, ते सोच देखो मन मांहि रे ॥ १८ ॥ नदी उतरे लागे ध्यान किसो छे, किसी लेश्या किसा परिणाम। जोग किसा अध्यवसाय किसा छे, भला भूंडा पिछाणो ताम रे ॥ १९ ॥ ए पांचूं भला छे तो जिन आज्ञा में माठा में जिन आज्ञा न कोय। पांचूं माठा स्यूं तो पाप लागे छे, पांचूं भला स्यूं पाप न कोय रे ॥ २० ॥ [illegible] नदी उतरे जब, त्यारे [illegible] [illegible]। [illegible] केवली री आज्ञा स्यूं, [illegible] [illegible] लागे रे ॥ २१ ॥ जिन आगम [illegible] [illegible]. जिन आगन्यां छे मोटी। कोई जिन [illegible] पाप बतावे, तिण री श्रद्धा छे खोटी रे

॥ २२ ॥ दवरो दाधो जाय पड़े जल मांहि. पिण जल मांहि लागी लाय। तो किसी ठोड़ वो करै ठढाई. किसी ठोड़ साता होवै ताय रे ॥२३॥ ज्यूं जिण आज्ञा मांहि पाप होवै तो, किण री आज्ञा मांहि धर्मो। किण री आज्ञा पाल्यां शुद्ध गति जावै, किण री आज्ञा स्यूं कटै कर्मो रे ॥ २४ ॥ छांटां आवै छै तिण मांहि साधु, मात रो परठै दिसां जावै। तिण रे छै पिण जिनजी री आज्ञा, तिण में कुण पाप बतावै रे ॥ २५ ॥ साधु राते लघु बड़ी नीत दोनूं ही, परठण जावै अछांहि। वले सिज्झाय करै राते थानक बारै, जावै आवै अछायां मांहि रे ॥ २६ ॥ इत्यादिक साधु राते काम पड़े जब, अछायां आवै ने जावै। तिणने पिण छै जिनजी री आज्ञा, तिण मे कुण पाप बतावै रे ॥२७॥ राते अछायां अपकाय पड़े छै, तिण री घात साधु थी थाय। ओ पिण न्याय नदी जिम जाणो, तिण ने पाप किसी विध थाय रे ॥ २८ ॥ नदी मांहि वहती साधवी ने, साधु राखै हाथ संभावै। तिण मांहि पिण छै जिनजी री आज्ञा, तिण मे कुण पाप बतावै रे ॥२९॥ इर्या समिति चालतां साधु स्यूं, कदा जीव तणी होवै घात। ते जीव मुआं रो पाप साधु ने, लागे नहीं अंशमात रे ॥ ३० ॥ जो इर्या समिति विना साधु

चाले. कदा जीव मरे नवि कोय । तो पिण साधु ने तिण छकां काय री लागे । कर्म तणो बंध होय रे ॥३१॥ जीव मुआ तिहां पाप न लागो, न मुआ तिहां लागो पाप । जिण आज्ञा संभालो जिण आज्ञा ओलो, जिण आज्ञा में पाप म थापो रे ॥३२॥ जब कोई कहे मुलक्यां आल्यां चाल्यां बिन, साधु ने किम बहिरावे । आवण जावण री तो नहीं जिण आज्ञा, आल्यां बिन तो बहरावणी नावे रे ॥ ३३ ॥ बैठो होवे तो उठ बहरावे, ऊभो होवे तो बैठ बहरावे । बैठण उठण री तो नथी जिण आज्ञा, तो श्रावकां व्रत केम निपजावे रे ॥ ३४ ॥ जो जिण आज्ञा बारे पाप होवे तो, [illegible] [illegible] रो पाप थावे । साधां ने बहरायां रो धर्म है [illegible], कोई कुमति चरचा ल्यावे रे ॥३५॥ कोई कहे [illegible] री तो जिण आज्ञा नाहीं, तोही चाल बहरायां [illegible] धर्म । जिण आगन्यां बिन चाल्या तिण ने, लागो [illegible] पाप कर्म रे ॥ ३६ ॥ इण विध कुमति लगावे [illegible], धर्म कहे जिण आज्ञा बारे । [illegible] जिन [illegible] [illegible] धर्म [illegible] रा, थे जाब दिया मांहि धणी [illegible] [illegible] । [illegible] बचन काया रा जोग तीनूं ही, [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] जगां री श्री जिन आज्ञा. जिन [illegible] [illegible] [illegible] रे ॥ ३८ ॥ जोग नाम व्यापार [illegible]

बघाचार सोलमूं, तिणमें धर्म नहीं छै लिगार रे ॥५५॥ शरीरादिक ने श्रावक पूंजे, मातरादिक ने परठै पूंजे। इत्यादिक कारज री नहीं जिन आज्ञा, धर्म कहे त्यांने संवलो न सूझे रे ॥ ५६ ॥ शरीर पूंजे मातरादिक परठै, ते तो शरीरादिक रो छै काज। जो धर्म तणो ए कार्य हुवे तो, आगन्यां देता जिनराज रे ॥ ५७ ॥ जो पूंजणो परठणो न करे श्रावक, तो काया थिर राखणी एक ठाम। पिण हस्तादिक ने बिन चलायां, रहणी नावे ताम रे ॥ ५८ ॥ लघु बड़ी नीत तणी अबाधा, खमणी ठमणी न आवे ताम। पूंजे परठे तोइ सावद्य कर्तव्य छै, जिन आज्ञा रो नवि काम रे ॥ ५९ ॥ कदा थोड़ी बुद्धि त्यांने समज न पड़े तो, राखणी जिण प्रतीत। आगन्यां मांहि पाप आज्ञा बारे धर्म, इसड़ी न करणी अनीत रे ॥ ६० ॥ जिन आगन्यां मांहि पाप कहे छै, ज्यांरी मत घणी छै माठी। जिन आगन्यां बारे धर्म कहे छै, त्यांरे आई अकल आड़ी पाटी रे ॥६१॥ जिन आगन्यां मांहि पाप कहतां, मूरख मूल न लाजे। वले धर्म कहे जिन आगन्यां बारे, ते पण्डित पाखण्डियां मे बाजे रे ॥६२॥ जिन आगन्यां मांहि पाप कहे छै ते बुड़े छै कर कर ताणो। वले धर्म कहे जिन आगन्यां बारे, ते तो पूरा छै मूढ अजाणो रे ॥६३॥ समत अठारानें वर्ष

आगी। कर्त्तव्य छोड़ने चालगा री आज्ञा देवे तो. गृहस्थ रो सभोगी थायो रे ॥ ४७ ॥ गृहस्थ रे घर पड्यो कपड़ादिक. जब साधु सूं जाणो नावे मांहि। ना कोई गृहस्थ भेलो करे कपड़ादिक. साधु ने मारग देवे सांहि रे ॥४८॥ साधां ने मारग देवे आवण जावण रो, ते कर्त्तव्य निरवद्य चोखो। जो कपड़ादिक रे काम भेलो करे तो सावद्य काम छे टोखो रे ॥ ४९ ॥ तिण नैं साधु कहे गृहस्थ ने, म्हांने जायगां दो आवा मांहि। तिण कपड़ादिक भेलो करी मांदट ने, ईमड़ो न काढे [illegible] रे ॥ ५० ॥ गृहस्थ री उपधि करे आगी पाछी, [illegible] सावद्यादिक रे काम। तो पिण कर्त्तव्य निर्वद्य [illegible] उपधि ऊपर परिणाम रे ॥ ५१ ॥ कोई [illegible] धर्म कहे छे [illegible]। [illegible] पाढे, [illegible] अनेक [illegible] रे ॥ ५२ ॥ श्रावक री [illegible] [illegible]। तिण में थो जिन आज्ञा [illegible] तिण मांहि धर्म बतावे रे ॥ ५३ ॥ श्रावक [illegible] तिण [illegible] [illegible] आज्ञा [illegible] [illegible] रे ॥ ५४ ॥ [illegible]

अणाचार सोलमूं, तिणमें धर्म नहीं छै लिगार रे ॥५५॥ शरीरादिक ने श्रावक पूंजे, मातरादिक ने परठै पूंजे। इत्यादिक कारज री नहीं जिन आज्ञा, धर्म कहै त्यांने संवलो न सूझै रे ॥ ५६ ॥ शरीर पूंजे मातरादिक परठै, ते तो शरीरादिक रो छै काज। जो धर्म तणो ए कार्य हुवै तो, आगन्यां देता जिनराज रे ॥ ५७ ॥ जो पूंजणो परठणो न करै श्रावक, तो काया थिर राखणी एक ठाम। पिण हस्तादिक ने बिन चलायां, रहणी नावै ताम रे ॥ ५८ ॥ लघु बड़ी नीत तणी अबाधा, खमणी ठमणी न आवै ताम। पूंजे परठे तोइ सावद्य कर्तव्य छै, जिन आज्ञा रो नवि काम रे ॥ ५९ ॥ कदा थोड़ी बुद्धि त्यांने समज न पड़े तो, राखणी जिण प्रतीत। आगन्यां मांहि पाप आज्ञा बारे धर्म, इसड़ी न करणी अनीत रे ॥ ६० ॥ जिन आगन्यां मांहि पाप कहे छै, ज्यांरी मत घणी छै माठी। जिन आगन्यां बारै धर्म कहै छै, त्यांरे आई अकल आड़ी पांटी रे ॥६१॥ जिन आगन्यां मांहि पाप कहतां, मूरख मूल न लाजे। वले आगन्यां मांहि पाप कहतां, मूरख मूल न लाजे। वले धर्म कहै जिन आगन्यां बारै, ते पण्डित पाखण्डियां में बाजे रे ॥६२॥ जिन आगन्यां मांहि पाप कहै छै ते बुड़े छै कर कर ताणो। वले धर्म कहै जिन आगन्यां बारै, ते तो पूरा छै मूढ अजाणो रे ॥६३॥ समत अठारानै वर्ष

सुकराले, जेठ सुद तीज ने शुक्रवार। जिन आगन्यां ओलखावण काजे, जोड़ कीधी छे पर उपगार रे ॥६॥

॥ दोहा ॥

जिन शासण में आज्ञा बड़ी, ओलखजे ते बुधिवान। ज्यां जिण आज्ञा नवि ओलखी, ते जीव छै विकल समान ॥ १ ॥ दोय करणी संसार में, सावद्य निर्वद्य जाण। निर्वद्य में जिण आगन्यां, तिण सूं पामे पद निर्वाण ॥२॥ सावद्य करणी संसार नी, तिण में जिन आगन्यां नहीं होय। कर्म बंधे छै तेह थी, धर्म म जाणो कोय ॥३॥ किहां २ छै जिण आगन्या, किहां २ आगन्या बार। बुधिवंत करो विचारणा, निरणो करो घट सार ॥ ४ ॥

॥ ढाल दूजी ॥

(धु मति लोपो रे श्री पूज्यजी रे नाम री ए देशी)

कोई कहे दयादान मीठारणां, तिणरी आगन्या दी जिन राज छै ॥ स्वामीजी ॥ कोई दान रे लारो लगावे छै दया, आप करो सुध आप री। स्वामीजी। थें ओलखजो ओ जिनजी री आगन्यां

॥ १ ॥ जिण आज्ञा सहित नौकारसी, कीधां कटे सात आठ कर्म हो ॥ स्वा०॥ कोई दान दे लाखां संसार में, ते तो आप रो भाख्यो नहीं धर्म हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥२॥ अन्तर मुहूर्त्त त्यागे एक भूंगड़ो, तिण री आगन्यां दी जिनराज हो ॥ स्वा० ॥ कोई जीव छुड़ावे लाखां दाम दे। तठे आप रहो मौन साझ हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥ ३ ॥ अन्तर मुहूर्त्त त्यागे एक भूंगड़ो, ते तो आप रो सिखायो छै धर्म हो ॥ स्वा० ॥ तिण स्यूं कर्म कटे तिण जीव रा, उतकृष्टो पामें सुख परम हो ॥ स्वा० ॥ ४ ॥ कोई जीव छुड़ावे लाखां दाम दे, ते तो आप रो सिखायो नहो धर्म हो ॥ स्वा० ॥ ओ तो उपकार ससार नो, तिण स्यूं कटता न जाण्या आप कर्म हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥ ५ ॥ कोई साधां ने बहिरावे एक तिणकलो, तिण री आज्ञा दी आप साख्यात हो ॥ स्वा० ॥ कोई श्रावक जीमावे कोडांगमे, तिण री आज्ञा न दी अशमात हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥ साधा ने बहिरावे एक तिणकलो, तिण रे बारमूं व्रत कह्यो आप हो ॥ स्वा० ॥ तिण स्यूं आज्ञा दीधी आप तेहने, वले कटता जाण्या तिण रा पाप हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥७॥ कोई श्रावक जीमावे कोड़ां न्यूंत ने, ते तो सावद्य कामो जाण्यो आप हो ॥स्वा०॥ उण छव काय शस्त्र पोषियो, तिणमे लागो छै एकन्त

[illegible] ॥ स्वा० ॥ हूं ॥ ८ ॥ कोई करै व्यावच श्रावकां [illegible], तठै पिण आपरे छै मौन हो ॥ स्वा० ॥ उण [illegible] ओघो के [illegible] काय नो, ते कर्तव्य आपरो [illegible] हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥ ९ ॥ कोई उघाड़े मुख [illegible] मिनखा ने, कोडागमे गुणो छै नवकार हो ॥ स्वा० ॥ तिण में आप तणी आगन्या नहीं, तिण में [illegible] निगाह हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥ १० ॥ उघाड़े मुख [illegible] नवकार ने, तिण वाउकाय मारया [illegible] हो ॥ स्वा० ॥ तिण में धर्म शुद्ध ते भोला थका, त्यांरे [illegible] हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥ ११ ॥ [illegible] नवकार ने, तिण स्यूं कोड़ भयांरा कटै [illegible] हो ॥ स्वा० ॥ तिण में आप तणी छै आगन्या, [illegible] निर्जरा धर्म हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥ १२ ॥ [illegible] प्रगटै छै मायदा [illegible] हो ॥ स्वा० ॥ [illegible] आज्ञा भगवान री, त्यांरे घट मांहे [illegible] हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥ १३ ॥ मौन करी [illegible] ते तो [illegible] ॥ स्वा० ॥ तिण री [illegible] सूत्र में [illegible]। [illegible] हो ॥ स्वा० ॥ [illegible] ॥ १४ ॥ [illegible] त्यांरा [illegible] हो ॥ स्वा० ॥ [illegible]

तिण रा करूं च्यार भाग हो ॥स्वा०॥ हूं॥ १५ ॥ एक भाग राण्यां निमते करूं, दूजो भाग करूं खजान हो ॥ स्वा० ॥ तीजो भाग घोड़ा हाथी निमत करूं, चौथो भाग करूं देवा दान हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥ १६ ॥ च्यारूं भाग सावद्य कामो जाणने, मौन साझो रह्या केशी स्वाम हो ॥ स्वा० ॥ जो उवे किणहिक मे धर्म जाणता, तो तिण री करता प्रशंसा ताम हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥१७॥ सावद्य कर्तव्य च्यारूं भाग राज रा, त्यांसे जीवां री हिन्सा अत्यन्त हो ॥ स्वा० ॥ तिण स्यूं च्यारूं बराबर जाण ने, मौन साझी रह्या मतिवन्त हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥ १८ ॥ दान देवा मंडाई दानशाल में, प्रदेशी नामे राजान हो ॥ स्वा० ॥ सात सहंस हुन्ता गांव खालसे, तिणरी चौथी पांती रो देवा दान हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥ १९ ॥ च्यार भाग कर आप न्यारो हुवो, तिण जाण्यो संसार नो माग हो ॥ स्वा० ॥ तिण तिथ न कीधी तिण राज री, रह्यो मुक्त स्यूं सन्मुख लाग हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥ २० ॥ ओ तो दान औरां ने भोलाय ने, तिण पूछो न दिसे बात हो ॥ स्वा० ॥ चवदे प्रकार रो दान साध ने, ते तो राख्यो निज पोता रे हाथ हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥ २१ ॥ चौथो भाग दान तालके करी, नहीं राख्यो पोता रे हाथ हो ॥ स्वा० ॥ तीनूं भाग ज्यूं बुध

ने दिण थापियो, छव काय जीवां री जाणी घात हो ॥ स्वा० ॥ ध्रु ॥२२॥ साढा सातसे सौ गांव दान तालके, दिन दिन प्रते मठेरा पांच गांव हो ॥ स्वा० ॥ त्यांरे डांमल रो धान रंधाय ने, दानशाला मण्डाई ठाम ठाम हो ॥ स्वा० ॥ ध्रु ॥२३॥ टालया गांव जाणीज्यो तालके, ते तो चौथे आरे रा छा गांव हो ॥ स्वा० ॥ [illegible] पिण आलतो जाणज्यो घणो, [illegible] पण कुणी घणो आराम हो ॥ स्वा० ॥ ध्रु ॥२४॥ डांमल आयो कुवे एक लाख गांव रो, दश सहस मण रे उनमान हो ॥ स्वा० ॥ दिन २ प्रते मठेरा पांच गांव रो, ऊणो पचास हजार मण धान हो ॥ स्वा० ॥ ध्रु ॥ २५ ॥ इण हिसाबे एक [illegible] लागे, पूणा त्राय क्रोड़ मण धान हो ॥ स्वा० ॥ [illegible] आप जाणो रह्या, अटकल स्यूं [illegible] हो ॥ स्वा० ॥ ध्रु ॥ २६ ॥ पाणी पांच क्रोड़ [illegible] रे आसरे, पूणा त्राय क्रोड़ मण रांध्यां धान हो ॥ स्वा० ॥ [illegible] एक क्रोड़ मण आणज्यो, [illegible] [illegible] रे उनमान हो ॥ स्वा० ॥ ध्रु ॥ २७ ॥ [illegible] [illegible] अन्न पाणी हजारां मण [illegible] [illegible] स्वा० ॥ [illegible] दिण लागतां, [illegible] [illegible] हो ॥ स्वा० ॥ ध्रु ॥ २८ ॥ [illegible]

मांय हो ॥ स्वा० ॥ धान हजारां मण रांधता, तिहां
अनेक मुआ तसकाय हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥ २८ ॥ दिन
दिन प्रते मारे छव काय ने, वले अनन्त जीवां री
करै घात हो ॥ स्वा० ॥ त्यांरी हिन्सा रो पाप गीणे
नही, त्यांरे हिंसा धर्म रो मिथ्यात हो ॥ स्वा० ॥ हूं
॥ ३० ॥ एहवा दुष्ट हिन्सा धर्मी जीवड़ा, कोई जाणे छे
अज्ञानी साध हो ॥ स्वा० ॥ तिण रे घट मांहि घोर
अन्धार छै, ते तो नियमा निश्चे छे असाध हो ॥ स्वा०
॥ हूं ॥ ३१ ॥ कोई जीव खुवायां मे पुन्य कहे, कोई
मिश्र कहे छे मूढ़ हो ॥स्वा०॥ ए दोनूं वूड़ा छे बापड़ा
कर कर मिथ्यात री रूढ़ हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥ ३२ ॥
जीव खाधां खुवायां भलो जाणियां, तीनूं ही करणा
छै पाप हो ॥ स्वा० ॥ आ श्रद्धा प्ररूपी छे आप री, ते
पिण देवे छे अज्ञानी उत्थाप हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥३३॥
कोई जीव खुवावे छे तेहनां, चोखा कहे अज्ञानी परि-
णाम हो ॥ स्वा० ॥ कहे धर्म ने मिश्र हुवे नही, जीव
खुवायां बिन ताम हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥ ३४ ॥ जीव
खावण रा परिणाम छे अति बुरा, खुवावण रा पिण
खोटा परिणाम हो ॥ स्वा० ॥ युंही भोला ने न्हाखे
भ्रम में, ले ले परिणामां रो नाम हो ॥ स्वा० ॥ हूं
॥ ३५ ॥ कोई कहे जीवां ने मार्यां बिना, धर्म न हुवे

ताम हो ॥ स्वा० ॥ जीव मार्‍यां रो पाप लागे नहीं, [illegible] चाहिजे निज परिणाम हो ॥ स्वा० ॥ छं ॥ ३६॥ हिंसा करे जीवां ने मार्‍यां बिना. मिश्र न हुवे ताम हो ॥ स्वा० ॥ ते जीव मारण री सांनो करे, ते ते परिणामां रो नाम हो ॥ स्वा० ॥ छं ॥ ३७ ॥ कोई धर्म रे मिश्र परूपणा भणी. छव काय रो करे घमसाण हो ॥ स्वा० ॥ तिण रा परिणाम चोखा कह्यां थकां, पर जीवां रा छूटे प्राण हो ॥ स्वा० ॥ छं ॥ ३८ ॥ जिण [illegible] लीधी आप री आगन्यां. भोगवत लीधी आप री [illegible] हो ॥ स्वा० ॥ तिण आप ने पिण भोगवण लिया. तिण रे दया मांहो [illegible] जुग हो ॥ स्वा० ॥ छं ॥३९॥ जिन आज्ञा बाहिर भोगवी आप री, भोगवी बलि आप [illegible] हो ॥ स्वा० ॥ तिण आप ने पिण भोगव्या [illegible] तिण रे धर्ममां मांहो मांहो जुग हो ॥ स्वा० ॥ छं ॥ ४० ॥ कोई जिण आज्ञा बारे धर्म कहै, जिण [illegible] पाप हो ॥ स्वा० ॥ ते दोनूं विध [illegible] अज्ञानी विलाप हो ॥ स्वा० ॥ छं ॥ ४१ ॥ आप रो धर्म आप री आगन्या [illegible] आप री आज्ञा बार हो ॥ स्वा० ॥ जिण [illegible] तेतो मूरख [illegible] निकार [illegible] ॥ ४२ ॥ [illegible]

आप अवसर देखी साभी मौन हो ॥ स्वा० ॥ जिहां आप तणी आगन्यां नथि, ते करणी छै जावक जवून हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥ ४३ ॥ भेषधारयां सावद्य दान थापियो. तिण दान स्यूं दया उत्पप जाय हो ॥ स्वा० ॥ वले दया कहे छव काय बचावियां, तिण स्यूं दान उत्पप गयो ताय हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥ ४४ ॥ छव काय जीवां ने जीवां मारने, कोई दान देवे संसार रे मांय हो ॥ स्वा० ॥ तिण रे घट मे छव काय जीवां तणी, काई दया रही नहीं ताय हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥ ४५ ॥ कोई दान देवे तिण ने बरजने, जीव बचावे छव काय हो ॥स्वा०॥ ते जीव बचायां दया उत्थपे, तिण स्यूं न्यारा रह्यां सुख थाय हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥ ४६ ॥ छव काय जीवां ने मारी दान दे. तिण दान स्यूं मुक्त न जाय हो ॥ स्वा० ॥ वले फिर बचावे छव काय ने, तिणस्यूं कर्म कटे नही ताय हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥ ४७ ॥ सावद्य दान दियां स्यूं दया उत्थपे, सावद्य दया स्यूं उत्थपे अभय दान हो ॥ स्वा० ॥ सावद्य दान दया छै संसार ना, याने ओलखे ते बुद्धिवान हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥४८॥ त्रिविधि २ छव काय हणावी नहीं, आ दया कही जिनराय हो ॥स्वा०॥ दान देणो सुपात्र ने कह्यो, तिणस्यूं मुक्त सुक्ति सुखि जाय हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥ ४९ ॥ दान

इया दोनूं मारग मोक्ष रा, ते तो आपरी आ[illegible]
मानित छो ॥ स्वा० ॥ याने रूड़ी रीत आराधिया, [illegible]
गया जमारो जीत को ॥ स्वा० ॥ हूं ॥५०॥ आप त[illegible]
आज्ञा ओलखायवा, जोड़ कीधी नवा शहर मझार [illegible]
॥ स्वा० ॥ समत अठार ने वर्ष चमालीसे, महा [illegible]
आनम उत्पतिवार छो ॥ स्वामीजी हूं बलिहारी [illegible]
हूं बलिहारी छा श्री जिनजी री आगन्यां ॥ ५१ ॥

॥ दोहा ॥

श्री जिन धर्म जिन आज्ञा मझे, आज्ञा बारे न[illegible]
जिन धर्म। जिण स्यूं पाप कर्म लागे नहीं, बले [illegible]
[illegible] ॥१॥ केई रूढ़ मिथ्याती इम कहे, [illegible]
[illegible] बारे जिन धर्म। जिन आज्ञा मांहे कहे प[illegible]
[illegible] ॥ २ ॥ जिन आज्ञा [illegible]
[illegible] जिन आज्ञा मांहे कहे पाप। ते जिन [illegible]
[illegible] रूढ़ विलाप ॥ ३ ॥ [illegible]
[illegible], पाप के निर्जरा करणी निर्[illegible]
[illegible] धर्म को भेद ॥४॥ [illegible]
[illegible] के जिण री थाप। ते [illegible]
[illegible] ॥ ५ ॥ केई [illegible]

तो माने नहि, माने हिंसा में एकान्त धर्म। ते पण बूडे छे बापड़ा, भारी करै छे कर्म ॥ ६ ॥ जिन धर्म तो जिण आज्ञा मझे, आज्ञा बारे धर्म नहीं लिगार। तिण में साख सूत्र री दे कहूं, ते सुणज्यो विस्तार ॥ ७ ॥

॥ ढाल तीजो ॥

(जीव मारे ते धर्म आछो नवि पदेशी)

आज्ञा मे धर्म छे जिनराज रो, आज्ञा बारे करै ते मूढ रे। विवेक विकल शुद्ध बुद्ध बिना, ते बुड़े छे कर कर रूढ़ रे ॥ श्री जिन धर्म जिन आगन्यां तिहां ॥ १ ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र ने तप, ए तो मोक्ष रा मारग च्यार रे। यां च्यारां में जिनजी री आगन्यां, यां बिना नहीं धर्म लिगार रे ॥ श्री ॥ २ ॥ यां च्यारां मांहला एक एक री, आज्ञा मांगे जिनेश्वर पास रे। तिण ने देवै जिनेश्वर आगन्या, जब उ पामे मन में हुलास रे ॥ श्री ॥ ३ ॥ या च्यारां बिना मांगे कोई आगन्यां, तो जिनेश्वर साझे मौन रे। तो जिन आगन्यां बिना करणी करै, ते करणी छे जावक जबुन रे ॥ श्री ॥ ४ ॥ बारे भेदे कटे बन्धिया कर्म रे। त्यांने देवै जिनेश्वर आगन्यां, मोहिज जिण बीसां भेदां रुकै कर्म आंवता. बारे भेदे कटे बन्धिया कर्म रे। त्यांने देवै जिनेश्वर आगन्यां, मोहिज जिण

भाख्यो धर्म रे ॥ श्री ॥ ५ ॥ कर्म कटे तिण करणी में आगन्यां, कर्म कटे तिण करणी में जाण रे। यां दोयां करणी विना नहि आगन्यां, ते सगली सावद्य पिछाण रे ॥ श्री ॥ ६ ॥ देव अरिहन्त ने गुरु साध छे, केवली भाख्यो ते धर्म रे। और धर्म में नहीं जिन आगन्या, तिण में लागे छे पाप कर्म रे ॥ श्री ॥ ७ ॥ जिन भाख्या [illegible] जिनजी री आगन्यां, औरां री भाषा में और आण रे, तिण मूं [illegible] गत जावे नहीं, वले पाप [illegible] जाण रे ॥ श्री ॥ ८ ॥ केवली भाख्यो धर्म मंगलीक [illegible] [illegible] उत्तम जाण रे। शरणो पिण त्यां दुण धर्म [illegible] तिण में श्रीजिन आज्ञा प्रमाण रे ॥ श्री ॥ ९ ॥ [illegible] सूत्र मांहि देखल्यो, केवली भाख्यो ते धर्म रे। [illegible] मांहि तिहां धर्मज्यो नहीं, [illegible] मांहि तिहां पाप [illegible] रे ॥ श्री ॥ १० ॥ [illegible] मांहिलो धर्म [illegible] [illegible] [illegible] रे। [illegible] [illegible] ॥ श्री ॥ ११ ॥ धर्म [illegible] जिण आज्ञा [illegible] रे। [illegible] आज्ञा [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] भर्ला त्यांसे [illegible] [illegible] रे। [illegible] [illegible] [illegible] पाप [illegible] रे ॥ श्री ॥ १३ ॥

च्यार मंगल च्यार उत्तम कह्या, च्यार शरणा कह्या
जिनराय रे । ए सगला छै जिन आगन्या मझे, आज्ञा
विन आच्छी वस्तु न काय रे ॥ श्री ॥ १४ ॥ भला
परिणाम में जिन आगन्यां. माठा परिणामां आज्ञा
बार रे । भला परिणामां निर्जरा निपजै. माठा परि-
णामां पाप द्वार रे ॥ श्री ॥ १५ ॥ भला अध्यवसाय में
जिन आगन्यां, आज्ञा बारै माठा अध्यवसाय रे ।
भला अध्यवसायां सूं निर्जरा हुवे, माठा अध्यवसायां
सूं पाप बन्धाय रे ॥ श्री ॥१६॥ ध्यान लेश्या परिणाम
अध्यवसाय छे, च्यारूं भला मे आज्ञा जाण रे । च्यारूं
माठा में जिन आज्ञा नहीं, यांरा गुणां री करज्यो
पिछाण रे ॥ श्री ॥ १७ ॥ सर्व मूल गुण ने उत्तर गुणे,
देश मूल उत्तर गुण दोय रे । दोयां गुणां मे जिनजी
री आगन्यां, आगन्यां बारै गुण नवि कोय रे ॥ श्री ॥
१८ ॥ अर्थ परम अर्थ जिन धर्म छै, उववाई सूयगडांग
मांय रे । तिण मे तो जिनजी री आगन्यां, शेष अनर्थ
मे आज्ञा नवि ताय रे ॥ श्री ॥ १९ ॥ सर्व व्रत धर्म
साधां तणो, देश व्रत श्रावक रो धर्म रे । यां दोयां धर्म
में जिनजी री आगन्यां, आज्ञा बारै तो बन्धसी कर्म रे
॥ श्री ॥ २० ॥ उजलो धर्म छै जिनराज रो, ते तो श्री
जिन आज्ञा सहित रे । मुगत जावा अजोग अशुद्ध

कह्यो, ते तो जिन आज्ञा सूं विपरीत छे ॥श्री॥ २१॥ आज्ञा लोप छांडे चाले आप छे, ते ज्ञानादिक धन सूं [illegible] ढाग छे। आचारांग अध्ययन दूसरे, ओघो कह्यो [illegible] मांय छे ॥ श्री ॥ २२ ॥ आज्ञा सूं करो ते धर्म [illegible], [illegible] सिखावे साधु मन मांय छे। आज्ञा [illegible] करणो [illegible], कह्यो बोलवो विण नहि [illegible] छे ॥ श्री ॥ २३ ॥ आज्ञा मांहलो ते धर्म मांहलो, [illegible] धर्म पारखो थाय छे, आचारांग कह्यो अध्ययन में, [illegible] मांय विछाण छे ॥श्री॥२४॥ आज्ञा मांहि [illegible] आज्ञा में दोनूं परिणाम छे। आज्ञा [illegible] आज्ञा नहि, [illegible] कह्यो परान [illegible] छे ॥ श्री ॥ २५ ॥ आचार [illegible] ग्रहण [illegible] कह्यो, [illegible] जिन आज्ञा [illegible] छे। आचारांग चौथा अध्ययन में [illegible] मांय विछाण छे ॥ श्री ॥२६॥ [illegible] जिन [illegible] ते आज्ञा मांहिल [illegible] छे। आचारांग चौथा अध्ययन में, [illegible] छे ॥ श्री ॥ २७ ॥ [illegible] साधक गुरु [illegible] छे। [illegible] आचारांग [illegible]

[illegible] जिन आज्ञा [illegible] आज्ञा

करै, गुरु कहै शिष्य तोने दोष म होय रे ॥ श्री ॥२६॥ कुमारग तणी करणी करै, सुमारग रो आलस होय रे। ए दोनूंहीं करणी दुरगत तणी, आचारांग पांचमे अध्ययन जोय रे ॥श्री॥३०॥ जिण मारगरा अजाणने, जिण उपदेश नों लाभ न होय रे। आचारांग रा चौथा अध्ययन में तीजै उद्देशे मे जोय रे ॥ श्री ॥३१॥ ज्यां दान सुपात्र ने दियो, तिणसे श्री जिन आज्ञा जाण रे। कुपात्र दान में आगन्यां नही, तिण री बुद्धवन्त करज्यो पिछाण रे ॥ श्री ॥ ३२ ॥ साध बिना अनेरा सर्व ने, दान नही दे माठो जाण रे। दोधां भ्रमण करै ससार में, तिण स्यूं साध किया पच्चखाण रे ॥ श्री ॥ ३३ ॥ सूयगडांग नवमा अध्ययन में. बीसमी गाथा जोय रे। वले दीधां भांगै व्रत साध रो. जिन आगन्यां पिण नवि कोय रे ॥ श्री ॥ ३४ ॥ पात्र कुपात्र दोनूं ने दियां, विकल कहै दोयां में धर्म रे। धर्म हुसी सुपात्र दान में, कुपात्र ने दियां पाप कर्म रे ॥ श्री ॥ ३५ ॥ खेत्र कुखेत्र श्री जिन-वर कह्यो, चौथे ठाणै ठाणाअङ्ग मांय रे। सुखेत्र में दियां जिन आगन्यां, कुखेत्र मे आज्ञा नवि काय रे ॥ श्री ॥ ३६ ॥ आहार पाणी ने वले उपधादिक, साधु देवै गृहस्थ ने कोय रे। तिण ने चौमासी दण्ड निशीथ मे, पनरमे उद्देशे जोय रे ॥ श्री ॥ ३७ ॥ गृहस्थ ने

॥ दोहा ॥

भेषधारी विगरायल जैन रा, ते कूड़ कपट री खान । ते आगन्यां वारै धर्म कहै, त्यांरे घट में घोर अज्ञान ॥ १ ॥ त्यांने ठीक नहीं जिन धर्म री, जिण आज्ञा री पिण नवि ठीक । त्यांने परिवार विवेक विकल मिल्या. त्यांमें वाजे पूज मेठीक ॥ २ ॥ ते वड़ा ऊट ज्यूं आगै चलै, लार चलै जेम कतार । बोहला वूड़ै छै वापड़ा. वड़ा वूढ़ां री लार ॥ ३ ॥ हिवै वलै विशेष जिन आगन्यां. ओलखजो बुद्धिवान । तिण रा भाव भेद प्रकट करूं, ते सुणज्यो सूरत दे कान ॥ ४ ॥

॥ ढाल चौथी ॥

(जंबु कुंवर कहै परभव सुणो एदेशी)

साधु सामायक व्रत उचरै, तिण मे सावद्य रा पच्चखाण ॥ भविक जन हो ॥ तेहिज सावद्य गृहस्थ करै, तिण में श्री जिन धर्म म जाण ॥ भविक जन हो ॥ श्री जिन धर्म जिन आगन्यां तिहां ॥ १ ॥ श्रावक सामायक पोसो करै, तिण में पिण सावद्य रा पच्चखाण ॥ भ० ॥ तेहिज सावद्य कामो छूटो करै. तिणमें पिण जिन धर्म म जाण ॥ भ० ॥ २ ॥ श्री ॥ धर्म कहै साधु जिन आगन्यां मझै, आज्ञा वारै धर्म कहै ते मूढ़ ॥

॥ दोहा ॥

भेषधारी विगरायल जैन रा, ते कूड़ कपट री खान। ते आगन्यां बारै धर्म कहै, त्यांरै घट में घोर अज्ञान ॥ १ ॥ त्यांने ठीक नहीं जिन धर्म री, जिण आज्ञा री पिण नवि ठीक। त्यांने परिवार विवेक विकल मिल्या, त्यांमें बाजै पूज मेंठीक ॥ २ ॥ ते बड़ा ऊंट ज्यूं आगै चलै, लार चलै जेम कतार। बोहला छै बापड़ा, बड़ा बूढ़ां री लार ॥ ३ ॥ हिवै बले जिन आगन्यां, ओलखजो बुद्धिवान। तिण री प्रकट करूं, ते सुणज्यो सूरत दे कान ॥ ४ ॥

॥ ढाल चौथी ॥

दान दे तिण साधु ने. प्रायश्चित चावे कीधो अधर्म रे। ... दान गृहस्थ देवे, त्यांने किण विध होसी ... रे ॥ श्री ॥ ३८ ॥ असंजम छोड़ संजम आदर्यो। ... छोड़ ... ब्रह्मचार रे। ... अकार्य ... किधो अङ्गीकार रे ॥ श्री ॥ ३९ ॥ ... आदर्यो, माठी क्रिया छोड़ी माठी ... रे। भली क्रिया ने साधु आदरी, जिण आज्ञा ... रे ॥ श्री ॥ ४० ॥ मिथ्यात छोड़ ... आदर्यो. ... छोड़ आदर्यो बोध रे। उन्मार्ग ... जिण ... आतमा शुद्ध रे ॥ ... ४१ ॥ ... जिन उपदेश सूं, पाप कर्म ... रे। जिन आज्ञा स्यूं ... आदर्यो ... रे ॥ श्री ॥ ४२ ॥ ठाम ठाम ... जिण धर्म जिन आज्ञा में जाण रे। ... आगम ... ... , आगम्यो ... धर्म ... ... रे।

॥ दोहा ॥

भेषधारी विगरायल जैन रा, ते कूड़ कपट री खान । ते आगन्यां वारे धर्म कहै, त्यांरे घट में घोर अज्ञान ॥ १ ॥ त्यांने ठीक नहीं जिन धर्म री, जिण आज्ञा री पिण नवि ठीक । त्यांने परिवार विवेक विकल मिल्या. त्यांमे वाजे पूज मेंढीक ॥ २ ॥ ते वड़ा ऊट ज्यूं आगे चलै, लार चलै जेम कतार । बोहला बूड़ै छै वापड़ा. वड़ा बूढ़ां री लार ॥ ३ ॥ हिवे वले विशेष जिन आगन्यां. ओलखजो बुद्धिवान । तिण रा भाव भेद प्रकट करूं, ते सुणज्यो सूरत दे कान ॥ ४ ॥

॥ ढाल चौथी ॥

(जंबु कुंवर कहै परभव सुणो एदेशी)

साधु सामायक व्रत उचरै, तिण मे सावद्य रा पच्चखाण ॥ भविक जन हो ॥ तेहिज सावद्य ग्रहस्थ करै, तिण मे श्री जिन धर्म म जाण ॥ भविक जन हो ॥ श्री जिन धर्म जिन आगन्यां तिहां ॥ १ ॥ श्रावक सामायक पोसो करै, तिण में पिण सावद्य रा पच्चखाण ॥ भ० ॥ तेहिज सावद्य कासो छूटो करै, तिणमे पिण जिन धर्म म जाण ॥ भ० ॥ २ ॥ श्री ॥ धर्म कहै साधु जिन आगन्यां मझे, आज्ञा वारै धर्म कहै ते मूढ़ ॥

भ० ॥ तिण श्री जिन धर्म न ओलख्यो, तिण भालो [illegible] रो रुद्र ॥ भ० ॥ ३ ॥ श्री ॥ जिन धर्म री जिन आगन्यां देवे, जिण धर्म सिखावे जिनराय ॥ भ० ॥ आज्ञा बारे धर्म जिण सोधावियो, तिण री आज्ञा देवे [illegible] ताय ॥ भ० ॥ ४ ॥ श्री ॥ कोई आगन्यां बारे मिश्र [illegible] धर्म विण आज्ञा बार ॥ भ० ॥ तिणने पुछिजे थां धर्म किण [illegible], तिण रो नाम तूं सीधे बताय ॥ भ० ॥ ५ ॥ श्री ॥ इण मिश्र ने धर्म रो कुण धणी, तिण री आज्ञा कुण दे [illegible] ताय ॥ भ० ॥ देवगुरु धर्म [illegible], कुण री उपत्ता रो कुण नाथ ॥ भ० ॥ ६ ॥ श्री ॥ कोई वेश्या रा पुत्र ने पूछा करे, थारो [illegible] कुण है [illegible] तात ॥ भ० ॥ जब उ नांव बतावे [illegible], ज्यूं या तिण वालां री छे वात ॥ भ० ॥ ७ ॥ श्री ॥ वेश्या रा पुत्र जात रो उपनो, तिण री [illegible] सें थाप ॥ भ० ॥ ज्यूं आज्ञा बारे धर्म [illegible] थापना थाप ॥ भ० ॥ ८ ॥ श्री ॥ [illegible] उपनो [illegible] ॥ भ० ॥ ज्यूं जिन आगन्यां बारे धर्म ने [illegible] थापना थाप ॥ भ० ॥९॥ श्री ॥ [illegible] तिण रा [illegible] ॥ भ० ॥ ज्यूं [illegible] जिन आगन्यां

विना, करणी कीधां धर्म साख्यात ॥ भ० ॥१०॥ श्री ॥
बाप विण बेटो निश्चे हुवे नही. ज्यूं जिन आज्ञा विना
धर्म न होय ॥ भ० ॥ जिन आज्ञा होसी तो जिन धर्म
छै, आज्ञा विना धर्म न होय ॥ भ० ॥ ११ ॥ श्री ॥
मा विन बेटा रो जन्म हुवे नहीं, जन्मे ते बांझ न
होय ॥ भ० ॥ ज्यूं जिन आज्ञा विना धर्म हुवे नहीं,
जिन आज्ञा तिहां पाप न कोय ॥ भ० ॥ १२ ॥ श्री ॥
गघु पंखी ने चोर दोनूं भणी. गमती लागे अन्धारी
रात ॥ भ० ॥ ज्यूं भारी कर्मा जीव तेहने, जिन
आज्ञा बाहरलो धर्म सुहात ॥ भ० ॥ १३ ॥ श्री ॥
काग निमोली सें रति करै भराडसूरा ने भीष्टो भावे
दाय ॥ भ० ॥ ज्यूं काग भराडसूरा जेहवा मानवी,
रिझै आज्ञा बाहरली करणी मांय ॥ भ० ॥ १४ ॥ श्री ॥
चोर परदारा सेवण कुशीलिया, ते तो सेरो जोवे
दिन रात ॥ भ० ॥ ज्यूं आज्ञा बारे धर्म श्रद्धायवा,
उन्धी कर कर अज्ञानी वात ॥ भ० ॥ १५ ॥ श्री ॥
गुरुवादिक री आज्ञा मांगे नही, ते तो अपछन्दा अव-
नीत ॥ भ० ॥ ज्यूं कोई जिन आगन्यां विन करणी
करै, ते पिण करणी छै विपरीत ॥ भ० ॥ १६ ॥ श्री ॥
दुष्ट जीव मंजारी ने चितरा छल सूं करै पर जीवां
री घात ॥ भ० ॥ एहवा दुष्ट मिश्र श्रद्धा रा धणी, छल

ज्यूं चाले मिजाजां रै मिथ्यात ॥ भ० ॥ १७ ॥ श्री ॥ निगरागल कुवां न्यात बारे बारे, ते बिगरायल फिरै न्यात बाहर ॥ भ० ॥ तेहवो धर्म जिन आगन्यां बाहरलो, तिण में कहे मत जाणो भली बार ॥ भ० ॥ १८ ॥ श्री ॥ न्यारा बारे ते न्यात मांहि नहीं, तिण नें नहीं जमाणो पङ्क पांत ॥ भ० ॥ ज्यूं जिन आज्ञा बिना धर्म पाजीम नें, कीधां पूरीजे नहीं मन खांत ॥ भ० ॥ १९ ॥ श्री ॥ जो आज्ञा बिन करणी में धर्म छै, तो जिन आज्ञा रो काम न कांय ॥ भ० ॥ तो मन मानी करणी करणी तेहनें, मनमानी करणी किया धर्म होय ॥ भ० ॥२०॥ श्री ॥ जिण आज्ञा बाहरली करणी किया, पाप कर्म लागे नें धर्म थाय ॥ भ० ॥ तो किण करणी स पाप निपजै, तिण करणी रो तूं नाम बताय ॥ भ० ॥ २१ ॥ श्री ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र तप, ए च्यारूं श्री जिन आज्ञा मांय ॥ भ० ॥ यां च्यारां मांहि तो धर्म जिन [illegible] जिन [illegible] नांय बताय ॥ भ० ॥२२॥ श्री ॥ [illegible] न [illegible], मूढ़ बोले अणाय अणाय ॥ भ० ॥ [illegible] ने [illegible] पाविया, जिण आज्ञा [illegible] ॥ भ० ॥ २३ ॥ श्री ॥ आगन्यां बा[illegible] [illegible] आगन्यां बार ॥ भ० ॥ तुम मरणी [illegible] भाखी [illegible] ॥ भ० ॥२४

॥ श्री ॥ जिन आगन्यां बारै धर्म कहै, ते विगरायल जैन रा जाण ॥ भ० ॥ त्यांरी अभिन्तर फूटी छै मांहली, ते अन्धारे उगो कहै भाण ॥ भ० ॥ २५ ॥ श्री ॥ श्री जिन आगन्यां विन करणी करै, ते तो दुरगत रा आगीवाण ॥ भ० ॥ जिन आज्ञा सहित करणी करै, तिण स्यूं पामै पद निरवाण ॥ भ० ॥२६॥ श्री ॥ आज्ञा बारै धर्म कहै तेहनी, जोड़ कीधी छै खेरवा मझार ॥ भ० ॥ समत अठारै चालीसमें, आसोज विद पांचम थावर वार ॥ भ० ॥ २७॥ श्री जिन धर्म जिन आगन्यां तिहां ॥

॥ इति जिन आज्ञा को चौढालियो समाप्त ॥

अथ दश दान नी ढाल ।

॥ दोहा ॥

दश दान भगवन्त भाखिया, सूत्र ठाणांग मांय ।
[illegible] नाम छे तेहना, [illegible] ॥१॥
[illegible] दान [illegible] प्रसिद्ध लोक में एक ।
बाकी [illegible] अधर्म [illegible], मिश्र धर्म नहीं तेह ॥२॥
[illegible] धर्म [illegible], [illegible] ।
[illegible] अधर्म [illegible], [illegible] ॥३॥
[illegible], जूदा जूदा विस्तार ।
[illegible] नाम तणा परिवार ॥४॥
[illegible] दान नो, अधर्म तणा परिवार ।
[illegible] दान [illegible], [illegible] आज्ञा बार ॥५॥
[illegible], [illegible] भिन्न भिन्न भेद ।
[illegible] ॥६॥

॥ ढाल ॥

[illegible], [illegible]
[illegible], [illegible]

दान ए ॥ १ ॥ त्यांने देवै मूलादिक जमीकन्द ए, तिण मे अनन्त जीवां रा फन्द ए। तिण दियां केवै मिश्र धर्म ए, तिणरै उदै आया मोह कर्म ए ॥ २ ॥ लूणादिक पृथवी काय ए, आपि अग्नि ढोलै पाणी वाय ए। देवै शस्त्र विविध प्रकार ए, इण दान सूं रुलै संसार ए ॥३॥ बन्धीवांनादिक ने काज ए, त्यांने कष्ट पड्यां देवै साज ए। घोरी बावरी भील कसाई ने ए, सचित्तादिक द्रव्य खवाई ने ए ॥ ४ ॥ छोड़वा देवै अथ ताम ए, संग्रह दान छै तिण रो नाम ए। ए तो संसार रो उपगार ए, अरिहन्त नी आज्ञा बार ए ॥५॥ ग्रह कारड़ा लागा जाण ए, सुणी लागो मनोती आण ए। फिकर घणी मरवा तणी ए, बले कुटुम्ब तणी जतना भणी ए ॥ ६ ॥ भयरो घाल्यो देवै आम ए, भय दान छै तिण रो नाम ए। ते लेवै छै कुपात्र आय ए. तिण मे मिश्र किहां थी थाय ए ॥७॥ खर्च करै मुवां रै कोड़ ए, जिमावै न्यात ने तेड़ ए। तीन बारा दिन अनुमान ए, चौथो कालुणी दान ए ॥ ८ ॥ बले बरस छमासी श्राद्ध ए, जिम तिम करै कुल मरयाद ए। मुवां पहिलो खर्च करै कोय ए, घणा ने टप्त करै सोय ए ॥ ९ ॥ आरम्भ कियां नहीं धर्म ए, जिमायां पिण बन्धसी कर्म ए। बुद्धिवन्तां करजो विचार ए, या मे संवर निर्जरा नहीं लिगार ए ॥१०॥

घणा री लज्जावश थाय ए, सांकड़े पड्यां देवे ताय ए। [illegible] सचित्तादिक धन धान्य ए, ए तो पांचमों लज्जा दान ए ॥ ११ ॥ ए तो सावद्य दान साक्षात ए, ते [illegible] कुपात्र थाय ए। तिण में कहै मिश्र धर्म ए, तिण री निश्चय समसी कर्म ए ॥ १२ ॥ मुकलावो पहरावणी मुसाल ए, सगां ने जुदा जुदा संभाल ए। त्यांने द्रव्य दे [illegible] सगा में काम ए, गर्वदान छै तिण रो नाम ए ॥१३॥ [illegible] मल ए, रावलियां रामत चाल ए। नट [illegible] भाट [illegible] ए, दान देवे त्यांने द्रव्य अनेक ए ॥ १४ ॥ इण दान थी [illegible] कर्म ए, [illegible] कहै मिश्र धर्म ए। जिण में प्रत्यक्ष खोटो थाय ए, खोटा श्रद्धा में [illegible] मिथ्यात ए ॥ १५ ॥ गणिकादिक [illegible] कुशील ए, दान दे त्यांने [illegible] ए। ए तो प्रत्यक्ष खोटा काम ए, अधर्म दान छै तिण रो नाम ए ॥ १६ ॥ मूल अर्थ [illegible] ए गुरु साधु आणी ठाय ए। आप समकित [illegible] ए, धर्म दान छै आठमों नेक ए ॥ १७ ॥ [illegible] आगम ए, [illegible] निर्दोषण द्रव्य जाम ए, [illegible] सूझतो आण ए, तिण दियां दारिद्र [illegible] जाय [illegible] ए, कोई [illegible] ए। अभयदान कह्या जिनराय ए, [illegible] ए ॥ १८ ॥ दर्शनादिक

द्रव्य अनेक ए, उधारा जेम देवै विशेष ए। पाछो लेवा रो मन में ध्यान ए, नवमों काअन्तो दान ए ॥ २० ॥ लेणायत ने देवै जेह ए, हांती नेतादिक तेह ए। पाछो लेवण रो एकान्त काम ए, कन्तिति दान छै तिण रो नाम ए ॥ २१ ॥ नवमें दशमें दान नी चाल ए, धुर बोरै वालो ख्याल ए। ज्ञानी मानै सावद्य मांय ए, तिणमें मिश्र किहां थी थाय ए ॥२२॥ दश दान रो एह विचार ए, सक्षेप कह्यो विस्तार ए। वीर नी आज्ञा मे दान एक ए. आज्ञा बारै दान अनेक ए ॥ २३ ॥ असं-यती घरे आवियो ए, निर्दोषण आहार बहिरावियो ए। तिण ने दियां एकान्त पाप ए, भगवती मे कह्यो जिन आप ए ॥ २४ ॥ एम जाणी ने करो विचार ए. आठ अधर्म तणो परिवार ए। घणा सूत्रां नी साख ए, श्रीवीर गया छै भाष ए ॥ २५ ॥ धर्म अधर्म दान दोय ए. मिश्र म जाणो कोई ए। केम जाणै मिथ्यात्वी जीव ए, मूल में नहो सम्यक्त नींव ए ॥ २६ ॥

॥ इति ॥

अठारह पाप की ढाल ।

॥ दोहा ॥

[illegible] [illegible] अभिक्तानो, निरवद्य दान में जाण ।
[illegible] दान में थापने, द्रव्यें मांडी ताण ॥ १ ॥
जिण धर्म प्ररूपने, नहीं [illegible] न्याय ।
[illegible] [illegible] फन्द में, झाड़ा चोंच लगाय ॥ २ ॥
[illegible] आगार में कह्यो, श्री जिन मुख से आप ॥
[illegible] आगार, तीनूं योगां पाप ॥ ३ ॥
[illegible] धर्म श्री जिन कह्यो, [illegible] पाधरो जाण ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] चढ़ाणो ताण ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥

[illegible] पाप अठारह, [illegible] धर्म [illegible] ।
[illegible] [illegible] आगार (?) [illegible] ॥ १ ॥
[illegible] पाप [illegible] । जिण
[illegible] ॥ २ ॥ [illegible]
[illegible] । [illegible]
[illegible] ॥ ३ ॥ जिण [illegible]
[illegible] । [illegible]

ए, झगड़ो झालियो ए ॥ ४ ॥ हिवे सुणज्यो चतुर सुजान, श्रावक रत्नांरी खान। व्रतां करि जाणज्यो ए, उलटो मत ताणज्यो ए ॥ ५ ॥ कोई रूख बाग में होय, आम धतूरो दोय। फल नहीं सारखा ए, कीजो पारखा ए ॥ ६ ॥ आमांसूं लव लाये, सोचे धतूरो थाय। आशा मन अति घणी ए, आम लेवण तणी ए ॥७॥ आम गयो कुम्हलाय, धतूरो रह्यो हटाय। आवी ने जोवै जरै ए, नयनां नीर झरै ए ॥ ८ ॥ इण दृष्टान्ते जाण श्रावक व्रत अम्ब समान। अव्रत चलणो रह्यो ए, धतूरा सम कह्यो ए ॥ ९ ॥ सेवावे अव्रत काम, व्रतां सामो जोय। ते भूला भ्रम में ए, हिन्सा धर्म में ए ॥ १० ॥ अव्रतसे बन्धै कर्म, तिण में नहीं निश्चय धर्म। तीनूं करण सारखा ए, विरला पारखा ए ॥ ११ ॥ खाधां बन्धै कर्म, खुवायां मिश्र धर्म। ए झूठ चलावियो ए, मूर्ख मन भावियो ए ॥ १२ ॥ मिश्र नहीं साक्षात, ते मिश्र प्रक्षेप बात। अक्ल नहीं मूढ में ए, पड़िया रूढ में ए ॥१३॥ पोते नहीं बुद्धि प्रकाश, वली लाग्यो कुगुरांरी पाश। निर्णय नहीं करै ए, ते भव-सागर पड़ै ए॥१४॥ साधु संगति पाय, सुणो एक चित्त लगाय। पक्षपात परिहरै ए, ज्यों ख्वर वेगी परै ए ॥ १५ ॥ आनन्द आदि दे जाण, श्रावक दश् बखाण। ते पड़िमा आदरी

ए. मार्ग पाधरो ए ॥१६॥ जे जो किया छे त्याग, भाखो मन वैराग। ते करणी निर्मली ए, करीने पुरे रली ए ॥ १७ ॥ बाकी रह्यो आगार, अव्रत में आण्यो आहार। [illegible] में ए, समझो कुण बात में ए, ॥ १८ ॥ अव्रत में दे दातार, ते किम उतरे पार। मार्ग नहीं मोक्ष रो ए, छान्दो कुण लोक रो ए ॥ १९ ॥ दाता अन्न [illegible] पात्र अव्रत में न्याय। ते किम तारसो ए, किम पार उतारसो ए ॥ २० ॥ उपासक उववाई अंग, [illegible] । सूतरो [illegible] ए, अव्रत [illegible] ए ॥ २१ ॥ [illegible] गूढ मिथ्यात, त्यांरे किम बेसे ए [illegible] । [illegible] मांहो ए, समझ पड़े नहीं ए ॥ २२ ॥ [illegible] भाव। [illegible] ए, [illegible] ए ॥ २३ ॥ [illegible] सुपात्र दान [illegible] मन अभिमान। ते संसार [illegible] ए, [illegible] ए ॥ २४ ॥ दान [illegible] अनन्त, [illegible] । ते दान न [illegible] ए, न्याय न [illegible] ए ॥ २५ ॥ [illegible] सुपात्र माय, दाता [illegible] । [illegible] ए, ते लाभ [illegible] ए ॥ २६ ॥ [illegible] सुपात्र [illegible], दाता [illegible] । [illegible] ए ॥ २७ ॥ [illegible] अपात्र [illegible] । [illegible]-

मादिक शुद्ध सही ए, बैरायां नफो नहीं ए, ॥ २८ ॥ मिलै कुपात्र कोय, दाता अन्न शुद्ध होय। पड़िलाभ्यां तिरै नहीं ए, सूत्र मे इम कही ए ॥ २९ ॥ आणू मन विवेक, तीनां में शुद्ध नहीं एक। प्रतिलाभ्यां में धर्म नहीं ए, श्रीजिन मुख से कही ए ॥ ३० ॥ दाता अन्न पात्र विचार, तीनूं अशुद्ध निहार। तो धर्म न भाषै जती ए, झूठ जाणो मती ए ॥ ३१ ॥

तीन बोलां करि जीव अल्प आउखो बांधे ते ऊपर ढाल।

॥ दोहा ॥

[illegible] साधां ने [illegible] दान दे, जाणी ने असूझ ले साध।
[illegible] [illegible] [illegible] बापड़ा, जिनराज वचन विराध ॥१॥

॥ ढाल ॥

तीन बोलां करी [illegible] जी, अल्प आउखो बंधाय।
[illegible] प्राणी [illegible] ... [illegible] बापजी ॥
[illegible] जिनराय जी, [illegible]
[illegible] तिण [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] जिनराय जी,
[illegible] । [illegible]
[illegible] ॥

[illegible] जी, [illegible]
[illegible] जी।
[illegible] तिण [illegible]
[illegible] जी, तिण [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible]

नीव दिरावै ठेटसूं जी, टांको वजावै ताय। भेला करि भाठा चूणै, तिण बहुत हणी छः कायजी। अनन्ता जीव हणियां जायजी, ते पूरा केम कहिवाय जी। साधां ने उतारण री मन ल्यायजी, तिण मोटो कियो अन्यायजो। तिण रै अल्प आयु वंधायजी॥ श्री वीर०॥ ३॥

जिण गरथ दियो थानक कारणैजी, ते पिण मराई छ:काय। किण मोल भाड़े लै भोगलावै, किण थाप राखो छै तायजी। इत्यादिक दोषीला कहिवायजी, खोणै खोदै समों करै जायजी। विधि २ सूं मारी छः कायजी, वलि मन मांहि हरषित थायजी। तिण रै अल्प आयुष्य वंधायजी॥ श्री वीर०॥॥ ४॥

आहार सिझ्या वस्त्र पातराजी, इत्यादिक द्रव्य अनेक। अशुद्ध वहिरावै साधू ने ते डूवा विना विवेक जी। त्यां झाली कुगुरां री टेकजी, त्यांरै कर्म आडी काली रेखजी। त्यांने सीख न लागै एकजी; गुरु ने पिण भ्रष्ट किया विशेषजी। संशय हुवै तो सूत ल्यो देखजी॥ श्री वीर०॥ ५॥

पाप उदै हुवै एहने, तो पड़ै निगोद में जाय। अनन्त उत्कृष्टा भव करै, त्यां मार अनन्ती खायजी। रहै घणी संकड़ाई मांयजी, जक नहीं निगोद में

तायजी। वलि मर्ण बेगो बेगो थायजी, उपजै ने विलै जायजी। तिण रो लेखो सुणो चित्त ल्यायजी॥ श्री वीर०॥ ६॥

सतरह भव जाझेरा करे, एक श्वासोश्वास मझार। एक मुहूर्त्त में भव करे, साडा पेंट हजारजी। वलि [illegible] अधिक विचारजी, एहवो जनम मरण रो भारजी। मरण पामें अनन्तो वारजी, अनन्त कालचक्र [illegible]जी। त्यांरो छेहो न आवे पारजी॥ श्री वीर० ॥ ७॥

[illegible] पहले बंध नरक नो रो, पड़े नरक में जाय। [illegible] है अति घणो, परमाधामी मांहे [illegible]जी। [illegible] मार अनन्तो खायजी, उठे कौन [illegible] आयजी। भूख तृषा अनन्ती थायजी, दुःख में [illegible] थायजी। अपात्र दान दियां ए फल थायजी॥ श्री वीर०॥ ८॥

[illegible] भोगविया नरक में जी, शेष बाकी [illegible] [illegible], तिण थी जीव उपज्या जाय तिर्यंच में। [illegible] [illegible]जी, [illegible] छूटे [illegible] [illegible]जी। [illegible] [illegible] [illegible]जी, [illegible] भोगवे [illegible]। [illegible] दान दियां [illegible]जी, ए [illegible] [illegible] [illegible]॥ श्री वीर०॥ ९॥

अशुद्ध जाणी ने भोगवै, त्यां भागी जिनवर पाल।
अनन्त उत्कृष्टा भव करै, नर्क में जासे टांको झालजी।
उठै मार देसे नर्क ना पालजी, कीधा कर्म लेवै सभा-
लजी। रोसी कर्तव्य सांमो निहालजी, भगवती पहिलो
शतक संभालजी। वलि नवमो उद्देशो सभालजी॥ श्री
वीर०॥ १०॥

आधा करमो जाणी भोगवै, तो बधे चिकणा कर्म।
वलि भ्रष्ट थया आचारथी, त्यां छोड़ दियो जिन धर्मजी।
निकल गयो त्यांरो मर्मजी, छोड़ दीधी लज्जा ने शर्म
जी। बिगोय दियो जिन धर्मजी, दुःख पाम्यो उत्कृष्टो
पर्मजी॥ श्री वीर०॥ ११॥

साधू काजे हणे छःकाय ने, ते बार अनन्ती हणाय।
साधू जाणी ने भोगवै ते, पण अनन्ता जनम मर्ण करै
तायजी। ए दोनूं दुःखिया थायजी, भव २ मे मास्या
जायजी। ए कर्तव्य सूं मारी छः कायजी, ते दुःख
भोगव लेवै तायजी। त्यांरो पार वेगो नहीं आयजी॥
श्री वीर०॥ १२॥

छः काय रै अशुभ उदय हुआ, ते पामें एकरसूं
घात। जे साधू पड़िया नर्क निगोद मे, सेवकां ने ले
जावै साथजी। त्यां मानी कुगुरां री वातजी, कीनी
त्रस स्थावर नी घातजी। अनन्ता काल दुःख मे जात